दो शब्द

मैं हिन्दी संसार के सामने उर्दू साहित्य का एक लाजवाब कविता का संग्रह फिर लेकर आया हूँ। यह मेरे गुरुवर ना .ख़ुदाए .सख़ुन हज़रत 'नूह' नारवी जानशीने 'दाग़' के पहले दीवान सफ़ीनए 'नूह' की कविता हिन्दी के रूप में है। भाषा उर्दू है मगर कैसी टकसाली और सरल ज़बान है, इस को परखने वाले परख सकते हैं। मैं तो माली हूँ अच्छे फूलों को चुनकर और उसे गुलदस्ता बना कर और सजा कर रख देता हूँ। कुछ हिन्दी वालों का यह कहना है कि मैं उर्दू साहित्य का हिन्दी में प्रचार करता हूँ। यह दृष्टिकोण मुझे खटकता हुआ नज़र आया। बंगला, गुजराती, मरहठी, अंग्रेजी या और भाषाओं का उलथा हिन्दी संसार में भरा पड़ा है। मैं उनसे पूछता हूँ यह क्या है? किसी भाषा से यह द्वेष रखना मैं अच्छा नहीं समझता। मेरे पास तंग नज़री का जवाब नहीं है। आशा है कविता-प्रेमी इस संग्रह को भी अपनाएँगे। मेरा दावा है कि जो दिल और दिमाग़ रखते हैं इस कविता के संग्रह को अवश्य पसंद करेंगे।

मैं तो अपने गुरु का कट्टर भक्त हूँ और इस पर नाज़ किया करता हूँ। पाठक नीचे के पद्यों से समझ लें।

इज़्ज़त से न मतलब है न शौकत से ग़रज़,
क्यों रक्खे वह शुहरा से वह शुहरत से ग़रज़।
देखे इसे, परखे इसे जाँचे कोई,
'बिस्मिल' को है बस 'नूह' की ख़िदमत से ग़रज़।

कविता प्रेमियों का सेवक
'बिस्मिल' इलाहाबादी

नोट—इस संग्रह में बिस्मिल जी ने सफीनए "नूह" का ही संग्रह किया था किन्तु इस एडीशन में एजाजे "नूह" और तूफ़ाने "नूह" का भी संग्रह किया गया है।

गुरुवर नाखुदाए सखुन हज़रत 'नूह' नारवी का संक्षिप्त परिचय

हज़रत 'नूह' नारवी का पूरा नाम शेख मुहम्मद नूह है। 'नूह' आप का उपनाम है। आपके पूज्य पिता का नाम मौलवी अब्दुल मजीद साहब था, १८५७ के ग़दर में सरकार ने खैरख्वाही के उपलक्ष में आपको एक इलाक़ा दिया जिसकी सालाना आमदनी दस हजार रुपये से अधिक है हज़रत 'नूह' सन् १८७९ में अपने ननिहाल भवानीपुर जिला रायबरेली में पैदा हुए, अभी आपका बचपन ही था कि आपके पूज्य पिता सब-जजी के ओहदे तक पहुँच कर २६ जून सन् १८८३ को स्वर्गवासी हो गए। तमाम रियासत का इन्तज़ाम रिश्तेदारों के हाथ में पड़ा और ख़ान्दान के पारस्परिक झगड़े में बड़ी आर्थिक क्षति हुई। चौदह साल की उम्र में आपने अपनी जायदाद का इन्तजाम अपने हाथ में लिया और बड़ी ख़ूबी से उसकी देख-भाल आज तक करते चले आ रहे हैं, कविता का शौक़ आपको मीर नजफ़ अली साहब के सत्सङ्ग से हुआ। पहले आप इन्हीं से अपनी कविता का सशोधन भी कराते थे परन्तु आप इतने तेज़ और उच्च विचार के थे, कि उस्ताद ने दूसरे उस्ताद से कविता संशोधन के लिए आपको सलाह दी। इसलिये बहुत सोच विचार के बाद आप महाकवि 'दाग़' देहलवी के शिष्य हुए। कविता संशोधन कराते हुये दो साल भी न बीते थे कि उस्ताद 'दाग़' के चरणों में उपस्थित होने की अभिलाषा पैदा हुई, और आप हैदराबाद पहुँचे।

आपको देख कर महाकवि 'दाग़' ने कहा मुझे आपके 'नूह' होने में शक है, क्योंकि आपकी कविता से मुझे मालूम होता था कि 'नूह' कोई वृद्ध पुरुष होंगे, मगर जब आपने विश्वास दिलाया तो हज़रत 'दाग़' बड़ी ख़ातिर से पेश आए और व्यंग के तौर पर कहा कि हम जानते थे कि 'नूह' हज़रत 'नूह' की अवस्था के होंगे, परन्तु आपकी अवस्था तो बहुत कम है, आपको उस्ताद का कलाम बहुत याद था, इसलिये आपके सम्बन्ध में हज़रत 'दाग़' का क़िस्सा भी याद रखने के काबिल है कि "दीवाने-हाफिज" (हाफिज कवि की कविताओं का संग्रह) पहिले देखा था, परन्तु 'हाफिजजे-दीवान' (संग्रह कठस्थ करने वाला) आज देखा। अस्तु कुछ दिनों के बाद आप अपने वतन नारा[1] वापस आए और पत्र द्वारा कविताओं का संशोधन कराते रहे। जब तक हज़रत 'दाग़' ज़िन्दा रहे, यही सिल-सिला बराबर जारी रहा। आपकी कविता से ख़ुश हो कर महाकवि 'दाग़' ने आपको एक सनद दी थी, जिसमें एक शैर उल्लेखनीय है।

एक से होता है हासिल एक को फैज़े सख़ुन।
मैंने सीखा "ज़ौक[2]" से और मुझसे सीखा "नूह" ने ॥

हजरत 'नूह' हिन्दोस्तान के बड़े बड़े मुशायरों में शरीक हो कर अपनी तूफानी कविता की धाक जमा चुके हैं आपके दो दीवान (कविताओं का संग्रह) उर्दू में छप कर जनता में ख़ूब नाम पैदा कर रहे हैं। आपका तीसरा दीवान बहुत जल्द जनता के सामने आने वाला है। आपके शिष्यों की तादाद

१—क़सबा नारा ज़िला इलाहाबाद में सिराथू स्टेशन से नौ मील दक्खिन है। २—नवाब मिर्ज़ा 'दाग़' देहलवी ख़ाकानिये हिन्द जनाबे 'ज़ौक' देहलवी के शागिर्द थे।

तीन-चार सौ के लगभग है। इनमें बीस पच्चीस तो अच्छे शायरों में गिने जाते हैं।

हज़रत 'नूह' की कविता उर्दू और हिन्दी के पत्रों (अख़बारों में प्रायः छपती ही रहती है। हिन्दुस्तान भर में आपकी कविताओं की प्रशंसा होती है. प्रसाद-गुण आपकी कविता की विशेषता है। आपकी कविता समझने में दिल और दिमाग को अधिक ज़ोर देने की जरूरत नहीं पड़ती, भाषा में सादगी इतनी है कि एक दरिया अपनी मौज (लहर) में दिखाई देता है, भाव इतना साफ़ और सुलझा हुआ होता है कि शेर पढ़ा और दिल में उतरा, बन्दिशें इतनी ठोस कि कोई शब्द अपनी जगह से हिलाया नहीं जा सकता, भरती का कहीं नाम भी नहीं। जिस कविता को देखिये अपने रंग में सराबोर है। प्रत्येक शब्द से उस्तादी टपकती है। हज़रत 'नूह' ने महाकवि "दाग' के पथ पर चल कर भाषा को बिलकुल परिमार्जित कर दिया है। आपकी कविता दिल्ली की टकसाली ज़बान का नमूना है, जिस मुहावरे को कविता में बाँधते हैं वह मानों साँचे की तरह ढल जाता है। मिसरे पर मिसरा इस ख़ूबी से लगाते हैं कि जिसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती, आपकी कविता में काव्य सम्बन्धी सभी गुण मौजूद हैं। जिस रंग में क़लम उठाते हैं उसमें तूफ़ान उठा देते हैं। आपका कलाम पढ़ते या सुनते समय यह मालूम होता है कि इस तरह जो चाहे लिख सकता है, मगर जो उस रङ्ग के कहने वाले हैं वही जान सकते हैं कि हज़रत 'नूह' के रंग में कहना कितना कठिन है।

भाषा इतनी मँजी हुई होती है कि गद्य और पद्य में कुछ अन्तर ही नहीं मालूम होता सीधी सादी भाषा में—रोज़ की बोल चाल में—अनूठे भावों को कूट कूट कर भर देना आपके

लिये खेल है। शब्दों के उलट फेर में कमाल कर देते हैं। इसका सेहरा इन्हीं के सर है। हजरत 'नूह' अपने दिल से निकली हुई बातें कहते हैं और यही वजह है जो उनके शैर लोगों की जबान पर आ जाते हैं, इस समय हिन्दुस्तान में आपकी गणना उच्च कोटि के कवियों में की जाती है ज़ुबान के आप बादशाह समझे जाते हैं, और महाकवि 'दाग़' के जानशीन हैं। स्वर्गीय महाकवि 'अकबर' इलाहाबादी इनकी बड़ी क़द्र करते थे। 'नूह' साहब जब इलाहाबाद आते थे तो महाकवि 'अकबर' के ही महमान होते थे। महाकवि 'अकबर' ने हज़रत 'नूह' की प्रशंसा इस तरह की है जो 'नूह' साहब के दूसरे दीवान 'तूफ़ाने-नूह' दर्ज है। पाठक महाकवि 'अकबर' के इस लिखने से समझ सकेंगे कि हज़रत 'नूह' क्या हैं और किस कोटि के शायर हैं, 'अकबर' साहब फ़रमाते हैं—"हज़रत 'नूह' को मैं बहुत दिनों से जानने की तरह जानता हूँ ये इलाहाबाद जब आते हैं मेरी कोठी ही पर ठहरते हैं और जितने दिनों रहते हैं यहीं रहते हैं। मनुष्य के गुण-दोष जाँचने के लिये बशरते कि जाँचने वाला भी कुछ क़ाबिलियत रखता हो बहुत कम समय की ज़रूरत है मैंने इनको इस मुद्दत में हर तरह देखा भाला-जाँचा परखा है और दृढ़ता के साथ कहने के लिये तैय्यार हूँ कि वंश परम्परागत विशेषताओं और सम्मान के अतिरिक्त यह एक प्रशंसनीय और उच्चकोटि के कवि हैं। परमात्मा ने इस काम के लिये इनको विशेष योग्यता प्रदान की है। इनकी ख्याति और इनकी कविता अब किसी परिचय की अपेक्षित नहीं है। इनकी कविता के बारे में ख़ुद उनके उस्ताद नवाब मिर्ज़ा 'दाग़' देहलवी की तहरीर जो इनके पास मौजूद है और जो मैंने देखा है उससे पता लगता है कि यह क्या चीज़ हैं। ख़ुदा इनको चिरायु रक्खे, क्योंकि इन पर सारी दुनिया की हाज़ारों आशाएँ निर्भर हैं।"

हजरत 'नूह' का बहुत सादा मिज़ाज है और सादगी को पसंद करते हैं। आप बड़े ज़िन्दा दिल और हँसमुख हैं। जो एक बार आपसे मिल चुका है वह उम्र भर नहीं भूल सकता। आपको ईश्वर ने लक्ष्मी और सरस्वती दोनों दी हैं। मगर दो नौजवान बेटों के स्वर्गवासी हो जाने से शोक के दरिया में डूबे रहते हैं आपके और कोई पुत्र नहीं है, केवल एक पुत्री है। पुत्री दामाद और नवासों के नाम जायदाद का वसीयतनामा कर दिया है। आपने एक बड़ा आलीशान मकान प्रयाग में बनवाया है, आप तअास्सुब से कोसों दूर हैं। आपके हिन्दू और मुसलमान दोनों काफ़ी तादाद में शिष्य हैं, सब पर एक तरह की नज़र रहती है। यह गुण आपका प्रशंसनीय है। मैं उनका एक मामूली दास हूँ, मगर मुझ पर उनकी खास नज़र रहती है। यह उन्हीं की सेवा का फल है जो मैं थोड़ी तुकबन्दी कर लेता हूँ। हज़रत 'नूह' में कविता संशोधन करने में खास कमाल है। बात की बात में कविता का संशोधन करते हैं। आपका सवेरे का समय अपने शागिर्दों की कविता को देख भाल में जाता है। आपकी अवस्था इस समय ६० के ऊपर है। आप जब मशायरे में बैठते हैं तो हर एक शायर को दाद देते हैं। प्रशंसा करने में सबसे आगे रहते हैं। यह बात भी इस ज़माने के लिये बड़ी शिक्षाप्रद है। क्योंकि मशायरों में कविगण एक दूसरे की प्रशंसा बहुत कम करते हैं। इस गए गुजरे ज़माने में उर्दू संसार में आपका दम ग़नीमत है।

'बिस्मिल' इलाहाबादी

———

'नूह' की शायरी

—:o:—

खुदाया[1] है जमीं तेरी इलाही आस्मां तेरा,
इधर तेरा उधर तेरा यहाँ तेरा वहाँ तेरा।
कहीं सूरत नज़र आई कही जलवा नजर आया,
अयां[2] तेरी निहां[3] तेरी निहां तेरा अयां तेरा।

इधर तू है उधर तू है यहां तू है वहां तू है,
मगर इस पर भी पा सकता नहीं कोई निशां तेरा।
वो ऐसी कौन सी शै[4] है नहीं जिस शै मे तू यारब,
मुझे अक्सर हुवा करता है अपने पर गुमां तेरा।

जो तेरे देखने वाले हैं तुझको देख लेते है,
कही जलवा भी रह सकता है पर्दे मे निहां तेरा।
सुनाओ 'हम्द[5] लिक्खे 'नूह' हरगिज़ लिख नही सकता,
कहाँ तौहीद[6] तेरी और यह बन्दा कहाँ तेरा।

---

(१) जगदीश, (२) प्रगट, (३) छुपा हुआ, (४) वस्तु, (५) प्रशंसा,
(६) एकाकी।

काबा हो दैर[१] हो दोनों में है जल्वा उसका,
गौर से देखे अगर देखने वाला उसका।
हर किसी को नजर आएगा न जलवा उसका,
जिसने देखा वही देखेगा तमाशा उसका।
वरहमन उसके है शेख उसके है राहिब[२] उसके,
दैर उसका हरम[३] उसका है कलीसा[४] उसका है।
मुझको आराम दिया ऐश दिया रिज्क[५] दिया,
नूह नाचीज पै एहसान है क्या क्या उसका।

× × ×

ये भी दुश्मन हो गया अब ये भी कातिल हो गया,
आपसे मिल कर मेरा दिल आपका दिल हो गया।
शेख को पीरे मुगां से फैज हासिल हो गया,
सोहवते कामिल में जो वैठा वो कामिल हो गया।
लाख चाहा ये निकल जाए मगर निकला नहीं,
नावके दिल दोज गोया दूसरा दिल हो गया।
जाहिदों से भी है रस्मो-राह मयखवारों से भी,
उनसे जब बिगड़ी कभी मैं उनमें शामिल हो गया।
मुझसे वरहम वो भी है नाखुश हैं अहले बज्म भी,
पहले क्या था और अब क्या रंग महफिल हो गया।
दाद ख्वाहाने[७] सितम की भीड़ कुछ ऐसी हुई,
मुझको उसका ढूंढ़ना महशर में मुश्किल हो गया।
हम न कहते थे न जाओ 'नूह' बज्मे नाज़ से,
उनकी सूरत पर फिदा सौ जान से दिल हो गया।

---

(१) मन्दिर, (२) पादरी, (३) काबा, (४) गिरजा, (५) रोजी (६) शराबखाने का मालिक, (७) इन्साफ चाहने वाला।

ए तीरे-नजर मुझपे ये एहसान किए जा,
जाता है मेरे दिल से तो दिल को भी लिए जा।
मुझको नहीं देता जो जवाँ कुछ तो किए जा,
तू अपनी जवाँ से मुझे दुश्नाम दिए जा।

आराम के बदले मुझे आजार दिए जा,
वो काम जो करता नहीं ये काम किए जा।
वो कत्ल भी करते हैं मुझे तेगे अदा से,
फिर उस पे ये ताकीद भी होती है जिए जा।

बाकी है अभी चार पहर रात का झगड़ा,
ए शमआ शबे हिज्र मेरा साथ दिए जा।
कब तक दिले नाशाद वो तेरी न सुनेंगे,
तू रोज यों ही नालओ फरियाद किए जा।

इनकार न कर बात मेरी मान ले जाहिद,
मयखाने में आया है तो दो घूँट पिए जा।
बेताब है पहलू में दिलेजार हमारा,
ए नामावरा[1] इसको भी तू साथ लिए जा।

वो काम हमारा था कि दिल हम तुझे दे दें,
अब ये तेरी मर्जी है लिए जा कि दिए जा।
मैं अब नहीं कुछ और तेरे देने के काबिल,
दुश्नाम मुझे देके दुआ मुझसे लिए जा।

क्या इससे मुझे बहस वफा हो कि जफा हो,
जो कुछ मेरे हक में तुझे करना है किए जा।
दिल देके जो अपना उन्हें आगे को चला मैं;
बोले वो बिगड़ कर इसे ले इसको लिए जा।

---

(१) डाकिया।

ऐ 'नूह' न तूफ़ान कभी तूने उठाया,
ये नाम जो रक्खा है तो ये काम किए जा।

× × ×

शर्म का शोखी का चितवन का अदा का नाज का,
वाह क्या अन्दाज है उसके हरएक अन्दाज़ का।
दिल निशाना बन गया उसकी निगाहे नाज का,
वाह क्या कहना है ऐसे तीर बे आवाज का।
इस कदर फड़की क़फ़स[1] से क़ैद होकर अन्दलीब[2],
हौसला उसको न बाकी रह गया परवाज[3] का।
जब मजा है दोस्ती का मुत्तहिद[4] हों हुस्नो इश्क,
है मेरी आवाज पर धोखा तेरी आवाज़ का।
खुश गुलू[5] को क्या है सामाने तकल्लुफ़[6] से ग़रज़,
नग़मए[7] बुलबुल नहीं मोहताज़ होता साज़ का।
फिर भी कोई साथ देता है तो देता है यही,
दम गनीमत है बहुत मेरे दिले दमसाज़ का।
क्या खबर थी दिल हमारा होगा हम से बर खिलाफ़,
काम ये दमसाज भी करने लगा दमबाज का।
'नूह' से ये बद-गुमानी उनकी बेजा भी नहीं,
क्या भरोसा क्या ठिकाना ऐसे शाहिदबाज़[8] का।

× × ×

मुहब्बत में सितम सहना न कुछ कहना न कुछ सुनना,
मुझे लाज़िम है मर रहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
खामोशी इश्क में बेहतर है फिर भी यावागोई[9] से,
जो पेश आए उसे सहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।

---

(१) पिंजड़ा, (२) बुलबुल (३) उड़ान, (४) एक होना, (५) सुरीला, (६) बनावट, (७) राग, (८) आशिक मिजाज (९) बेहूदा बकना।

तुम्हे भी याद है मुझको बुला कर अपनी महफिल मे,
वो हट जाना वो चुप रहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
ये मेरा काम है यारब कि मै नाकामे उल्फत हूँ.
ये है सुनना ये है कहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
वो मेरे अर्जे मतलब पर बिगड़ कर मुझसे कहते है,
बस अब खामोश ही रहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
मरीजे[1] दर्दे फुरकत की ये दौलत है ये सूरत है,
हमेशा उसको ग़म सहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
वो मेरा हाल मेरे खत से कासिद जान जाएँगे,
जो पूछे भी तो चुप रहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
हमारा इश्क मे ये रात दिन का मशग़ला ठहरा,
न कुछ सुनना न कुछ कहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
वो समझाना मेरा यारों को आग़ाजे मोहब्बत मे,
वो हरदम अश्क[2] का बहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।
जनाबे 'नूह' अपने दोस्तों से तुम हँसो बोलो,
ये क्या हर वक्त चुप रहना न कुछ कहना न कुछ सुनना।

× × ×

इश्क मे मर के नाम करना था,
दिले नाकाम काम करना था।
छोड़ दी चर्ख[3] ने सितमगारी[4],
तुमको कायम मुकाम करना था।
तीसरे, चौथे, आठवें, दसवें,
हमको भी शाद काम करना था।
वो यहाँ गर न आए थे तो हमे,
दूसरा इन्तज़ाम करना था।

---

(१) शुरू मे, (२) आंसू, (३ आकाश, (४) ज़ुल्म करना।

क्या कहें कुए यार में हमको,
हर क़दम पर मुकाम करना था।
और तो हमने सारे काम किए,
न किया वो जो काम करना था।
क्यों उठाया सितम से तुमने हाथ,
जो किया था मुदाम[1] करना था।
'नूह' साहब तुम्हे मुहब्बत को,
दूर ही से सलाम करना था।

× × ×

वो नज़ाकत से जब आकर सरे महफ़िल ठहरा,
मेरे पहलू में न अरमान भरा दिल ठहरा।
उनको ये नाज़ कि हम ज़ब्ह करेंगे तुमको,
मुझको ये फ़ख़्र कि मैं क़त्ल के काबिल ठहरा।
वसअते[2] बहरे मुहब्बत का ठिकाना क्या है,
मैं जहाँ डूब गया बस वही साहिल[3] ठहरा।
वो भी आए अगर ऐ 'नूह' तो क्या होता है,
न कभी ठहरेगा अब तक न मेरा दिल ठहरा।

× × ×

गम हो कि लुत्फ़ तुमने मुझे शाद तो किया,
गो भूल कर ही याद किया याद तो किया।
अब और क्या करेगा सितम मेरी जान पर,
ऐ इश्क़ हर तरह मुझे बरबाद तो किया।
तासीर हो बुरी कि भली इसका गम नहीं,
अब हमने क़स्दे नालओ फ़रियाद तो किया।

(१) हमेशा, (२) फैलाव, (३) किनारा।

ऐ 'नूह' कुछ मिला भी नतीजा बुरा भला,
अपने को तुमने इश्क मे बरबाद तो किया।

× × ×

मिलने का मज़ा मुझको मुकरर[2] नहीं मिलता,
जाकर नहीं आती वो बिछुड़कर नहीं मिलता।
साकी कभी देता है तो अग़यार[3] की जूठी,
अब हमको अछूता कोई सागर नहीं मिलता।
ऐसा जो तल्लौवन हो तो क्योंकर हो भरोसा,
अक्सर वो मिला करता है अक्सर नही मिलता।
बरबाद करो तुम मुझे ये सोच समझकर,
फिर कोई बशर[4] खाक मे मिलकर नहीं मिलता।

सर फोड़ के मरने का जो करता हूं इरादा,
मुझको तेरी दहलीज़ का पत्थर नहीं मिलता।
बेकार है अपनी ये न मिलने की शिकायत,
हम भी तो मिले उससे वो क्योंकर नहीं मिलता।
शीशे मे हमारे उतर आये वह परी-रू,
ऐसा कोई मंतर कोई अन्छर नही मिलता।
गौहर[5] की तरह अपनी भी है खानाबदोशी[6],
घर से जो निकलते है तो फिर घर नहीं मिलता।
सब टूट गए आशिके शैदा के गले पर,
अब मोल भी कोई उन्हे खंजर नही मिलता।
अब फिर वही ज़िद है वही हठ है वही इन्कार,
किस काम का मिलना जो वो मिलकर नही मिलता।

---

(१) इरादा, (२) दुबारा, (३) गैर, (४) मनुष्य, (५) मोती
(६) आवारा।

मैं किससे कहूँ बात कि तनहा हूँ सफर में,
रहज़न[1] कोई मिल जाय जो रहबर नहीं मिलता।
जो बात है जिसकी वो है मख़्सूस उसी तक,
बुलबुल से कभी रंगे गुलेतर नहीं मिलता।
इसमें ये ग़रज़ है कि सब अरमान न निकले,
मिलता है तो मिलकर वो मुकर्रर नहीं मिलता।
ऐ 'नूह' अजब हाल है यह मेरे वतन का,
माशूक़ तो माशूक है नौकर नहीं मिलता।

× × ×

न हुआ खंजरे कातिल से जुदा सर अपना,
ये भी तक़दीर है किस्मत है मुकद्दर[2] अपना।
इन दिनों ऐशो[4] मसर्रत में बसर होती है,
जाम[5] अपना है सुबू अपना है सागर अपना है।
पहले ये सोच ले फिर दिल को वो बरबाद करे,
अपने हाथों से मिटाता है कोई घर अपना।
ये न हो दिल में तो पहलू भी बदलना हो मुहाल,
कोई हमदर्द नहीं दर्द से बढ़ कर अपना।
एक हालत पे ये कम्बख़्त तो रहना ही नहीं,
कभी कुछ है कभी कुछ है दिले मुज़तर[6] अपना।
इश्क़ में रंज वो पाए हैं कि दिन आता है,
न इसी पर न उसी पर न किसी पर अपना।
वो शबे वस्ल ताज्जुब से ये फ़रमाते हैं,
'नूह' तुम ग़ैर को कर लेते हो क्योंकर अपना।

---

(१) डाकू, (२) बटोही, (३) तक़दीर, (४) आनंद, (५) प्याला, (६) बेचैन।

मुहब्बत का अच्छा नतीजा न देखा,
न देखा न देखा न देखा न देखा।
हज़ारों अदाएँ हज़ारों जफ़ाएँ,
तुझे देखकर हमने क्या क्या न देखा।
वो बीमारे उल्फ़त को देते हैं ताने,
कि जैसा सुना हाल वैसा न देखा।
योंही दिल मुझे दे दिया उसने वापस,
न सोचा न समझा न जाँचा न देखा।
कभी लुत्फ़ उठाए कभी गम उठाए,
खुदा की खुदाई में क्या क्या न देखा।
मिली देखने के लिये मुझको आँखें,
मगर मैंने इस पर भी अस्ला[1] न देखा।
जो सूरत के अच्छे नज़र आए मुझको,
उन्हें मैंने सीरत[2] का अच्छा न देखा।
चलो 'नूह' तुमको दिखा लाएँ तुमने,
न मयखाना देखा न बुतखाना देखा।

× × ×

हरदम जिसे नज़ारा हो अपने हबीब[3] का,
सौ में नसीब एक है उस खुश नसीब का।
वो और हैं जो मरते हैं औरों के वास्ते,
दिल तुमको दे ये दिल नहीं मेरे रकीब[4] का।
ऐ आह पहले चर्ख से दुश्मन को फूँक दे,
वो दूर का निशाना है ये है करीब का।
ये कह के वक्ते नज़ा[5] वो बालीं[6] से उठ गए,

(१) हरगिज, (२) आदत, (३) दोस्त, (४) दुश्मन, (५) आखिरी समय, (६) सिराहा।

तुम पर पड़ा है सब्र तुम्हारे रकीब का।
हमसे ये इजतनाब[1] तुम्हारा फजूल है,
अल्लाह एक ही है अमीरो गरीब का।
रस्ता बता के खिज्र भी चुपके से चल दिए,
कोई नहीं जहान मे साथी गरीब का।
कट जाय दिन जो खैर से तो खैर जानिए,
उट्टे हैं आज देख के वो मुँह रकीब का।
ऐ 'नूह' रोज कोई कहाँ तक सुना करे,
दुखड़ा रकीब का वही रोना नसीब का।

× × ×

इस कमसिनी मे हो उन्हे मेरा ख्याल क्या,
वो कै बरस के हैं अभी सिन क्या है साल क्या।
मै और दुश्मनों से करूँ आपका गिला,
ये मेरी ताब क्या है ये मेरी मजाल क्या।
कमजोर जिसके पाँव हैं नाजुक है जिसके हाथ,
वो कत्ल क्या करेगा हमे पायमाल[2] क्या।
एक रंज एक गम हो तो उसको कहूँ भी मैं,
तुम मुझसे पूछते हो मेरे दिल का हाल क्या।
अगयार से तो रह न गया ये भी वास्ता,
मुझसे तुम्हे जो रंज है इसका मलाल क्या।
ऐ 'नूह' तोबा इश्क से कर ली थी आपने,
फिर ताक झाक क्यों है ये फिर देख-भाल क्या।

× × ×

(१) परहेज, (२) पैर से मलना।

ये समझ लो खाक मे अब मिल गया,
दिल नहीं आया हमारा दिल गया।
वो ये कहते है मुझे खुश देख कर,
मेरे मिलने से तुझे क्या मिल गया।
आए मकतल मे वो इस अन्दाज़ से,
जितने थे सब का कलेजा हिल गया।
वो जो पर्दे थे दुई के उठ गये,
मै मिला उससे वो मुझसे मिल गया।
फातिहा को वो न आए क़ब्र पर,
खाक मे अर्मान ये भी मिल गया।
उनको लाने को गए थे हमनशी[1],
उनको पहुचाने को मेरा दिल गया।
ये भी कोई सुल्ह कोई जंग है,
आँख तो उनसे लड़ी दिल मिल गया।
हज़रते जाहिद बड़े घाटे मे है,
दीन मे दुनिया का सब हासिल गया।
आगए पहलू मे वो जान आगई,
वो गए पहलू से मेरा दिल गया।
कौन जाता है कफस को छोड़कर,
अब मेरा सैय्याद से पर मिल गया।
हमको इतनी भी खबर अपनी नही,
कब दिल आया कब हमारा दिल गया।
दम दिए फिकरे दिए झांसे दिए,
तुमसेजो मिलनाथा मुझकोमिल गया।
तुमको क्या तुम चैन से बैठो रहो,

(१) साथी।

उनसे पूछो जिस किसी का दिल गया।
सोज हसरत रंज-ग़म, अरमान, दर्द,
एक दिल देने से क्या क्या मिल गया।
ईद आई 'नूह' तुम उनसे मिलो,
लो गले मिलने का हीला मिल गया।

× × ×

पहलू मे चैन से दिले मुजतर न रह सका
दम भर न रुक सका ये घड़ी भर न रुक सका।
अब इज़तराब हद से हमारा गुजर गया,
रक्खा जो हमने हाथ तो दिल पर न रह सका।
दुनिया मे मरके फिर कोई जिन्दा हो क्या मजाल,
जो रह चुका यहाँ वो मुकरर न रह सका।
तुम लेके फेरते हो जो दिल कुछ सबब भी है,
क्योंकर न रख सके इसे क्योंकर न रह सका।
खोया खलिश[1] का लुत्फ मेरे इज़तराब[2] ने,
दिल की तड़प से रग में भी नश्तर न रह सका।
मैं हूँ कि नक्शपा[3] हों सबा[4] हो कि मुद्दई[5],
उनकी गली में कोई भी जम कर न रह सका।
ए 'नूह' अब कहाँ इसे ले जाके फेक दूँ,
लो उनके पास भी दिले मुजतर न रह सका।

× × ×

खुदा से ज़ुल्म का शिकवा ज़रूर मैंने किया,
बड़ा क़सूर ये ए रश्के हूर मैंने किया।

---

(१) खटक (२) बेचैना, (३) पांव का चिन्ह, (४) हवा, (५) दावा करने वाला।

किसी से दिल का लगाना गुनाह है नासेह,
जो ये क़सूर है तो क़सूर मैने किया।
तेरा खयाल मेरे दिल मे आ नही सकता,
कि जिसको दूर किया उसको दूर मैने किया।
मुझे जो तुमने सताया तो आह की मैंने,
कसूर तुमने किया या क़सूर मैने किया।
गर उसकी शाने रहीमी को देखना चाहे,
तो पारसा[1] भी ये कह दे कसूर मैने किया।
जनाबे 'नूह' जमाने का एतबार नहीं,
बुरा किया जो किसी से गुरूर मैने किया।

× × ×

मेरे दिल का कभी पूरा कोई आरमां न हुआ,
न हुवा हॉ, न हुवा हॉ, न हुवा हॉ न हुवा।
कूचए यार की रौनक पे ताज्जुब क्या है,
जब ये आबाद हुवा ये कभी वीरां न हुवा।
सर[2] गुज़श्ते दिले नाशाद सुनाऊँ किसको,
कोई दुनिया मे मेरे हाल का पुरसां[3] न हुवा।
तुम हो वो माल कि जिसका है ज़माना गाहक,
मै हूँ वो जिन्स कि जिसका कोई ख्वाहॉ न हुवा।
हज़रते शेख़ भी समझा के उसे हार गए,
'नूह' वो बुत कभी काफिर से मुसलमां न हुआ।

× × ×

फकत एक दिल तो है गमख्वार मेरा,
नही है और कोई यार मेरा।

---

(१) परहेज़गार, (२) हाल (३) पूछने वाला।

पुराना हो चुका आज़ार[1] मेरा,
बस अब जीना हुवा दुश्वार मेरा।
लगी लिपटी न रक्खूंगा किसी की,
जो होगा हश्र मे इज़हार मेरा।
किसी की तेग अबरू कह रही है,
नहीं जाता है खाली वार मेरा।
भॅवर मे 'नूह' कश्ती आ फॅसी है,
करे अल्लाह बेड़ा पार मेरा।

× × ×

कही छुपती है लगावट की नजर प्यार की बात,
और फिर बात किस शोख दिल आजार की बात।
संगे मरक़द[2] उसने बादे[3] मर्ग मुझ पर रख दिया,
बारे ग़म क्या कम था जो एक और पत्थर रख दिया।
उसके सीने पर जो मैने रख दिया भूले से हाथ,
उस सितमगर ने गले पर मेरे खंजर रख दिया।
था जो शिकवा बारे गम का दफ्तरे पुर शोक से,
पहले कासिद ने उठाया फिर उठा कर रख दिया।
लोग जिस दिल को मेरे देते थे पहलू मे जगह,
हाय उस को पांव से तुमने मसल कर रख दिया।
नामए[4] पुर शौक का मज़मून क्या मज़मून है,
लिखते लिखते हमने उस को लिखके दफ्तर रख दिया।
'नूह' साहब आपका दिल और वो बेदाद[5] गर,
फैसला अपने का बेगाने पे क्योंकर रख दिया।

× × ×

(१) दुख, (२) कब्र, (३) मरने के बाद, (४) खत, (५) ज़ालिम।

दम जो निकला तो मुद्दआ[1] निकला,
एक के साथ दूसरा निकला।
बात निकली अगर मेरे मुँह से,
वो ये समझे कि मुद्दआ निकला।
हम उसे जिस कद्र समझते थे,
वो तो उससे कहीं सिवा निकला।
मर गया तुमसे मुद्दई मिल कर,
ये भी मेरा ही मुद्दआ निकला।
मिट गया उसकी चीने[2] अबरू पर,
दिल फ़कीर उस लकीर का निकला।
जैसे दम जिस्म से निकलता है,
यूँ मेरे दिल से मद्दआ निकला।
मैं हूँ खुश जान के निकलने से,
जान निकली कि मुद्दआ निकला।
'नूह' पढ़ता है पांच वक्त नमाज़,
पारसाओ का पारसा[3] निकला।

× × ×

जो मेरे सामने जामे शराब आएगा,
किसे खयाले अज़ाबो सवाब आएगा।
वहां से कोई पयामे[4] अताब[5] आएगा,
ये मेरे खत का ज़बानी जवाब आएगा।
खुदा के सामने आओगे या न आओगे,
वहा भी ऐसे ही तुमको हिजाब[6] आएगा।

---

(१) इच्छा, (२) शिकन, (३) भक्त, (४) बुलावा, (५) गुस्सा (६) शर्म।

बहुत से रंज बहुत से हैं ग़म बहुत से मलाल,
तेरी समझ में न मेरा हिसाब आएगा।
वो मेरे घर में है रोज़े[1] फ़िराक़ तारीकी[2],
चराग़ लेके यहां आफ़ताब आएगा।
वो ख़त को देके ये ऐ 'नूह' पूछना मेरा,
शिताब जाएगा क़ासिद शिताब[3] आएगा।

× × ×

मुझको ख़्याल आबरूए ख़मदार हो गया,
खंजर तेरा गले का मेरे हार हो गया।
तुमको झलक दिखाके न छुपना था आड़ में,
लो एक जहान[4] तालिबे दीदार हो गया।
जिस जिससे हमको लुत्फ़ो करम की उम्मीद थी,
वो भी हमारे हक़ में सितमगार[5] हो गया।
मैं माजराए सरे चमन क्या क्या बयां करूँ,
आँखें खुली न थीं कि गिरफ़्तार हो गया।
पामाल हो के भी न उठा कूए यार से,
मैं उस गली में साए दीवार हो गया।
वो आए वक़्ते[6] नज़ा अयादत[7] के वास्ते,
चलते चलाते आख़िरी दीदार हो गया।
मैं ज़ुल्म सहते सहते बना ख़ूगरे[8] सितम,
तू ज़ुल्म करते करते सितमगर हो गया।
ऐ 'नूह' खुल चले थे वो हमसे शबे विसाल,
इतने में आफ़ताब नमूदार हो गया।

---

(१) जुदाई के दिन, (२) अँधेरा (३) जल्दी, (४) चाहने वाला (५) ज़ालिम, (६) मरते समय, (७) देख-भाल करने वाले, (८) ज़ाहिद।

मैं नही इसके दम मे आने का,
जालिया है वो एक जमाने का।
देख सकता है कौन जलवए यार,
यही बाइस[1] है मुँह छिपाने का।
खत्म होता है एक मुद्दत मे,
एक हिस्सा मेरे फिसाने का।
जिक्रे लुत्फो करम[2] पे वो बोले,
तज़किरा[3] है ये किस जमाने का।
नकहते[4] जुल्फ वो सुंघाते है,
मै नही होश मे अब आने का।
जब न हो कोई तालिबे दीदार,
लुत्फ क्या देखने दिखाने का।
दावरे[5] हश्र पूछता क्या है,
हाल गुजरे हुए ज़माने का।
'नूह' साहब से छुट नही सकता,
कोई जल्सा शराबखाने का।

× × ×

दमे आखिर अगर दीदार हो जाता तो अच्छा था,
विसाले यार और एक बार हो जाता तो अच्छा था।
जो उनको इश्क का आज़ार हो जाता तो अच्छा था,
मसीहा[6] भी अगर बीमार हो जाता तो अच्छा था।
उम्मीदे वस्ल पर दुनिया से हम महशर मे क्यों आते,
जो होना था वही इनकार हो जाता तो अच्छा था।

---

(१) कारण, (२) दया, (३) जिक्र, (४) बाल की ख़ुशबू, (५) प्रलय का मालिक, (६) दवा करने वाला।

कहाँ तक राह देखे 'नूह' कोई उनके मिलने की,
जो इस इकरार से इन्कार हो जाता तो अच्छा था।

× × ×

ख़ुल्द[1] में हूरों का दुनिया में बुतों का ग़म हुवा,
मुझ शहीदे वावफा का हर जगह मातम हुवा।
इज्तराबे[2] दिल के ताने अब वो देते हैं मुझे,
या इलाही दर्द उनके सामने क्यों कम हुवा।
वो जो महशर में झलक अपनी दिखाकर छुप रहे,
क्या कहूं मैं उस घड़ी आलम का क्या आलम हुवा।
रंज मरगे गैर में हालत हुई दोनों की एक,
उनको उसका ग़म हुवा तो मुझको उनका ग़म हुवा।
कमसिनी जाती रही नामे ख़ुदा आया शबाब,
अब किसी का और से कुछ और ही आलम हुवा।
कत्ल करके क़ब्र को करता है अब वो पायमाल,
मेरे मरने पर भी ज़ालिम का न गुस्सा कम हुवा।
हश्र में कोई किसी के हाल का पुरसा[3] नहीं,
दूसरे आलम में सब का दूसरा आलम हुवा।
गालियाँ उश्शाक[4] को देते हैं अक्सर ख़ूबरू,
आपको ऐ 'नूह' क्यों इस दिल्लगी का ग़म हुवा।

× × ×

हमको नहीं मालूम हमें इसकी ख़बर क्या,
आहों में असर क्या है, दुआओं में असर क्या।

(१) स्वर्ग, (२) बेचैनी, (३) पूछने वाला, (४) चाहने वाले।

आख़िर को गुज़र जायगी मेरी शबे[1] हिजरॉ,
गर आप न आऍगे तो होगी न सहर[2] क्या।
अल्लाह भी है वो भी है महशर मे उदू[3] भी,
देखूँ मेरी फ़रियाद दिखाती है असर क्या।
काबे मे भी हमको न मिली दौलते दीदार,
अल्लाह का घर है किसी मोहताज का घर क्या।
दिन रात बुतों ही मे गुज़रती है तुम्हारी,
ऐ 'नूह' तुम्हे कुछ नहीं अल्लाह का डर क्या।

× × ×

तुझको वादा किए जमाना हुवा,
बेवफ़ा आज तक वफ़ा न हुवा।
दिल से मतलब मेरा अदा न हुवा,
एक से काम एक का न हुवा।
उसने वादा किया वफ़ा न किया,
वो बराबर हुवा, हुवा न हुवा।
एक हालत रही मेरे दिल की,
ये वफ़ादार बेवफ़ा न हुवा।
पी भी लो 'नूह' भूल जाओ उसे,
तुमको तोबा किए ज़माना हुवा।

× × ×

उदू भी रोते हे मेरा वो हालेज़ार किया,
ये तूने काम न करने का मेरे यार किया।
कभी वो बिगड़े कभी दिल से मुझको प्यार किया,
इन्हीं अदाओं ने बेताबो बेकरार किया।
कुछ इस अदा से खिंचा कत्लगह मे खंजरे नाज,

(१) जुदाई की रात, (२) सुबह, (३) दुश्मन।

गले लगा के मेरे दिल ने ख़ूब प्यार किया।
ये चीज अपनी ख़ुशी से भी कोई देता है,
जो हमसे कुछ न बन आई तो दिलनिसार[1] किया।
वो बारबार ये कहते हैं 'नूह' से शबे वस्ल,
बुलाकर आपने हमको ज़लीलो ख़्वार किया।

× × ×

तवालते शबे[2] फुरकत का वाह क्या कहना,
इस आए दिन की मुसीबत का वाह क्या कहना।
उठा रहे हैं क़यामत वो नीची नजरों से,
हया के साथ शरारत का वाह क्या कहना।
घटा है, बाग है मुतरिब[3] है, ऐ मेरे साकी,
फिर उसपे तेरी इनायत का वाह क्या कहना।
कहीं न इसका न उसका पता है हजरते शेख़,
तुम्हारी दोजख़ो जन्नत का वाह क्या कहना।
तमाम करके भी मुझको न यह तमाम हुई,
दराज़िए[4] शबे फुरकत का वाह क्या कहना।
कभी हो रिन्द[5], कभी पारसा हो तुम ऐ 'नूह'
तुम्हारे मजहबो[6] मिल्लत का वाह क्या कहना।

× × ×

शर्म ने वस्ल में शोख़ी को सम्हलने न दिया,
एक ने एक का अरमान निकलने न दिया।
नौजवानी मे हुवा ख़ुश्क[7] मेरा नख्ले[8] मुराद,
नाउम्मेदी ने मुझे फूलने फलने न दिया।

---

(१) न्यौछावर, (२) जुदाई की रात का बढ़ना, (३) गाने वाला, (४) विरह की रात का बढ़ना, (५) बदमस्त, (६) दीन धर्म, (७) सूखा, (८) वृक्ष।

देख नादान लगी दिल की बुरी होती है,
यही कह कह के किसी ने मुझे जलने न दिया।
दम भी निकला तो तने जिस्म से तकलीफ के साथ,
कोई अरमान कभी उसने निकलने न दिया।
ज़िद जो करता दिलनाशाद मनाए बनती,
ख़ैर समझो कि इसे हमने मचलने न दिया।
'नूह' ले दे के यही एक था गमख्वार[1] फिराक,
अपने अरमान को खुद उसने निकलने न दिया।

× × ×

रहा बाकी न वह बचपन किसी का,
गजब ढाने लगा जोबन किसी का।
क़यामत में तो अब वादा वफा हो,
कहूंगा थाम कर दामन किसी का।
वो सीधी सादी भोली भाली बातें,
अभी तक याद हैं बचपन किसी का।
दमे रुख़सत किसी की है ये सूरत,
किसी का हाथ है दामन किसी का।
क़यामत में करेंगे वो ख़ुशामद,
मजा दे जायगा शेवन[2] किसी का।
बहुत दस्ते[3] हवस ने की कोताही[4],
अछूता रह गया दामन किसी का।
किसी को हो मोयस्सर वस्ल ऐ 'नूह'
कटे अफसोस में सावन किसी का।

× × ×

(१) सहानुभूति (२) आह (३) लालच (४) कमी।

कभी दर्दे दिले बेताब जताया न गया,
उनसे देखा न गया हमसे दिखाया न गया।
जान देने पे यह उल्टा मुझे इल्ज़ाम मिला,
नाज माशूक का आशिक से उठाया न गया।

ले गया कौन उड़ाकर मेरे दिल को शबे वस्ल,
तीसरा और यहां कोई न आया न गया।
बेतलब अंजुमने नाज़ मे जाये कोई,
जब बुलाया तो गया जब न बुलाया न गया।

कत्ल को आपने तलवार उठाई सौ बार,
जुल्मे बेजा से कभी हाथ उठाया न गया।
पाके मौक़े पे भी अक्सर उन्हे खामोश रहे,
खूब रूयों को कभी हमसे सताया न गया।

महफिले नाज में क्यों उसको जगह आपने दी,
क्या उदू था कोई परदा जो उठाया न गया।
किस तरह लोग हसीनों से मिला लेते हैं दिल,
हमसे तो हाथ से भी हाथ मिलाया न गया।

क्या कहूं देख के उस बुत को हुई क्या हालत,
दिल बचाया मगर ईमान बचाया न गया।
जो पड़ा पेच मुकद्दर[1] मे वो सुलझा न कभी,
जो पड़ा दाग जिगर मे वो मिटाया न गया।

मुझको अक्सर यह वो कह कहके रुला देते हैं,
'नूह' से नूह का तूफान उठाया न गया।

× × ×

(१) तक़दीर।

इश्क मे ये हमारा हाल हुवा,
सबसे अनबन हुई मलाल हुवा।
इससे क्या क्या उन्हे मलाल हुवा,
नाला करना भी अब मुहाल हुवा।
वस्शवालो कहा सुना मुझ से,
और से और मेरा हाल हुवा।
उसने पूछा कभी जो हाल मेरा,
हाय मेरा अजीब हाल हुवा।
क्या कहूँ माजराए तूले[1] फिराक,
एक दिन मुझको एक साल हुवा।
जब सुना पास गैर के वो गए,
सुनते ही मेरा गैर हाल हुवा।
ईद क्यों हो न मैकदे[2] मे आज,
शेख साहब का इन्तकाल हुवा।
जान अब माँगते है वो ऐ 'नूह'
दिल के देने का यह मआल[3] हुआ।

× × ×

ख़याल से हम उठा रहे है जहान मे लुत्फ जिन्दगी का,
कभी कहीं का, कभी कहीं का, कभी किसी का, कभी किसी का।
करे निगाहे करम वो हम पर कि मेहर्बां हो रकीब पर वह,
मिजाज उनका तबीयत उनकी कोई है क्या मालिक उनके जी का।
जहाँ मे वो कौन सा बशर[4] है नहीं है जो इन बुतों का आशिक़,
कोई किसी पर, कोई किसी पर, कोई किसी का, कोई किसी का।
कभी करम है कभी सितम है कभी वफा है कभी जफा है,
घड़ी मे कुछ हो घड़ी मे कुछ हो यकीं है क्या उसकी दोस्ती का।

---

(१) बिरह का बढ़ना, (२) शराबखाना, (३) नतीजा, (४) मनुष्य।

ये ख़ूब जांचा य ख़ूब बरता य ख़ूब जाना ये ख़ूब देखा,
कि वक्त नाज़ुक पे इस जहाँ में नहीं है साथी कोई किसी का।
जो मेरे ख़त का जवाब भेजा तो ख़ूने कासिद से लिखके भेजा,
किया है पर्दे में दुश्मनों के किसी ने इज़हार दोस्ती का।
कभी जो दी जज्ब दिल की धमकी तो 'नूह' वो मुस्करा के बोले,
जहाँ में कहते हैं वस्ल जिसको मोआमला है हंसी ख़ुशी का।

× × ×

उनसे गर फ़ैज़ियाब[1] हो जाता,
माहताब आफ़ताब हो जाता।
उनको लिखते जो हाले तूले फ़िराक़,
ख़त हमारा किताब हो जाता।
इश्क में लुत्फ़ है तड़पने का,
यह सुकूँ[2] इज्तराब हो जाता।
आगे तदबीर की रसाई थी,
मैं वहाँ बारियाब[3] हो जाता।
गर न मिलती शराब तो जल कर,
दिल हमारा कबाब हो जाता।
दिल लगाना सवाब था लेकिन,
जी छुड़ाना अज़ाब हो जाता।
'नूह' होते अगर न शाहिद[4] बाज़,
मैं मुरीदे जनाब हो जाता।

× × ×

---

(१) लाभ उठाने वाला, (२) इतमीनान, (३) पहुंच, (४) प्रेमी।

खिलवत[1] में उनसे कहना मेरे दिले हज़ी का,
अब मान जाओ देखो मौका नहीं नहीं का।
दिल को छुपा के मैंने नाहक़ बग़ल में पाला,
ये क्या ख़बर थी मुझको है साँप आस्ती का।
बेताब हो गए हो सोज़ निहाँ से तुम भी,
देखा असर न आख़िर इस आहे आतशी का।
दस्ते जुनूं हमारा दस्ते हवस नहीं है,
अब छूटना है मुश्किल हाथ आकर आस्ती का।
ऐ 'नूह' बे बुलाए पहलू में आ गए वह,
अब नाज़ कोई देखे मेरे दिले हज़ी का।

× × ×

मुझ पर इल्ज़ाम रक़ीबों ने संवारे क्या क्या,
होगए मेरे उदू दोस्त तुम्हारे क्या क्या।
अब तो बरसों में भी मिलती नहीं मुझ से आँखें,
कभी होते थे मेरे उनके इशारे क्या क्या।
जब्त से और मेरी जान पे बन जाती है,
फूंकते हैं मुझे नालों के शरारे क्या क्या।
कभी होती हैं अगर आहें शररबार बलन्द,
आस्मा पर नजर आते हैं सितारे क्या क्या।
ये अगर जानते हो तुम तो बता दो मुझको,
नफ़अ क्या क्या हैं मुहब्बत में ख़सारे[2] क्या क्या।
उसने दो फूल भी रक्खे न कभी तुरबत[3] पर,
ख़ाक में मिल गए अरमान हमारे क्या क्या।
ये बनावट मेरी आँखों में खुपी जाती है,

(१) एकान्त (२) नुक़सान, (३) क़ब्र (४) अपने आपको दिखाना।

आज फिरता है कोई बाल सवांरे क्या क्या।
तुमसे मेरा दिले बेताब सम्हाला न गया,
लोग गिरनों को तो देते हैं सहारे क्या क्या।
तुम मुझे कत्ल करो तुम मुझे बरबाद करो,
मेरे दिल मे भी हैं अरमा मेरे प्यारे क्या क्या।
गोशए कब्र से बढ़ कर कहीं आराम नहीं,
लोग सोते हैं वहाँ पांव पसारे क्या क्या।
वो कभी कस्बे मे है वो कभी बुतख़ाने मे,
ख़ुदनुमाई उसे फिरती है उभारे क्या क्या।
किस से लूँ दाद किसे 'नूह' सुनाऊँ अशआर,
मेरे अहबाब ज़माने से सिधारे क्या क्या।

× × ×

मेरे मुँह मे ज़बान है गोया,
ये भी एक उसकी शान है गोया।
यों वो बैठे है घर में दुश्मन के,
कि उन्हीं का मकान है गोया।
कूए जानाँ मे हम को चैन नहीं,
ये ज़मीं आस्मान है गोया।
कुछ तो सुन लो मेरी दमे आख़िर,
अभी मुँह मे ज़बान है गोया।
ज़र्दिये[1] रुख़ कभी नहीं छिपती,
इश्क का ये निशान है गोया।
'नूह' क्यों अपनी जान दें उन पर,
जान है तो जहान है गोया।

× × ×

(१) पीलापन।

पहुँचेगा कभी आशिके नाकाम तुम्हारा,
कुछ अर्शे मोअल्ला तो नहीं वाम[1] तुम्हारा।
वो देखके दर पर मुझे किस नाज़ से बोले,
क्यों आए हो क्या काम है क्या नाम तुम्हारा।
मैं खूगरे[2] आजार हूं ऐ अहले मुहब्बत,
तुमको ही मुबारक रहे आराम तुम्हारा।
तुम महफिले अगयार से मुझको न निकालो,
देखो न निकल जाये कहीं नाम तुम्हारा।
ऐ काश फलक[3] पर महो[4] खुर्शीद[5] के बदले,
जल्वा नजर आए सहरोशाम तुम्हारा।
काबा हो कि बुतखाना हो सुनता हूँ शबोरोज,
हर एक जगह एक नया नाम तुम्हारा।
क्या पूछते हो मुझसे कि मैं कौन हूँ क्या हूं,
कहते हैं मुझे आशिके नाकाम तुम्हारा।
गो दावरे महशर न करे ज़ुल्म की पुरसिश[6],
हम तो लिए जाएँगे मगर नाम। तुम्हारा।
आराइशे माशूक का एक वक्त यही है,
रंग और निखरता है सरे शाम तुम्हारा।
उस रोज़ तरहदार हज़ारो नज़र आए,
जिस सुबह को हम लेके उठे नाम तुम्हारा।
पीते तो हो तुम कर्ज़ की मय हज़रते वायज़,
सामान भी होगा कभी नीलाम तुम्हारा।

---

(१) कोठा, (२) चाहने वाला, (३) आकाश, (४) चन्द्रमा, (५) सूर्य, (६) पूछगछ।

आज फिरता है कोई वाल सवांरे क्या क्या।
तुमसे मेरा दिले बेताब सम्हाला न गया,
लोग गिरतों को तो देते है सहारे क्या क्या।
तुम मुझे कत्ल करो तुम मुझे बरबाद करो,
मेरे दिल मे भी है अरमां मेरे प्यारे क्या क्या।
गोशए कब्र से बढ़ कर कहीं आराम नहीं,
लोग सोते हैं वहाँ पांव पसारे क्या क्या।
वो कभी कस्बे मे है वो कभी बुतख़ाने मे,
ख़ुदनुमाई उसे फिरती है उभारे क्या क्या।
किस से लूँ दाद किसे 'नूह' सुनाऊँ अशआर,
मेरे अहबाब ज़माने से सिधारे क्या क्या।

× × ×

मेरे मुँह मे जबान है गोया,
ये भी एक उसकी शान है गोया।
यों वो बैठे है घर मे दुश्मन के,
कि उन्हीं का मकान है गोया।
कूए जानाँ मे हम को चैन नहीं,
ये जमीं आस्मान है गोया।
कुछ तो सुन लो मेरी दमे आखिर,
अभी मुँह मे ज़बान है गोया।
जर्दिये[1] रुख कभी नहीं छिपती,
इश्क का ये निशान है गोया।
'नूह' क्यों अपनी जान दे उन पर,
जान है तो जहान है गोया।

× × ×

(१) पीलापन।

पहुँचेगा कभी आशिके नाकाम तुम्हारा,
कुछ अर्शे मोअल्ला तो नही बाम[1] तुम्हारा।

वो देखके दर पर मुझे किस नाज़ से बोले,
क्यों आए हो क्या काम है क्या नाम तुम्हारा।

मै खूगरे[2] आजार हूं ऐ अहले मुहब्बत,
तुमको की मुबारक रहे आराम तुम्हारा।

तुम महफिले अगयार से मुझको न निकालो,
देखो न निकल जाये कहीं नाम तुम्हारा।

ऐ काश फलक[3] पर महो[4] खुर्शीद[5] के बदले,
जल्वा नजर आए सहरोशाम तुम्हारा।

काबा हो कि बुतखाना हो सुनता हूँ शबोरोज़,
हर एक जगह एक नया नाम तुम्हारा।

क्या पूछते हो मुझसे कि मै कौन हूँ क्या हूं,
कहते है मुझे आशिके नाकाम तुम्हारा।

गो दावरे महशर न करे ज़ुल्म की पुरसिश[6],
हम तो लिए जाएँगे मगर नाम। तुम्हारा।

आराइशे माशूक का एक वक्त यही है,
रंग और निखरता है सरे शाम तुम्हारा।

उस रोज़ तरहदार हज़ारो नजर आए,
जिस सुबह को हम लेके उठे नाम तुम्हारा।

पीते तो हो तुम कर्ज़ की मय हज़रते वायज,
सामान भी होगा कभी नीलाम तुम्हारा।

---

(१) कोठा, (२) चाहने वाला, (३) आकाश, (४) चन्द्रमा, (५) सूर्य, (६) पूछगछ।

उस वक्त हो मालूम तुम्हे मेरी हक़ीक़त,
अटके किसी .खुदकास से गर काम तुम्हारा।
माना इन्हें रह सकते हो तुम पर्दे के अन्दर,
पर्दे मे तो रहने का नहीं नाम तुम्हार।
ऐ 'नूह' न क्यो इश्क मे तूफान उठाओ,
य काम तुम्हारा है ये है नाम तुम्हारा।

× × ×

पहले मिलने को वो मुश्किल से मिला,
फिर मिला तो ऊपरी दिल से मिला।
आपका दिल क्या मेरे दिल से मिला,
माहेकामिल[1] शमए महफिल से मिला।
अब मेरी उसकी सफ़ाई हो गई,
एक का दिल एक के दिल से मिला।
किस कदर शौके[2] शहादत था मुझे,
चढ़ के .खुद मै तेगे कातिल से मिला।
आंख लड़ते ही मुकद्दर लड़ गया,
उस हसीं का दिल मेरे दिल से मिला।
उस का मिलना जानते थे सहल हम,
कितनी दिक्कत कितनी मुश्किल से मिला।
आपका मिलना मेरा मिलना नहीं,
जिस किसी से मैं मिला दिल से मिला।
लुत्फ़ उसका .जुल्म उस का देखिये,
मुझ से मिल कर सारी महफिल से मिला।
ऐसे मिलने से न मिलना खूब है,

(१) पूर्णिमा का चाँद, (२) मरने की चाह।

क्या मिला गर वो बुरे दिल से मिला।
दिल न पहलू से न सर ही दोश[1] पर,
ये नतीजा मिलके कातिल से मिला।
चोर ऐसा मुखबिर[2] ऐसा चाहिये,
मुझ को दिलबर का पता दिल से मिला।
खौफ था कुछ और भी बरहम न हो,
डरते डरते मैं उस अनमिल से मिला।
मिलने वाले को मिला कर ख़ाक मे,
दिल तुम्हारा गैर के दिल से मिला।
अब है कुछ मिलने मिलाने का मज़ा,
आप का दिल 'नूह' के दिल से मिला।

× × ×

जाहिद भी उस हसीं का है बन्दा बना हुआ,
वह तोबा तोबा बुत न हुआ क्या ख़ुदा हुवा।
मिल कर जो मुझसे कोई एकाएक जुदा हुआ,
मैं क्या बताऊं हाल मेरे दिल का क्या हुवा।
करता हूं राहे शौक मे यों दिल की जुस्तजू,
जाता हूं एक एक से मैं पूछता हुवा।
हम इससे है ख़िलाफ़ ये हमसे ख़िलाफ़ है,
गोया हमारा दिल भी मिज़ाज आपका हुवा।
अब तुम जफ़ा के बाद न उज़रे जफ़ा करो,
मुझ पर जो कुछ किया वो किया जो हुआ हुवा।
जादू कहूं इसे कि करामत[3] कहूं इसे,
जो कुछ मुझे ज़बान से तुमने कहा हुवा।

(१) कन्धा, (२) जासूस, (३) ईश्वरीय लीला।

ऐ 'नूह' क्यों न इश्क मे हम पुख्ताकर[१] हों,
देखा हुवा है ये है हमारा किया हुवा।

× × ×

उनका खंजर नजर नहीं आता,
कोई सर पर नज़र नहीं आता।
उनकी सूरत नज़र जब आती है,
दिले मुज़्तर[२] नजर नहीं आता।

कर गई काम तेगे नाज़ मगर,
जख्म दिल पर नज़र नहीं आता।
भीड़ ऐसी है जांनिसारों[३] की,
वो सितमगर नज़र नहीं आता।

क्या कहूं अपने दिल की वेताबी,
वह जो दम भर नज़र नहीं आता।
'नूह' मेरी नज़र में कोई भी,
उनसे बेहतर नजर नहीं आता।

× × ×

बुरा हो जौफ़[४] का इतना भी काम कर न सका,
वो आए और उन्हें मैं सलाम कर न सका।
दमे अख़ीर भी दिल में यही ख़याल रहे,
ये काम कर न सका मैं वो काम कर न सका।
वो रोबे हुस्न है चेहरे पे उस सितमगर के,
कि दूर से भी उसे मैं सलाम कर न सका।
ख़ुदा को हश्र के दिन मैं जवाब क्या दूँगा,

---

(१) पहुँचे हुए, (२) बेचैन, (३) जान निछावार करने वाला, (४) कमजोर।

जो काम करने को आया वो काम कर न सका।
कभी मिली नही तूफ़ा से 'नूह' को फ़ुरसत,
वो और इसके सिवा कोई काम कर न सका।

× × ×

वो आना वो फिर जल्द जाना किसी का,
न जाना कभी हमने आना किसी का।
जो वरहम[1] रहे मुझसे तो क्या नतीजा,
वरावर है आना न आना किसी का।
खवर आमद आमद की सुनता हूं कब से,
कयामत का आना है आना किसी का।
वो आंखे लड़ाकर मेरा दिल चुराना,
वो मुझसे फिर आंखे चुराना किसी का।
हरम[2] मे कलीसा[3] मे आँखों मे दिल मे,
हजारों जगह है ठिकाना किसी का।
हसीनों को ए 'नूह' दे ही दिया दिल,
कहा तुमने आखिर न माना किसी का।

× × ×

मरीजे इश्क पर एहसान उसका हो नही सकता,
वो अच्छा है मसीहा से जो अच्छा हो नहीं सकता।
नमाजे भी पढ़ें रज भी करे रोजे भी हम रक्खे,
य दुनिया भर का जाहिद हमसे झगड़ा हो नही सकता।
उठाओ तो जरा बुर्का दिखाओ तो जरा जलवा,
हम आइना नही है हमको सक्ता[4] हो नहीं सकता।
मरीज़ाने मुहब्वत का मदावा[5] ग़ैर मुमकिन है,

---

(१) खिलाफ, (२) कावा, (३) गिर्जाघर, (४) दंग हो जाना, (५) देखभाल।

ये अच्छा हो नहीं सकता वो अच्छा हो नहीं सकता।
अबस[1] ऐ 'नूह' तू उस बेवफ़ा पर जान देता है,
जो दुनिया में सिवा अपने किसी का हो नहीं सकता।

× × ×

उस पे आशिक़ मैं हुआ शैदा वो मुझ पर हो गया,
हाल दोनों का मोहब्बत से बराबर हो गया।
दिल उदू को[2] देके नाहक़ इस क़दर अफ़सोस है,
अब तो जो होना था वो ऐ बन्दा परवर हो गया।
मुद्दतें गुज़रीं कि वसले यार से महरूम हूं,
हाय वो मिलना न मिलना सब बराबर हो गया।
ज़ुल्मे बेजा की न पुरसिश[3] उस सितमगर से हुई,
हश्र में आए हुए लो मुझको दिन भर हो गया।
तुन्दख़ू[4] कुछ वो भी थे हम भी थे कुछ नाज़ुक मिजाज,
मेल जोल उनसे नहीं मालूम क्यों कर हो गया।
मयकदे में ऐसे छींटे अबरे रहमत ने दिए,
और भी तर पर हमारा दामने तर हो गया।
हज़रते नासेह[5] तबीयत बार बार आती नहीं,
बस मुझे जिस पर फ़िदा होना था उस पर हो गया।
'नूह' तुम सा भी कोई नादाँ ज़माने में नहीं,
उसने जो कुछ कह दिया वो तुम को बावर[6] हो गया।

× × ×

वो किस तरफ़ नहीं जाता किधर नहीं आता,
मेरे ही पास कभी भूल कर नहीं आता।

---

(१) बेकार, (२) दुश्मन, (३) पूछताछ, (४) तेज़ मिजाज, (५) शिक्षक, (६) यक़ीन।

झलक दिखा के पसे[1] पर्दा छिप रहा कोई,
मेरी नज़र को वो जल्वा नज़र नही आता।
वो कह रहे है मेरे दिल को किस ग़ुरूर के साथ,
मुझी पर आता है ये और पर नहीं आता।
वो मेरे सामने आँखे झुकाए बैठे है,
वो पुतलियो का तमाशा नज़र नही आता।
तेरी सलाह है क्या इस मे ऐ दिले बेताब,
हमीं वहाँ न चले वो अगर नही आता।
ये सब कसूर हमारी निगाहे शौक का है,
वो दिल मे रहता है लेकिन नज़र नही आता।
वो कौल दे कि ज़बाँ दे मिले कि शाद करे,
मुझे यकीन किसी बात पर नही आता।
उठाए 'नूह' रकीबो का रश्क क्या मुमकिन,
वो काम कहते हो जो काम कर नही आता।

× × ×

हमे जो रोते तड़पते कोई नज़र आया,
हमारी आँख भी भर आई दिल भी भर आया।
बुतों से कतअ[2] तअल्लुक हो गैर मुमकिन है,
ये दिल तो है इधर आया कभी उधर आया।
कहाँ है इश्क, कहाँ है वफा ज़माने मे,
न ये कहीं नज़र आई न वो नज़र आया।
जो आ गया कोई शिकवा ज़बान पर ऐ 'नूह',
हमारे सर पे वो तलवार खीच कर आया।

× × ×

(१) ओट में, (२) छूट जाना।

वाद दो रोज़ के पछताइयेगा,
अपने जोवन पे न इतराइयेगा।
लीजिये लीजिये मेरे दिल को,
देखिए देखिए पछताइयेगा।
चुप रहे आप जनावे नासेह[१],
मैं समझता हूं जो समझाइयेगा।
'नूह'! मयखाने से मसजिद की तरफ़,
कभी .फ़ुरसत हो तो हो आइयेगा।

× × ×

हमने किसी से दिल को लगाया ग़ज़व किया,
जो काम उम्र भर न किया था वो अव किया।
छेड़ा न जव तक आप ने खामोश हम रहे,
इतना ज़रूर हमने किसी का अदव किया।
क्यों मुझसे तुम विगड़ते हो इतनी सी वात पर,
शिकवा तुम्हारा जव न किया था वो अव किया।
मिलते न तुम उदू से न लड़ते उदू से हम,
तुमने ग़ज़व किया कि ये हमने ग़ज़व किया।
माना कि हर तरह की तो .क़ुदरत .ख़ुदा मे है,
ज़ाहिद को क्यों न आशिके विनते[२] अनव किया।
ऐ 'नूह'! उन से वस्ल का शिकवा फ़िज़ूल है,
इक़रार कव किया था जो इनकार अव किया।

× × ×

क्या कहूं तुम से दिल मेरा क्या था,
अव वुरा है कभी ये अच्छा था।

---

(१) शिक्षक, (२) अंगूर की शराव।

किस तरह राह सूझती दिल को,
कूचए जुल्फ मे अंधेरा था।
आँख उनकी बदल गई मिल कर,
अभी क्या हो गया अभी क्या था।
दिल हमारा कभी जवानी मे,
शोला था वर्क[१] था शरारा[२] था।
लुत्फे दीदार यार क्या कहिए,
मेरी आँखें थीं हुस्न उसका था।
किस अदा से वो पूछते है मुझे,
आज कैसा है कल तो अच्छा था।
न मिटेगा लिखा मुकद्दर[३] का,
'नूह' मसजिद मे क्यों घिसे माथा।

× × ×

कहाँ जाऊँ कहाँ ठहरूँ ठिकाना अब कहाँ मेरा,
मुख़ालिफ है ज़मीं मेरी उदू है आस्मां मेरा।
बुला कर अपने घर आशिक़ का दिल वो लूट लेते हैं,
नही आता ख़याल उनको कि है ये मेहमाँ मेरा।
पता क्या पूछती है घर का तू ऐ ख़ाना[४] वीरानी,
जहाँ रुक जाऊँ फिरते फिरते मैं वो है मकां मेरा।
तेरे घर में, तेरे कूचे मे, तेरे आस्ताने[५] पर,
कभी उड़कर पहुंच जायेगा जिस्मे नातवां[६] मेरा।
वो पूछे मेरे दिल का हाल यह क़िस्मत कहां दिल की,
वो आए मेरे घर मे है नसीब ऐसा कहां मेरा।

---

(१) बिजली (२) अंगारा (३) तक़दीर (४) घर का बरबाद होना
(५) चौखट (६) कमज़ोर बदन।

ख़याल आता है ये भी कुछ मेरा भी है ख़याल उसको,
गुमां फिर यह भी होता है ग़लत है ये गुमां मेरा।
बदल कर भेस मैं शब को जो पहुंचा कूए जानां[1] मे,
उसे धोखा हुआ मुझ पर कि ये है पासबां[2] मेरा।
कभी पढ़ते नहीं ऐ 'नूह' मकता[3] मेरी गज़लों का,
तमाशा है कि वो यों अब मिटाते है निशां मेरा।

× × ×

हर एक इस तरीके मुहब्बत से रो गया,
कांटा निकाल कर कोई नश्तर चुभो गया।
कहते है वो झिझक के ये साये से राह मे,
तू कौन है कहां से मेरे साथ हो गया।
जो कोई आ गया तेरी बज़्मे निशात[4] मे,
वो कुछ न कुछ गिरह का ज़रूर अपनी खो गया।
लुत्फो करम वो करते है कहरो जफ़ा के साथ,
ऐसा भी हो गया कभी वैसा भी हो गया।
किस किस को रोए अब कोई किस किस का गम करे,
ले दे के एक दिल था फकत वो भी ले गया।
फिर तो कहो कि वादा[5] फरामोश हम नहीं,
जो कुछ कहा ज़बान से तुमने वो हो गया।
जब पूछता हूं गोशए दामन मे दिल नहीं,
कहते है किस अदा से कहीं गिर के खो गया।
वो सुन के मेरे नाम को हैरत मे आ गए,
पैदा कहां से दूसरा ये 'नूह' हो गया।

---

(१) प्रियतम की गली (२) चौकीदार (३) आखिरी पद (४) आनन्द की सभा (५) वादा भुलाने वाला।

छुप छुप के कहीं जाते हो अच्छा बहुत अच्छा,
तुम बाज़ नहीं आते हो अच्छा बहुत अच्छा।
तुम जाते हो घर से मेरे क्या कम ये सितम है,
फिर ग़ैर के घर जाते हो अच्छा बहुत अच्छा।
मैं हश्र में अल्लाह से फ़रियाद करूँगा,
हर दम मुझे तड़पाते हो अच्छा बहुत अच्छा।
इक़रार तो कर जाते हो आयेंगे तेरे घर,
फिर जा के मुकर जाते हो अच्छा बहुत अच्छा।
कहते हैं जिसे 'नूह' वो आशिक़ है तुम्हारा,
तुम भी उसे तड़पाते हो अच्छा बहुत अच्छा।

× × ×

कभी न चैन से दम भर तहे[1] मज़ार रहा,
जो बेक़रार हुआ मैं तो बेक़रार रहा।
मेरी बग़ल में मेरे दिल में मेरे पहलू में,
कुछ एक बार नहीं वो हज़ार बार रहा।
पिलाई मय जो कभी उसने अपने हाथों से,
तो उस शराब का बरसों मुझे ख़ुमार रहा।
तुम्हे भी इसकी ख़बर कुछ है तुम भी जानते हो,
तमाम शब कोई कम्बख़्त बेक़रार रहा।
बशर हूँ कोई फ़रिश्ता तो मैं नहीं यारब,
गुनाहगार रहूँगा गुनाहगार रहा।
वो राह पर कोई लहजे में आए जाते हैं,
तमाम शब यही ऐ 'नूह' इन्तज़ार रहा।

× × ×

(१) क़ब्र के नीचे।

बीमार इसे किया उसे दीवाना कर दिया,
लेकिन किसी को आपने अच्छा न कर दिया।
मजमा न दैर मे है न काबे मे वो हुजूर,
दोनों घरों को आपने वीराना कर दिया।
दोहरा असर है एक तुम्हारी निगाह मे,
सूफी[1] को मस्त शेख को दीवाना कर दिया।
अहबाब[2] से कहा कभी अगयार[3] से कहा,
हमदम[4] ने मेरे राज़ को अफ़साना[5] कर दिया।
अब खाक उड़ रही है दिले बेकरार मे,
तुमने .खुदा के घर को भी वीराना कर दिया।
ऐ 'नूह' दिल से याद हसीनों की दूर कर,
कम्बख़्त तूने काबे को बुतख़ाना कर दिया।

× × ×

मातमे पीरो जवां ही रह गया,
अब जमीं पर आस्मां ही रह गया।
गिर गया बाजार मे हर शै का भाव,
हुस्न का सौदा गिरां ही रह गया।
बज़्म से वो उठ गए सब अहले बज़्म,
याद करने को समां ही रह गया।
क्या फलक तेरे सताने के लिए,
एक 'नूह' ख़स्ता[6] जां ही रह गया।

× × ×

कभी नाले जो हम करते तहो बाला जहां होता,
फ़लक पर ये ज़मीं होती ज़मीं पर आस्मां होता।

---

(१) ज्ञानी (२) दोस्त (३) गैर (४) साथी (५) क़िस्सा (६) दुखी।

सताता है फलक इतना जो हमको अपनी पीरी मे,
.खुदा जाने ये क्या करता अगर जालिम जवां होता।
इलाही कोई तेरी बात हिकमत से नही खाली,
जो दिल होता न पहलू मे तो दर्द आखिर कहॉ होता।
मेरी तकसीर[१] है मेरी खता है मेरी ग़फलत है,
न दिल देता न इतना .जुल्म मुझ पर नागहां[२] होता।
भले को उठ रहा झगड़ा न मेरा रोजे महशर पर,
जिधर ऐ 'नूह' वो होते उधर सारा जहां होता।

× × ×

क्या कहूं जल्वागहे नाज मे क्या क्या देखा,
जो दिखाया मुझे उसने वो तमाशा देखा।
रंज, ग़म, दर्द, कलक इश्क मे क्या क्या देखे,
क्यो मुहब्बत का मजा ऐ दिले शैदा देखा।
जब तड़पने पे ये आया तो ठहरना कैसा,
खूब हमने दिले बेताब को समझा देखा।
ग़ैर को दावए उल्फत है बड़े नाज के साथ,
ये तो फरमाइए कुछ आपने जांचा देखा।
वो तड़पने को मेरे देख के फरमाते है,
जो न देखा था कभी हमने तमाशा देखा।
फिर वही मैकदा ऐ 'नूह' वही बादाकशी[३],
जाइए जाइए बस आपका तकवा[४] देखा।

× × ×

(१) .कुसूर, (२) एकाएक, (३) शराब पीना (४) पंडिताई।

कभी काबू मे चर्खे फितनागर आया न आएगा,
ये कजरफ्तार[1] मेरी राह पर आया न आएगा।
ये बाते है ये फिकरे हैं ये चालें हैं ये घाते है,
दिले नादां कभी वो मेरे घर आया न आएगा।
हम अपनी आहो जारी पर शबे हिज्र आप कहते हैं,
कभी इस मे कभी उस मे असर आया न आएगा।
ये माना 'नूह' को तूफान से एक खास निस्बत है,
तेरे कूचे में वह बाचश्मेतर आया न आएगा।

× × ×

आया न फिर के वो कभी जो वक्त कट गया,
हसरत मेरी हयात[2] पे मैं बढ़ के घट गया।
मैं उम्र भर के रंजो अलम से निवट गया,
सर क्या जुदा हुआ कि बड़ा पाप कट गया।
उसने जो सर जुदा न किया तेगे नाज से,
मैं अपने दिल मे खंजरे गैरत से कट गया।
इसकी खुशी नहीं कि मेरी जान बच गई,
गम इसका है कि तीर तुम्हारा उचट गया।
बर आएगी उम्मीद मेरी इस उम्मीद पर,
मैं पेश्तर से महफिले ज्सनां मे डट गया।
दो टुकड़े इस ने ले लिये चार उस ने ले लिए,
एक दिल मेरा हजार हसीनों मे बट गया।
बज्मे जहां मे शमअ जला की तमाम रात,
परवाना जल कर एक घड़ी मे निबट गया।
ऐ 'नूह' इश्क मे हो कभी क्या मजाल है,
ये जोश वो नहीं जो बढ़ा और बट गया।

---

(१) टेढी चाल चलने वाला, (२) ज़िन्दगी।

वो कह रहे है होश मे आया न जायगा,
बस अब मुझे जमाल दिखाया न जायगा।
मशहर मे भी नही हमे दीदार की उम्मीद,
उनसे तो सबके सामने आया न जायगा।
ऐसा है दर्दनाक मेरा किस्सए फिराक;
वो भी सुने तो मुझसे सुनाया न जायगा।
हम और तेरे ज़ुल्मों सितम सब उठायेंगे,
इक रश्के गैर हमसे उठाया न जायगा।
मूसा तो कोहे तूर[1] पे गिर कर सँभल गए,
ए 'नूह' तुमसे आप मे आया न जायगा।

× × ×

क्या खबर वादा[2] कशी का है करीना कैसा,
हाथ से भी नही हम छूते है पीना कैसा।
ख़ुद कुशी करने पर आमादा[3] शबे हिज्र है हम,
लुत्फ जीने का न हासिल हो तो जीना कैसा।
मुझ को ये फिक्र कि दिल मुफ्त गया हाथो से,
उन को ये नाज़ कि हम ने इसे छीना कैसा।
मै वो बदमस्त हूं ये भी जिसे मालूम नही,
जाम कैसा है सुबू[4] कैसा है मीना कैसा।
वादा एक माह[5] का था आए हो दो माह के बाद,
साठ दिन का ये मेरी जान महीना कैसा।
जिस को हर शै मे नज़र आए न सूरत तेरी,

---

(१) तूर पहाड़ का नाम है जहा हज़रत मूसा ईश्वर का दर्शन करने के लिए गए थे, (२) शराब पीना, (३) विरह की रात, (४) घड़ा, (५) महीना।

निगहे शौक़ वो क्या दीदए[1] बीना कैसा।
तुम्हीं सोचो तुम्हीं समझो तुम्हीं इन्साफ़ करो,
ये तरीक़ा ये सलीक़ा ये क़रीना कैसा।
देख कर वो मेरे दीवान को यों कहने लगे,
'नूह' साहब ये है क़ागज़ का सफ़ीना[2] कैसा।

× × ×

मैं वो लज़्ज़त कशे[3] आज़ारे[4] हसीनां निकला,
दम जो निकला तो ये जाना कोई अरमां निकला।
जज़्बे उल्फ़त में क़यामत का असर है यारब,
टुकड़े हो हो के मेरे दिल से वो पैकां[5] निकला।
वो निका ले मेरे दिल से ये कहे जाऊँ मैं,
नहीं निकला नहीं निकला नहीं अरमां निकला।
रश्के अग़यार ग़मे हिज्र ख़याले माशूक़,
जिसको देखा वो मेरी जान का ख़्वाहां[6] निकला।
'नूह' महफ़िल से रक़ीबों को निकाला उसने,
अब तो हसरत तेरी निकली तेरा अरमां निकला।

× × ×

कोई साथी न हुवा आज तक आज़ारों का,
क्या कलेजा है तुम्हारे जिगर अफ़गारों[7] का।
आतशे ग़म से बुरा हाल है बीमारों का,
हो कलेजा कभी ठंडा न दिल आज़ारों का।
कोई कुछ इनको कहे सुन के ये पी जाते हैं,
वाह क्या ज़र्फ़ है साक़ी तेरे मयख़्वारों[8] का।

(१) देखने वाली आँखें, (२) नाव, (३) मज़ा लेने वाला, (४) दुःख, (५) गांसी, (६) ग्राहक, (७) ज़ख्मियों, (८) शराब पीने वाले।

अब लिया जायगा महशर मे फरिश्तो से जवाब,
खो गया नामए[1] आमाल गुनहगारो का।
नाज हो या हो अदा गमजा[2] हो या हो शोखी,
जिसको देखो यही कुश्ता है इन्हीं चारों का।
कहते है अब्र करम[3] सब जिसे ऐ दावरे हश्र,
वो कहां दामने तर हो न गुनहगारों का।
हम तो नाशाद उठे खल्क[4] से नाकाम चले,
बोल बाला रहे दुनिया मे सितमगारों[5] का।
सोज[6] .फुरकत से कहां जल न गया हो वो भी,
कि जहां दिल था वहीं ढेर है अंगारों का।
'नूह' ने देख लिया .खूब तुझे जांच लिया,
सब तेरे यार है तू यार नही यारों का।

× × ×

कभी राजी कभी तू मुझसे खफा है ये क्या,
इस तरफ कुछ है उधर कुछ है वो क्या है ये क्या।
सख्त हैरत है वो मुझको नजर आया न कहीं,
और हर एक जगह जल्वानुमा[7] है ये क्या।
चुटकियाँ लेके वो मुँह फेर लिया करते है,
दिल मे शोख़ी है निगाहों मे हया है ये क्या।
कुछ मेरे .जेह्न मे आते नही असरार[8] उसके,
दिल से नजदीक है नजरों से जुदा है ये क्या।
आप ही ग़ौर करे आप ही इन्साफ करे,
ग़ैर पर लुत्फ मेरे दिल पे जफा है ये क्या।

---

(१) भले बुरे कर्मो का लेखा (२) भाव, (३) कृपा, (४) संसार,
(५) ज़ालिम (६) विरह की आग, (७) प्रगट, (८) भेद।

भूले बिसरे की मुलाकात मुलाकात नहीं,
आप मिलते रहे मुझसे तो मज़ा है ये क्या।
पेच क़िस्मत का निकाले से निकलता ही नहीं,
या इलाही[1] गिरहे ज़ुल्फे दुता है ये क्या।
मुझसे मिलिए तो न फिर मेरे उदू से मिलिए,
कभी उत्तर कभी दक्खिन की हवा है ये क्या।
कोसते थे मुझे तुम पहले वो दिन याद भी है,
हर घड़ी अब मेरे जीने की दुआ है ये क्या।
'नूह' जिस शोख़[2] तरहदार पे मरते थे कभी,
अब वही, 'नूह' पे सौ जी से फ़िदा है ये क्या।

× × ×

इलाही हाले दिले बेकरार क्या होगा,
ये इब्तदा[3] है तो अंजामेकार[4] क्या होगा।
इधर है बादए[5] गुलगूं उधर है मौसमे गुल,
कोई ज़माने में परहेज़गार क्या होगा।
निगाहे शर्म में शोख़ी भी चाहिए कुछ कुछ,
ये तीर मेरे कलेजे के पार क्या होगा।
बहुत से ऐब ख़ुद अपने फलक ने खोल दिए,
किसी ग़रीब का ये परदादार क्या होगा।
कोई निगाह का कुश्ता कोई अदा का शहीद,
तुम्हें भी हश्र के रोज़ इन्तशार[6] क्या होगा।
नहीं है 'नूह' जो काबू ख़ुद अपनी आँखों पर,
पराए दिल पे मेरा अख़्तियार क्या होगा।

(१) ईश्वर, (२) चंचल प्रियतम, (३) आदि, (४) नतीजा, (५) रंगीन शराब, (६) चिन्ता।

पहले इधर उधर तुम कुछ देख भाल लेना,
फिर मुझ को कत्ल करना फिर दम निकाल लेना।
अब क्यो मेरे उदू को दिल से निकालते हो,
किस ने कहा था तुम से ये रोग पाल लेना।
जल्वा किसी हसीं का मूसा से कह रहा है,
आसान जानते हो तुम देख भाल लेना।
दम हो मेरा कि हसरत मुश्किल उन्हे नही है,
इस का निकाल देना उस का निकाल लेना।
जाता हूँ इस तरह मै उस घर मे डरते डरते,
दो चार गाम[1] चलना फिर देख भाल लेना।
तुम मेरे घर मे आओ तुम मेरे दिल मे आओ,
आँखे उठा के देखूँ आँखे निकाल लेना।
ए 'नूह' फिर न मौका ऐसा तुम्हे मिलेगा,
जो हसरतें हों दिल मे उनको निकाल लेना।

× × ×

क्या वस्ल का इकरार वफा हो नही सकता,
तुम चाहो तो हो सकता है क्या हो नहीं सकता।
यो जुल्म तो करते हैं मगर ये भी समझ ले,
खोए पे कोई जी से फिदा हो नही सकता।
सुनता हूँ कि दिल आपने पत्थर का बनाया,
अब कुछ असरे आहे रसा हो नहीं सकता।
ये बात बता दीजिए आशिक को अभी से,
क्या आप से हो सकता है क्या हो नहीं सकता।
पहलू से दिले जार जुदा हो तो जुदा हो,
वो तीर मेरे दिल से जुदा हो नही सकता।

---

(१) पग।

माना कि नही है कोई अब तेरे बराबर,
बन्दा कोई बन्दे से ख़ुदा हो नही सकता।
क्यों फ़िक्र तुम्हे है दमे इक़रार मुहब्बत,
हो सकता हैं कर सकते हो क्या हो नहीं सकता।

छुटना तो है आसान मेरा कुंजे[1] कफ़स से,
मै दामे मुहब्बत से रिहा हो नहीं सकता।
बैठा है कोई जोर से पहलू को दबा कर,
अब दर्द मेरे दिल में सिवा हो नही सकता।

वो मेरे घर आ सकते है या आ नहीं सकते,
ऐसा कभी हो सकता है या हो नहीं सकता।
यों होने को हो सकता है इन्सान से सब कुछ,
हाँ सब्र मोहब्बत मे ज़रा हो नहीं सकता।

चुप रहिए ख़ुदा के लिए ऐ हज़रते नासेह[2],
मैं आप के कहने से बुरा हो नही सकता।
तू दिल है तो हर दम मेरे पहलू मे रहेगा,
तू जान है तो दिल से जुदा हो नहीं सकता।
ऐ 'नूह' कोई काम मेरे दीदएतर[3] से,
तूफ़ान उठाने के सिवा हो नहीं सकता।

× × ×

जाकर कोई जो गैर की महफ़िल मे रह गया,
सब हौसला वो दिल का मेरे दिल में रह गया।
पहले वो दागे इश्क़ मेरे दिल मे रह गया,
निकला जो दिल से तो महे कामिल मे रह गया।

(१) पिंजड़ा (२) शिक्षक (३) भीगी आँखें (४) पूर्णिमा का चाँद।

ये सरगुज़श्त[1] है मेरे दर्दे फिराक की,
दिल मे पला वो दिल मे बढ़ा दिल मे रह गया।
इस के सिवा न और कोई बात बन पड़ी,
मै दिल को थाम कर तेरी महफ़िल मे रह गया।

निकला न आज तक कभी अर्मा विसाल का,
पहलू बदल बदल के मेरे दिल मे रह गया।
जिस नावके निगाह का रुकना मोहाल था,
वो भी अटक के सीनए बिस्मिल मे रह गया।

यों तो हजारों आए हज़ारों निकल गए,
अरमान हैं वही जो मेरे दिल मे रह गया।

आता था मुझ को हर दरो दीवार पर भी रश्क,
मैं चौक चौंक कर तेरी महफ़िल मे रह गया।

ऐ दिल मोकामे इश्क़ बहुत दूर है अभी,
कम्बख्त थक के पहली ही मंज़िल मे रह गया।

रस्ता मिला न उस को निकलने के वास्ते,
फिर फिर के तीर सीनए बिस्मिल मे रह गया।

निकला कभी न दिल से मेरे दाग़े आरज़ू,
ये चॉद डूब कर इसी मंज़िल मे रह गया।
ऐ हमनशीं[2] न हालते सोज़[3] दुरू को पूछ,
दिल का बुख़ार घुट के मेरे दिल मे रह गया।
लोगों को मेरी याद दिलाने के वास्ते,
मिट्टी का ढ़ेर कूचए क़ातिल मे रह गया।
गो 'दाग़' देहलवी न ज़माने मे रह गया,
ऐ 'नूह' दाग़ उनका मगर दिल मे रह गया।

---

(१) हाल (२) साथी (३) दिल की आग।

उन की ख़िदमत में रहा करता है दिन भर आफ़ताब,
मिस्ले ख़ादिम मिस्ले नौकर, मिस्ले चाकर आफ़ताब।

व रुख़े पुर नूर उसका और वो ज़ुल्फ़े[1] सियाह,
मुझको हैरत है कि निकला शब को क्योंकर आफ़ताब।

तू हसीं वो है कि तेरे मुँह धुलाने के लिए,
आफ़ताबा[2] सुबह को आता है ले कर आफ़ताब।

रहते हैं मेरी तरह ये भी तलाशे यार में,
रात भर महताब फिरता है तो दिन भर आफ़ताब।

दिन चढ़े उट्ठा है कोई आज ख्वाबे नाज़ से,
इस ख़ुशी में क्यों न हो जामे के बाहर आफ़ताब।

रुए रौशन से नक़ाब उल्टी जब उस ने शाम को,
फिर नए सर से निकल आया मुकर्रर[3] आफ़ताब।

सामने आओ तो देखूँ कौन है किस से सिवा,
उससे बढ़ कर तुम हो या तुम से है बढ़कर आफ़ताब।

सुबह को जल्वा नज़र आया रुख़े[4] महबूब का,
एक ही सायत में दो निकले बराबर आफ़ताब।

रात दिन रहता है यकसाँ[5] हाल हुस्ने यार का,
हमसरी[6] उस से करेगा ख़ाक पत्थर आफ़ताब।

ख़ूबरूयों[7] के सँवरने का है ये एक वक्त ख़ास,
सुबह को आता है रोज आईना बनकर आफ़ताब।

मैं हूँ वो मयख़्वार[8] ए साक़ी कि मेरे सामने,
हर सहर[9] होता है हाज़िर बन के साग़र[10] आफ़ताब।

---

(१) काले केश (२) लौटा (३) दोबारा (४) प्रियतम का चेहरा (५) एक तरह (६) बराबरी (७) सुन्दरियों (८) शराब पीने वाला (९) सवेरा (१०) प्याला।

'नूह' क्योंकर ये रदीफो काफ़िया रौशन न हो,
जा-ब-जा परतो[1] फ़िगन है जब मुक़र्रर आफ़ताब।

× × ×

जितने माशूक़ हैं दुनिया में वो जल्लाद हैं सब,
ये सितमगार[2] सितमगर सितम इजाद है सब।
शिकवए .ज़ुल्मो जफ़ा हश्र मे हम क्यों न करे,
आप को भूल गए है वो हमें याद है सब।
दिल से उल्फ़त है तेरी सर मे है सौदा तेरा,
तू नही अपने घरों मे मगर आबाद है सब।
जिस की .ख़ू[3] अच्छी हो अच्छों को वही अच्छा है,
यों तो माशूक़ ज़माने मे परीज़ाद है सब।
नहीं भूले, नही भूले, नही भूले, अब तक,
उन के वो ज़ुल्मों सितम 'नूह' हमें याद है सब।

× × ×

आरज़ू ये है कि वह पूछें कभी है क्या मिलाप,
और मैं मिल कर बताऊं नाम है इस का मिलाप।
चार दिन क़ायम नहीं रहता कभी उन का मिलाप,
इस तरफ़ होगी लड़ाई उस तरफ़ होगा, मिलाप।
क्या लगावट क्या इनायत क्या महब्बत क्या मिलाप,
दिल नही मिलता तो आपस मे नही होता मिलाप।
कम नही .ज़ुल्मों जफ़ा से उस सितमगर का मिलाप,
क्या ख़बर थी ख़ाक मे मुझ को मिला देगा मिलाप।
वो अभी दम भर मे नाख़ुश वो अभी दम भर मे .ख़ुश,
हमने देखा ही नही ऐसा निफ़ाक़ ऐसा मिलाप।

---

(१) साया डालने वाला, (२) ज़ालिम, (३) आदत।

अब न बाक़ी रह गया उनसे मेरा कुछ वास्ता,
क्या लड़ाई क्या सफ़ाई क्या जुदाई क्या मिलाप।
मुंह दिखाने के लिए वो मेहवा हों भी तो क्या,
जब न दिल से दिल मिले किस काम का ऐसा मिलाप।
मिट चुके झगड़ा कहीं अपनी उम्मीदो बीम[1] का,
या निफ़ाक़ आपस मे हो जाए इलाही या मिलाप।
खिंच गए तो खिंच गए वो मिल गए तो मिल गए,
वाह ये अच्छी है रंजिश वाह ये अच्छा मिलाप।
तुम को रंजिश मुझ से है तुम को अदावत मुझ से है,
ये दिखाने की है बातें ये दिखाने का मिलाप।
वो शिकायत पर मेरी झुंझला के ये कहने लगे,
पहले होता भी मगर जिद् से न अब होगा मिलाप।
अब ये दुनिया मे निफ़ाके बाहमी का ज़ोर है,
एक से एक पूछता है नाम है किस का मिलाप।
हम यहां ऐ दावरे[2] महशर ये सुन कर आए थे,
हश्र[3] मे बिछड़े हुवों का तूम से होगा मिलाप।
'नूह' पढ़ कर तुम ने क्या उस शोख़ पर दम[4] कर दिया,
चार दिन मे हो गया ऐसा मिलाप इतना मिलाप।

× × ×

जज़्बे दिल से मेरे खिंच आएंगे आप,
आप ही आप आ के मिल जाएंगे आप।
रोज़ आने ही को फ़रमाएंगे आप,
या मेरे घर भी कभी आएंगे आप।
उठ गए लो अब मेरे दस्ते दुआ,

(१) खौफ़, (२) ईश्वर (३) प्रलय (४) फूंक दिया।

हाथ बांधे वह चले आएंगे आप।
वक्ते रुखसत पूछता हूं उन से मैं,
आएंगे या मुझको बुलवाएंगे आप।
लूटने वालों ने लूटा मालो जर,
होश में ऐ 'नूह' कब आएंगे आप।

× × ×

ये कजरवी[1] बुरी है ये है बांकपन खराब,
अच्छे हो तुम मगर है तुम्हारा चलन खराब।
उसका न दैर[2] मे है न काबे मे है पता,
जाहिद इधर खराब उधर बरहमन खराब।
तुझ से खिचेंगे सब तुझे मगरूर जान कर,
तुझ को कभी करेगा तेरा बांकपन खराब।
रुक रुक के किस गरूर से चलता है हल्क पर,
खंजर का भी तुम्हारी तरह है चलन खराब।
फिरते हैं दरबदर कोई अब पूछता नही,
ऐ 'नूह' इस जमाने मे है अहलेफन[3] खराब।

× × ×

वो रब्त नहीं रस्म नहीं, बात नही अब,
ये उनकी मुलाक़ात मुलाकात नही अब।
यो होने को क्या रस्मे मुलाकात नही अब,
जो बात कभी तुझमे थी वो बात नही अब।
क्यो देखकर उस शोख को चुप होगए नासेह,
ये बात न वो बात कोई बात नही अब।
बचपन मे न मिलते थे जवानी मे तो मिलिए,

(१) टेढ़ी चाल, (२) मन्दिर, (३) गुणी।

कुछ आप के नज़दीक बड़ी बात नहीं अब।
किस तरह दुआ के लिए मैं हाथ उठाऊँ,
इतनी भी तो ताक़त मुझे हैहात[1] नहीं अब।
हम कहते हैं ठहरो तो अभी रात पड़ी है,
वो कहते हैं जाने दो हमें रात नहीं अब।
आखे जो लड़ी हैं कभी मिल जायगा दिल भी,
यह बात कोई ऐसी बड़ी बात नहीं है अब।
समझा दे मुझे कोई महब्बत के तरीके,
ये बात है अब इश्क में ये बात नहीं अब।
वो कतअ तअल्लुक़[2] में खफ़ा हो गये मुझ से,
बस बात है इतनी कि कोई बात नहीं अब।
सुनता हूं कि रहते हैं उदू उनकी गली में,
क्यों कर मिलूँ मिलने की कोई बात नहीं अब।
यह झूठ कि अब 'नूह' ने की बादाकशी[3] तर्क[4],
ये सच है कि वो रिन्द[5] ज़राबात नहीं अब।

× × ×

हर रोज नया रंज नया देते हैं गम आप,
क्या भूल गए शेवए[6] अल्ताफ़ो[7] करम आप।
वो क्या हुए जो पहले थे इकरारे महब्बत,
दिल लेके ये क्यों देने लगे अब मुझे दम आप।
लैला है न मजनूं है न शीरीं है न फ़रहाद,
अब रह गए हैं आशिक़ो माशूक़ में हम आप।
ख़त पर मेरे लिक्खा है पता मेरे उदू का,

---

(१) अफ़सोस, (२) जुदा हो जाना, (३) शराब पीना. (४) छोड़ देना, (५) शराबी, (६) तरीक़ा, (८) कृपा।

मैं जान गया भूल गए तर्ज़े रकम[1] आप।
मिलने से न अब चाहिए दोनों को तअम्मुल[2],
दो चार कदम हम बढ़ें दो चार कदम आप।
फर्माइए कुछ याद है या भूल गए सब,
वो अहद वह इक़रार वो पैमाँ[3] वो क़सम आप।
अपने को लिए रहते हैं गो चाहने वाले,
क्या कीजिए खुल जाता है उल्फ़त में भरम आप।
क्या ग़ैर के घर जाने का है दिल में इरादा,
जाते हैं मिटाते हुए क्यों नक्शे[4] कदम आप।
ऐ 'नूह' तअज्जुब है वो मुझसे नहीं मिलते,
सायल[5] से मिला करते हैं अरबाबे[6] करम आप।

× × ×

वो रस्मो राहे दोस्त वो लुत्फ़ो वफ़ाए दोस्त,
दुश्मन को देखता हूँ तो कहता हूँ हाए दोस्त।
लुत्फ़ो वफ़ा से कम नहीं ज़ुल्मो जफ़ाए दोस्त,
ये भी अदाए दोस्त है वो भी अदाए दोस्त।
दिल में गया है वो मेरी आंखों की राह से,
ये पुतलियाँ नहीं हैं ये हैं नक्शे[7] पाए दोस्त।
कुछ इन्तिहा रही न मेरी एहतियात की,
कहता नहीं हूँ दोस्त से भी माजराए दोस्त।
मैं रंज से भी शाद हूँ मैं ग़म से भी हूँ खुश,
मेरी रज़ा वही है जो कुछ है रज़ाए दोस्त।
दोनों में किस को देखिए करता है वो पसन्द,

---

(१) लिखने का ढङ्ग, (२) देर (३) वचन, (४) पाँव के निशान, (५) सवाल करने वाला, (६) दानी, (७) पाँव के निशान।

दिल भी निसारे[1] दोस्त है सर भी फ़िदाए दोस्त।
ये बात भी तो उसके तग़ाफ़ुल[2] से दूर है,
मेरे जिहे नसीब जो मुझको सताए दोस्त।
किस किस से रंज कीजिए किस किस से दुश्मनी,
हम जिस को देखते है वही है फ़िदाए दोस्त।
ऐ 'नूह' पे ग़जल न मुझे क्यों पसन्द हो,
इसमें कुछ और चीज़ नहीं मावराए[3] दोस्त।

× × ×

अब नहीं वस्ल मे भी कोई बसर की सूरत,
शाम ही से नज़र आती है सहर[4] की सूरत।
दिल भी बेताब है पहलू मे जिगर की सूरत,
जो इधर की है वही अब है उधर की सूरत।
दीदओ दिल मे वो हर वक़्त रहा करते हैं,
नज़र आते नहीं इस पर भी नज़र की सूरत।
खाक उड़ाते हुए सहरा[5] में ज़माना गुज़रा,
अब मुझे याद भी आती नहीं घर की सूरत।
चाँद मैंने जो शबे[6] हिज्र कभी देख लिया,
आ गई याद किसी रश्के[7] क़मर की सूरत।
'नूह' आराम वतन का नहीं मिलता बाहर,
एक होती है सफ़र और सक़र[8] की सूरत।

× × ×

कहीं छुपती है लगावट की नज़र प्यार की बात,
और फिर बात किसी शोख़ दिलाज़ार की बात।

---

(१) निछावर, (२) गुफ़लत, (३) सिवाय, (४) सवेरा, (५) जंगल, (६) विरह की रात, (७) चाँद की सूरत (८) बीमारी।

मैं हुआ क़त्ल तो इसका मुझे अफ़सोस नहीं,
मेरे अल्लाह ने रख ली मेरे सरकार की बात।
कभी सुनते ही नहीं हम कभी कहते ही नहीं,
रंज की दर्द की तकलीफ़ की आजार[1] की बात।
मुँह से जो आप वो फ़रमाएँ जनावे वाएज़[2],
गोश[3] दिल से कोई सुनता भी है सरकार की बात।
न कुछ इस का है ठिकाना न कुछ उसका है वजूद,
जैसी उनक़ा की वह वैसी है मैख्वार की बात।
जो कोई सुनता है वो सुनके तड़प जाता है,
तेग से कम नहीं तेगे निगहे यार की बात।
आपकी सख्त कलामी की उसे ताब नहीं,
'नूह' प्यार से किया कीजिए बस प्यार की बात।

× × ×

तेगे अबरू से वो करते हैं इशारा झटपट,
जो कोई सामने पहुँचा उसे मारा झटपट।
पहली बार आप ने मिलने से तो की देर बहुत,
अब खुदा के लिए मिलिएगा दुबारा झटपट।
अर्सए हश्र[4] से आते हुए देखा जो उन्हें,
एक ने एक को घबरा के पुकारा झटपट।
अपनी महफ़िल से जो आते कभी देखा हमको,
चल दिया उठके कोई अंजुमन आरा झटपट।
उनको आए हुए महशर में बड़ी देर हुई,
दावरे हश्र हो इन्साफ़ हमारा झटपट।

(१) दुःख, (२) कान लगाकर, (३) नसीहत करनेवाला, (४) प्रलय का मैदान।

ज़ुल्फ़ तो आप ने क्या जल्द सँवारी अपनी,
काम बिगड़ा हुवा मेरा न सँवारा झटपट।
सुन लिया जिस को ये है चाहने वाला मेरा,
चुन के कातिल ने उसे जान से मारा झटपट।
शमअ[1] से मिल के पतिंगों की हुई क्या हालत,
फूंक देता है महब्बत का शरारा[2] झटपट।
कोई नाजाँ न कभी कौकबे[3] अकबाल से हो,
डूब जाता है निकल कर यह सितारा झटपट।
दिल मेरा ख़ूगरे[4] ग़म होगा तो रफ़ता रफ़ता,
ये किसी को कहीं होता है गवारा झटपट।
देखते हैं कहीं मजमा जो परीज़ादों का,
हजरते 'नूह' को याद आता है नारा[5] झटपट।

× × ×

क्यों देखते हैं आप हमारे जिगर की चोट,
पड़ती है और चोट पे तीरे नज़र की चोट।
जिसके चुभी हो कोई न उंगली में फांस भी,
क्या जाने वो कि होती है कैसी जिगर की चोट।
आंखें लड़ाके दिल पे वो बिजली गिरा गया,
मेरी नज़र न रोक सकी उस नज़र की चोट।
तुम और मेरे दर्द का दर्मां बजा दुरुस्त,
देखी भी तो न जायगी तुमसे जिगर की चोट।
वो देखने को आए हैं क्या क्या दिखाऊँ मैं,

(१) दीपक, (२) अँगारा, (३) सितारा, (४) आदी, (५) यह हज़रत 'नूह' नारवी के गाँव का नाम है जहाँ आप रहते हैं सिराथू स्टेशन से नौ मील दक्खिन है और जिला इलाहाबाद में है।

दिल की जिगर की सीने की पहलू की सर की चोट।
दुनिया खिलाफ़ बख्त[1] खिलाफ़ आस्माँ खिलाफ़,
किसको दिखाऊं 'नूह' हम अपने जिगर की चोट।

× × ×

क्या वस्ल के एकरार पे मुझको हो .खुशी आज,
उसकी भी ये सूरत है कभी कल है कभी आज।
ताने मिले आजार हुए रंज उठाए,
होने को कोई बात वहां उठ न रही आज।
वो हाथ मे तलवार लिये सर पे खड़े है,
मरने नही देती मुझे मरने की .खुशी आज।
अरमान निकालो मेरी आगोश[2] मे आ कर,
दो चार घड़ी कल रहो दो चार घड़ी आज।
सुनता हू कि आता है कोई बहरे अयादत[3],
यारब हो मेरे दर्दे जिगर मे न कमी आज।
क्या पूछते हो हाल शबे हिज्र हमारा,
मरने का न है रंज न जीने की .खुशी आज।
ऐ अश्क[4] मिटेगी भी तो बरसो मे मिटेगी,
बुझती है बुझाने से कही दिल की लगी आज।
मिलना जो न हो तुम को तो कह दो न मिलेगे,
ये क्या कभी परसो है कभी कल है कभी आज।
क्या बात है छिपती ही नही बात हमारी,
जो उनसे कही थी वो रकीबों से सुनी आज।
मै सामने उन के हूं वो है सामने मेरे,
मुझ को है कयामत मे क़यामत की .खुशी आज।

---

(१) नसीब, (२) गोद, (३) देखने के लिये, (४) आँसू।

सुर्खी भी है आंखों मे कदम को भी है लगजिश[1]
छुप कर कहीं ऐ 'नूह' जरूर आप ने पी आज।

× × ×

लगा रहे हैं जो फन्दे इधर उधर सैय्याद,
चमन मे आज न छोड़ेंगे एक पर सैय्याद।
जिगर जईफ़ है दिल भी है नातवां मेरा,
सितम करे तो जरा देखभाल कर सैय्याद।
हमे वो बेखबरी है कि यह खबर ही नहीं,
किधर चमन है किधर आशियां किधर सैय्याद।
जो मैं यहाँ न रहूँ कुछ तो यादगार रहे,
परों को फेंक दे गुलशन[3] मे नोच कर सैय्याद।
नजर बचा के अभी हम निकल नहीं सकते,
कफ़स है बीच मे अपना इधर उधर सैय्याद।
चमन मे रहने का ऐ 'नूह' लुत्फ़ अब न रहा,
हमारी जान का ख्वाहां[5] हुवा है हर सैय्याद।

× × ×

कोई तो मेहरबां हो हमारी भी जान पर,
क्या और आसमान नहीं आसमान पर।
आएगा भूल कर न हमारे मकान पर,
जो उसके दिल में है वो है अपनी ज़ुबान पर।
इस वास्ते कि घर न मेरा जान ले कोई,
मिलते नहीं किसी से वह अपने मकान पर।
साकी कहीं न जह्र मिला हो शराब में,
पहले मज़ा तो देख ले रख कर जबान पर।

(१) डगमगाना, (२) बहेलिया, (३) बाग़, (४) पिंजड़ा, (५) ग्राहक।

क्या आएगी वो कूचए जानां[1] के सामने,
जन्नत छुपी है जाके छटे आसमान पर।
मुझ को मिले जफ़ाए[2] फ़लक से नजात क्या,
सातों झुके हुए हैं मेरी एक जान पर।
हूरों से क्या है हज़रते ज़ाहिद को वास्ता,
यह है ज़मीन पर तो वो है आसमान पर।
ऐ 'नूह' क्या अजब किसी मयकश[3] का उर्स[4] हो,
मेला लगा है पीरे[5] मुग़ां की दूकान पर।

× × ×

हर वक्त बदलता है वो अन्दाजे नज़र और,
अब लाए कहां से कोई दिल और जिगर और।
वादा किये जाते हैं वो आने का सरे शाम,
ऐ मेरे दिलेज़ार तड़प चार पहर और।
पहलू में जो बेताब[6] तो मुट्ठी में तेरी ख़ुश,
हालत है मेरे दिल की इधर और उधर और।
उल्फ़त की निगाहे नहीं छुपती नहीं छुपतीं,
होती है वो आंख और वो होती है नज़र और।
कूचे मे हसीनों के उठाया तो है तूफ़ां,
और और ज़रा 'नूह' के ऐ दीदएतर[7] और।

× × ×

उनकी निगाहे नाज़ तो है दादख्वाह[8] पर,
लेकिन मेरी निगाह है उनकी निगाह पर।

---

(१) प्रियतम की गली, (२) आकाश के जुल्म, (३) शराबी, (४) किसी बुज़ुर्ग की क़ब्र पर जो साल भर में एक दिन मेला होता है उसको उर्स कहते हैं, (५) शराब ख़ाने का मालिक (६) बेचैन, (७) आँसू बहाने वाली आँखें, (८) इनसाफ चाहने वाला।

बैठे हैं राह रोक कर उस की हम इस लिए,
आ जाय क्या अजब वह सितमगार[1] राह पर।
क्या हुक्म हो किसे हो वो कब हो खबर नहीं,
आंखें लगी हुई हैं किसी की निगाह पर।
मतलब ये है कि और सिवा बेकरार हो,
वो क्यों न वाह वाह करे आह आह पर।
उज्रे जफाओ जौर भला कोई बात है,
उल्टे खफा न हों वो कहीं दादख्वाह पर।
ऐ 'नूह' क्या है उस की तबीयत का एतबार,
दो दिन भी जो चले न कभी एक राह पर।

× × ×

अबरू को तान कर कभी खंजर को तोल कर,
लेते हैं दिल मेरा वो मेरा जी टटोल कर।
या जिस्म से वो आज मेरा सर जुदा करें,
या फेंक दें कमर से वो तलवार खोल कर।
मैं कह रहा हूं उन से कि दिल मुफ्त लीजिए,
वो कह रहे हैं माल का कुछ अपने मोल कर।
ये हाल है सफ़र में अब उम्मीदो बीम[2] से,
हम बांधते हैं अपनी कमर खोल खोलकर।
गैरों से छूट जाय तकल्लुफ़ मोहाल है,
मैं क्यों बुरा हूं आपकी बातों में बोल कर।
शाना[3] मेरा हिला के वो कहते हैं वक़्ते नाज़[4],
देखो ज़रा हमारी तरफ़ आंखें खोलकर।

(१) ज़ालिम, (२) भय, (३) कंधा, (४) अंतिम समय।

आता नहीं शराब के जल्सों में किस लिए,
पी लेगा क्या यहाँ कोई जाहिद को घोल कर।
ताकत किसी में फिर नहीं रहती जवाब की,
कह देते है वो बात इक ऐसी टटोल कर।
ऐ 'नूह' जिससे दिल न मिले उस से क्या मिलूं,
वो कहते है कि गैर से तू मेल जोल कर।

× × ×

हजारो वार होते हैं निगाहे नाजे कातिल पर,
कभी है वो मेरे सर पर कभी है वो मेरे दिल पर।
छुपाने से छुपा कब कतरए खूने रगे बिस्मिल,
वो आखिर बन के जौहर फूट निकला तेगे कातिल पर।
युंहीं मजलूम की फरियाद क्या बरबाद जाएगी,
पड़ेगा मेरे दिल का सब्र एक दिन आप के दिल पर।
इलाही मौत दे मुझको शहीदाने[1] महब्बत की,
गले पर तेग़ कातिल हो तो सर हो पाए कातिल पर।
बढ़ाया जज्बे उल्फत ने मेरे सोजे[2] महब्बत को,
जो निकली आह दिल से बन के बिजली गिर पड़ी दिल पर।
यहाँ भी सोजे[3] फुरकत है वहाँ भी दर्दे उल्फत है,
उठाता हूँ जिगर से हाथ तो रखता हूं मैं दिल पर।
जिसे कल तुम खरामे[4] नाज से पामाल करते थे,
जमाने की नजर है आज उस हसरत भरे दिल पर।
बिठाया तो है हम ने उन को अपने दहने पहलू मे,
मगर बाएँ तरफ फिर भी निगाहे नाज़ है दिल पर।

---

(१) प्रेम मार्ग में मरने वाले (२) प्रेम की जलन (३) बिरह की आग (४) अदा से चलना।

हमें क्या खौफ़ वहरे[1] इश्क में वादे[2] मोखालिफ का,
जनावे 'नूह' की कश्ती पहुंच जाएगी साहिल पर।

× × ×

हजारों रंजो गम ढाते है वो अहले महव्वत पर,
न भूले कोई उस ज़ालिम की भोली भाली सूरत पर।
कोई अपना पराया अब नजर मुझ को नहीं आता,
उदासी छावनी छाए पड़ी है मेरी तुरबत पर।
हज़ारों ज़ुल्म सहते है हज़ारों ग़म उठाते है,
मगर दिल आ ही जाता है हमारा अच्छी सूरत पर।
कहीं हैरत कहीं हसरत कहीं ग़ुरवत[3] कहीं इवरत[4],
लगा रहता है हरदम एक मेला मेला मेरी तुरवत[5] पर।
जहाँ की बात थी उस का वहीं इंसाफ होना था,
उठा रक्खा है क्यों दुनिया के झगड़ों को कयामत पर।
कभी कुछ है कभी कुछ है कभी क्या है कभी क्या है,
नहीं रहते वो दम भर शोख़ियों से एक हालत पर।
दिया जिस ने न दो गज का कफन भी मेरी मैय्यत[6] को,
कभी ख़ुश होके क्या चादर चढ़ाएगा वह तुरवत पर।
मिलेगा चैन रोजे हश्र क्या सूरत परस्तों को,
नजर उन की पड़ेगी सब से पहले हूरे जन्नत पर।
हमारा दिल न क्यों आए हमारा दम न क्यो जाए,
तुम्हारी प्यारी प्यारी भोली भाली अच्छी सूरत पर।
न निकली है न कुछ उम्मीद है इस के निकलने की,
मुझे ए 'नूह' क्यों हसरत न आए दिल की हसरत पर।

(१) प्रेम समुद्र ( ) ख़िलाफ हवा (३) परदेश (४) नसीहत
(५) क़ब्र (६) लाश।

शर्मा के बिगड़ के मुस्करा कर,
वह छुप रहे इक झलक दिखा कर।
देखा जो तबाह हाल मेरा,
रोए वो बहुत गले लगा कर।

क्यों मांग रहे हो दूर से दिल,
ले जाओ हमारे पास आ कर।
तकलीफ़ हुई बला से हम को,
वो तो हुए ख़ुश हमें सता कर।

ऐ 'नूह' न तर्क[1] शायरी हो,
बेकार मबाश[2] कुछ किया कर।

× × ×

दौलत है बड़ी चीज़ हुकूमत है बड़ी चीज़,
इन सब से बशर[3] के लिए इज़्ज़त है बड़ी चीज़।
पूछो किसी आशिक़ से कभी इश्क़ का रुतबा,
अल्लाह अगर दे तो ये न्यामत है बड़ी चीज़।

बन्दे को मिला देती है अक्सर ये ख़ुदा से,
मुझ से कोई पूछे तो महब्बत है बड़ी चीज़।
पूरी न अगर हो तो कोई चीज नहीं है,
निकले जो मेरे दिल से तो हसरत है बड़ी चीज़।

मानो मेरे इस कौल को तुम ख़्वाह न मानो,
मैं तो ये कहूँगा कि महब्बत है बड़ी चीज़।
गो उफ़्व[4] के काबिल नहीं बन्दों की खताएँ[5],
फिर भी मेरे अल्लाह की रहमत है बड़ी चीज़।

---

(१) छोड़ देना (२) न रहो (३) आदमी (४) क्षमा (५) कुसूर।

दोनों में जो है फ़र्क़ उसे कहिए तो कह दूँ,
कीना[1] है बुरी चीज मुहब्बत है बड़ी चीज।
ऐ 'नूह' न तुम इसको हसीनों से अँचाओ,
ये ख़ूब समझ लो कि रियासत है बड़ी चीज।

× × ×

किस तरह आए कोई तेरे घर के आस पास,
दर्बां[2] टहलते रहते हैं हर दर के आस पास।
मैं हूं वो बादानोश[3] कि मरने के बाद भी,
फिरती है रूह शीशओ साग़र के आस पास।
शोरे फ़ुगां[4] से नाक मे दम सब का आगया,
क्या घर कोई बनाए मेरे घर के आस पास।
हर दम मुझे किसी का नज़ारा हुवा करे,
घर घर के आस पास हो दर दर के आस पास।
अब उसने हुक्म आम य दर्बां को दे दिया,
आने न पाए कोई मेरे घर के आस पास।
ऐ 'नूह' चश्म ग़ौर से देखो इधर उधर,
या घर मे होगा वो कहीं या घर के आस पास।

× × ×

उन से जा कर मैं कभी कहता हूं अपनी जब गरज,
कहते हैं तेरी गरज़ से क्या मुझे मतलब गरज।
वो कभी आए मेरे घर ये कभी मुमकिन नहीं,
कुछ हुई है पेश्तर कुछ होगी पूरी अब गरज।
वो सितमगर भी है बेपरवाह भी ख़ुद काम भी,
क्या मेरे मतलब गरज़ से हो उसे मतलब गरज।

(१) दुश्मनी (२) चौकीदार (३) शराबी (४) कलपना।

आप भी मुझ से मिलें मिल जाऊँ मैं भी आप से,
बस यही है सारी हसरत कुल तमन्ना सब ग़रज़।
वो निकालेंगे न किस को वह निकालेंगे किसे,
आरज़ू अरमान हसरत मुद्दआ[1] मतलब ग़रज।
मैं न जन्नत का हूँ ख़्वाहाँ मैं न तालिब हूर का,
अब गरज़ मुझको तेरी मरज़ी से है यारब ग़रज़।
क्यों दिया ऐ 'नूह' तुम ने उन को पैग़ामे विसाल,
कहते हैं अहले गरज को .खुदगरज से कब गरज़।

× × ×

आश्ना[2] से क्या गरज नाआश्ना[3] से क्या गरज,
.खुदगरज वो है उसे लुत्फ़ो वफा से क्या ग़रज़।
दोनों बातें हों किसी में ग़ैर मुमकिन है ये बात,
शर्म को शोखी से शोखी को हया से क्या गरज।
तू नहीं इतना समझता ऐ मेरे नादां तबीब,
मैं मरीज़े इश्क हूं मुझ को दवा से क्या ग़रज।
क्यों करें साकी से हुज्जत क्यों करें रिन्दों से बहस,
हमको मै पीने से मतलब कम सिवा से क्या गरज।
लाख में छुपती नहीं सौ लाख में छुपती नहीं,
उस की चश्मे शोख को शरमो हया से क्या गरज।
अर्जे मतलब पर मेरे उस ने बिगड़ कर ये कहा,
मुद्दई मुझको है तेरे मुद्दआ से क्या गरज।
मुझ से वो राजी रहे ना खुश ज़माना हो तो हो,
मुझ को उनसे है ग़रज़ खल्के .खुदा से क्या गरज।
जिस को देखा .खूबरू आशिक उसी के हो गए,
'नूह' को .जुल्मो सितम लुत्फ़ो वफा से क्या गरज।

---

(१) इच्छा (२) मित्र (३) जो मित्र न हो।

ये किस क़दर फ़िज़ूल है यह किस क़दर ख़िलाफ़,
वो मुझ से बरख़िलाफ़ है मैं उस से बरख़िलाफ़।
जो कुछ मुख़ालिफ़त है इन्हें वो मुझी से है,
तुम से न दिल ख़िलाफ़ न तुम से जिगर ख़िलाफ़।

वो रूठते हैं मेरे मनाने से और भी,
तदबीर क्या करे जो हो तक़दीर बरख़िलाफ़।
दुनिया में अब हवा है बंधी इख़्तलाफ़ की,
कोई इधर ख़िलाफ़ है कोई उधर ख़िलाफ़।

मिल जाय मुझ से सब जो तुम्हारी नज़र मिले,
सब हों ख़िलाफ़ गर हो तुम्हारी नज़र ख़िलाफ़।
ऐसा हो इख़्तलाफ़ तो फिर क्या हो इत्तिफ़ाक़,
दिल से है दिल ख़िलाफ़ नज़र से नज़र ख़िलाफ़।

फिर कहिए हम को ग़ैर से कुछ वास्ता नहीं,
ये किस क़दर दरोग़[1] है यह किस क़दर ख़िलाफ़।
ऐ 'नूह' तुम ने शिकवए[2] बेदाद क्यों किया,
यों ही ख़िलाफ़ थे वो हुए और बरख़िलाफ़।

× × ×

जो बला आए वो आए मेरे ही दिल की तरफ़,
देख कर मुझको न देखो सारी महफ़िल की तरफ़।
ये हमारा शग़्ल ठहरा हिज्र[3] में दिन रात का,
देख लेना यास[4] से हसरत भरे दिल की तरफ़।
गिर रहे हैं उस रुख़े रौशन पे क्या क्या टूट कर,
अब नहीं जाते पतिंगे शमए महफ़िल की तरफ़।

---

(१) झूठ (२) ज़ुल्म का गिला (३) विरह (४) निराशा।

कुछ लगावट कुछ तगाफ़ुल कुछ शरारत कुछ हया,
देखता है वो कनखियों से मेरे दिल की तरफ़।
वो जो इस के वास्ते तो यह है उसके वास्ते,
अपनी सूरत की तरफ़ देखो मेरे दिल की तरफ़।

कोई देखे आँख उठाकर क्या हमारा हालेज़ार,
अहले महफ़िल की नज़र है मीरे[1] महफ़िल की तरफ़।
उनका आना तो ज़रा आगोश[2] में दुश्वार है,
तीर भी उनके नही आते मेरे दिल की तरफ़।

गर नहीं मिलती जगह तीरे निगाहे नाज़ को,
बाएँ पहलू में वो आ बैठे मेरे दिल की तरफ़।
क्या कहूँ ऐ 'नूह' हाले कसरते दागे फ़िराक़,
कुछ कलेजे की तरफ़ है कुछ मेरे दिल की तरफ़।

× × ×

बाक़ी है वही सोजे[3] दुरूं का असर अब तक,
उगता नहीं सब्ज़ा भी मेरी क़ब्र पर अब तक।
आते वो मेरे घर मे वो जाते मेरे घर से,
ऐसी न हुई शाम न ऐसी सहर[4] अब तक।
कब्ज़ा है जवानी पे लड़कपन से हया का,
आशिक़ से नही मिलती है उनकी नज़र अब तक।
आए मेरे पहलू मे वो पहलू से गए भी,
लेकिन है वही शिद्दते दर्दे जिगर अब तक।
हर चन्द नही वो ख़लिशे[5] खारे तमन्ना,
रह रह के खटक होती है दिल मे मगर अब तक।

---

(१) सभापति (२) गोद (३) दिल की जलन (४) सवेरा (५) खटक।

यारब कोई बिछड़े न किसी से कभी मिलकर,
दिल के लिए रोता है हमारा जिगर अब तक।

× × ×

एकरार भी मिलने का है इन्कार भी उनको,
जमते नहीं दोनों मे किसी बात मे अब तक।
मुद्दत हुई देखे हुए उस शोख़ का जल्वा,
बेताब है आँखों मे हमारी नजर अब तक।
आदत जो गदाई[1] की मुहव्वत मे पड़ी थी,
हम देख लिया करते है दस बीस घर अब तक।
'दिल्ली' का कयाम[2] और वो 'सायल'[3] की मदारात,
ऐ 'नूह' मुझे याद है लुत्फे सफर अब तक।

× × ×

हसीं देखा जिसे आशिक हुवा दिल,
निहायत है हमारा चुलबुला दिल।
न लो दिल ले के मेरा गैर का दिल,
कि जैसे एक वैसे दूसरा दिल।
पता ये कूए[4] दिलवर का है क़ासिद,
पड़े तुझ को मिलेंगे जा बजा दिल।
न रोए जो वो है किस काम की आंख,
न तड़पे जो वो है किस काम का दिल।
तेरे देने को मैं लाऊँ कहां से,
नया सर रोज़ ऐ ज़ालिम नया दिल।

---

(१) फ़क़ीरी (२) ठहरना (३) जनाब 'सायल देहलवी से मतलब है। आप नवाब 'दाग' देहलवी के दामाद हैं; (४) प्रियतम की गली।

न देंगे ले के वह ऐ हज़रते 'नूह',
किसी का दिल फिर उस पर आप का दिल।

× × ×

यारब कोई किसी से न अपना लगाए दिल,
किस दिल से मैं बयान करूं माजराए दिल।
कुछ कुछ हया भी है उन्हे कुछ कुछ ग़ुरूर भी,
किस बेदिली से सुनते हैं वो माजराए दिल।
हम क्यों फ़िज़ूल इस की हिफ़ाज़त किया करें,
आता हो आए दिल कहीं जाता हो जाए दिल।
रहने भी दो चलो मुझे मालूम हो गया,
जो घर से फ़ालतू हो वो तुम से लगाए दिल।
दिल का लगाव आप समझते थे दिल्लगी,
अब क्यों है हाय हाय जिगर हाय हाय दिल।
निकले न जो कभी वो कलेजे की फांस है,
पूरा न जो कभी हो वो है मुद्दआए[1] दिल।
तुम मुद्दई[2] के दिल का निकालो न मुद्दआ,
ले देके इक यही है मेरा मुदाए दिल।
दुनिया मे दिल्लगी का मजा दिल्लगी से है,
आए न जो किसी पे वो दोज़ख़ मे जाए दिल।
ये उस के वास्ते है वो है इस के वास्ते,
दिल भी बराए ग़म है तो ग़म भी बराए दिल।
ऐ 'नूह' ये गजल मुझे दिल से पसन्द है,
पहलू कुछ इस मे और नहीं मावराए[3] दिल।

× × ×

(१) मतलब (२) दावा करने वाला (३) सिवाय।

क्यों कहते हो तुम हाल तेरा कुछ नहीं मालूम,
सब कुछ तुम्हें मालूम है क्या कुछ नहीं मालूम ।
वो फेरते हैं उल्टी छुरी मेरे गले पर,
उन को अभी अन्दाज़े जफ़ा कुछ नहीं मालूम ।
गुज़री है मेरे दिल पे शबे ग़म जो मुसीबत,
कुछ आप को मालूम है या कुछ नही मालूम ।
अग़यार के फ़िकरों से खबरदार न आना,
तुम को अभी दुनिया की हवा कुछ नहीं मालूम ।
इतनी तो ख़बर है कि वो जल्वा नजर आया,
बस और हमें इसके सिवा कुछ नही मालूम ।
ऐ 'नूह' वो किस नाज़ से फ़र्माते हैं तुम को,
तूफ़ान उठाने के सिवा कुछ नहीं मालूम ।

× × ×

कुछ दिनों क़ायम रहे ऐ महजबीं[1] इतनी नहीं,
जिस नहीं का डर है वो तेरी नहीं इतनी नहीं ।
वो ये कहते हैं झटक कर मेरे दस्ते शौक़ को,
तेरे हाथ आए हमारी आस्तीं इतनी नहीं ।
मैं न बेखुद हूं कहीं पीकर शराबे नाब को,
ऐ मेरे साक़ी अभी ऐसी नहीं इतनी नहीं ।
मुझसे क्या बातें बनाते हो मुझे मालूम है,
लूट ले दिल को निगाहे शर्मगीं इतनी नहीं ।
क़ब्र में हिलना जगह से मुझको मुश्किल हो गया,
जितनी हसरत है तड़पने की ज़मीं इतनी नहीं ।
दिल लुटा देने की चालें कोई इस से सीख जाय,
नाज़नीं तलवार तेरी नाज़नीं इतनी नहीं ।

---

(१) चांद सा मुखड़ा ।

हज़रते ज़ाहिद अगर आएँ तो बैठेंगे कहां,
बज़्मे[1] साक़ी में जगह ख़ाली कहीं इतनी नहीं।
फिर रही है दरबदर क्यों चाहने वाले की लाश,
कूचए जानां में यारब क्या ज़मीं इतनी नहीं।
दिल को हम यह कह कर उस महफिल में समझाते रहे,
हर जगह है .ज़ुल्म की कसरत यहीं इतनी नहीं।
'नूह' हम इस बह्र से कुछ और लिखते चन्द शेर,
क्या मज़ामीं की हो गुंजाइश ज़मीं इतनी नहीं।

× × ×

क्यों मुझे आप क़त्ल करते है,
मरने वाले पे लोग मरते हैं।
पास आते हुए वो डरते है,
दूर से बात चीत करते हैं।
हम जिएंगे न उनके वादे तक,
क्यों वो इक़रार से मुकरते है।
हसरत आती है अपनी हालत पर,
रोज जीते है रोज़ मरते हैं।
अब तो वह .ज़ुल्म भी नहीं करते,
ये नया .ज़ुल्म मुझ पे करते हैं।
कैसे वाबज़ाअ[2] हम भी हैं ऐ 'नूह',
जिस पे मरते थे उस पे मरते है।

× × ×

रोने वालों से ये बे मौका हँसी अच्छी नहीं,
आप तो अच्छे हैं आदत आप की अच्छी नहीं।

---

(१) सभा (२) सभ्य।

यार से करता हूँ शिकवा मैं जफ़ाए यार का,
जब बुरे आते हैं दिन तो सूझती अच्छी नहीं।
या मेरे ही हो रहो या ग़ैर ही के हो रहो,
रोज़ का झगडा ये हुज्जत रोज़ की अच्छी नहीं।

जिस की नज़रों में जो खुप जाए वो बेहतर सबसे है,
उस से हूर अच्छी नहीं उस से परी अच्छी नहीं।

जब रक़ीबों से वो बिगड़े तब हमारी बन पड़ी,
कौन कहता है कि उनकी नाख़ुशी अच्छी नहीं।

क्या कहें हम आगए दम से दिले बेताब के,
ये न समझे ना समझ की दोस्ती अच्छी नहीं।

तेरी नीयत है बुरी आदत तेरी उस से ख़राब,
दो सितमगारों में ज़ालिम एक भी अच्छी नहीं।
'नूह' ने देखा इसे समझा इसे जांचा इसे,
दुश्मनी अच्छी है उनकी दोस्ती अच्छी नहीं।

× × ×

चर्ख़[1] से बढ़कर हसीनाने जहाँ जल्लाद हैं,
वो सितम ईजाद क्या है ये सितम ईजाद है।
आशिकों का दिल लिया झट लेके चलते हो गए,
ये हसीं भी अपने मतलब के बड़े उस्ताद हैं।

आशियां[2] उजडा हमारा छुट गया हम से चमन,
हम बरंगे नकहते[3] गुल हर तरह बरबाद हैं।
भूल जांऊ ऐश में वो गम ये मुमकिन ही नहीं,
याद हैं सब याद हैं अब याद हैं सब याद हैं।

(१) आकाश (२) घोंसला (३) महक।

हम उसी मे ख़ुश कि जिसमे हो तेरे दिल की ख़ुशी,
शाद[1] है तो शाद है नाशाद[2] है तो शाद है।
यार क्या अग़यार क्या दिल क्या नज़र क्या शौक़ क्या,
इश्क मे हम अपने हाथों आप ही बरबाद है।
तेरे फ़िक्रे तेरे हीले तेरे झांसे तेरे दम,
तेरी चाले तेरी बातें तेरी घाते याद हैं।
लुत्फ़ जब आए कयामत मे ख़ुदा के सामने,
सब कहे जल्लाद हो तुम वे कहे जल्लाद है।
तुम अभी रंजों ग़मो आज़ार से वाकिफ नहीं,
हमसे पूछो हम पे गुजरे है ये हम को याद है।
'नूह' हर माशूक गो बेमिस्ल है गुजरात का,
मेरी नज़रों मे हसीनाने इलाहाबाद है।

× × ×

या ख़ुदा मै किसी काफिर की अदा बन जाऊँ,
दिल मे शोख़ी बनूँ आँखो मे हया[3] बन जाऊँ।
कौल ये दाग़े जिगर से नफ़से[4] सर्द का है,
तू बने फूल तो मै बादे[5] सबा बन जाऊँ।
हर घड़ी अब यही कौल उस बुते मग़रूर का है,
कोई सजदा करे मुझ को तो ख़ुदा बन जाऊँ।
ज़ब्ते दिल का ये तकाज़ा कि न निकले कोई अश्क[6],
चश्मेतर[7] की यह तमन्ना कि घटा बन जाऊँ।
मै उन्हे दिल मे जगह दूँ तो वो अरमान बने,
वो नज़र मे मुझे रक्खे जो हया बन जाऊँ।

(१) ख़ुश, (२) दुखी, (३) लज्जा, (४) ठंडी साँस, (५) हवा, (६) आँसू, (७) भीगी आँख।

क्या चला मैं जो रहे शौक से रुक रुक के चला,
लुत्फ़ चलने का तो जब है कि हवा बन जाऊँ।
मरतबा खाक का ऐसा है कि ऐ हजरते 'नूह',
खाक बन जाऊँ तो क्या जानिये क्या बन जाऊँ।

× × ×

वो इम्तहान इश्क का हर आन लेते है,
कल दिल लिया था आज मेरी जान लेते हैं।
अब उन से मेल जोल की सूरत न रह गई,
पहचान जाते हैं मुझे पहचान लेते हैं।
क्या हम से अपनी जान निकाली न जायगी,
वो और हैं जो और का एहसान लेते है।
उनकी खता नहीं ये हमारा .कुसूर है,
हम उनको जान देते है तो जान लेते हैं।
हमसे कहां छुपेगा कहाँ छुपके जायगा,
हम उस को सौ हिजाब[1] मे पहचान लेते है।
मतलब ये है कि पास हमारे न कुछ रहे,
वो जानो दिल को लेकर अब ईमान लेते है।
बाकी नहीं शबाब[2] मे बचपन की शोखियां[3],
अब जो कहो वो सीधी तरह मान लेते है।
ऐ 'नूह' इन बुतों का निराला उसूल है,
आशिक का सबसे पहले यह ईमान लेते है।

× × ×

सर करने को वो बन ठन के जिधर जाते है,
सकड़ों मरते है मर मिटते है मर जाते हैं।
आप ही आप कभी जी से गुज़र जाते हैं,

---

(१) पर्दा, (२) जवानी, (३) चंचलता।

मरने वाले तेरे बेमौत भी मर जाते हैं।
ख़ूबरूयों का हर अन्दाज़ निराला देखा,
ये बिगड़ते है तो कुछ और सॅवर जाते हैं।
अभी बचपन है अभी है वही बचपन की झिझक,
अपने साए से भी वो राह मे डर जाते हैं।
मेरे दिल को जो दिलासे नही देते न सही,
चुटकियॉ लेके वो बेचैन तो कर जाते हैं।
कभी अपना था यही शग्ल मगर अबहै यह हाल,
इश्क़ का नाम जो सुनते हैं तो डर जाते हैं।
आख़िर इक रोज़ बशर के लिए मरना है ज़रूर,
वही अच्छे है जो माशूक़ पे मर जाते हैं।
आज तक उन की वही छेड़ चली जाती है,
फूल काग़ज़ के मेरी क़ब्र पे धर जाते है।
हमने यें देख लिया देख लिया देख लिया,
आप भी 'नूह' के तूफ़ान से डर जाते है।

× × ×

मुझ पर इन दोनों मे कोई मेहरबां होता नहीं,
ये ज़मीं होती नही ये आस्मां होता नहीं।
हम से बढ़ कर ग़ैर है या हम हैं बढ़ कर ग़ैर से,
एक साथ उनका हमारा इम्तहां होता नही।
उनसे जब कहता हूं क्या होता नही बाहम मिलाप,
किस ढिठाइ से वो फरमाते हैं हॉ होता नही।
क्यों उदू[1] के घर गये थे तुम वहॉ क्या काम था,
बेसबब कोई किसी का मेहमां होता नहीं।

(१) दुश्मन।

देख लो तुम आप सीने पर हमारे रख के हाथ,
हाल जो दिल का है वो हमसे बयां होता नहीं।
वो दिले बेआरज़ू में किस लिए रहने लगे,
खानए[१] मुफ़लिस में कोई मेहमां होता नहीं।
'नूह' साहब आप जैसे कुछ हुए बदनामे ख़ल्क[२],
इस तरह कोई भी रुसवाए जहां होता नहीं।

× × ×

उनसे सब हाल दग़ाबाज़ कहे देते हैं,
मेरे हमराज़[३] मेरा राज़ कहे देते हैं।
मैं कोई हाले सितम मुँह से कहूँ या न कहूं,
ऐ सितमगर तेरे अन्दाज़ कहे देते हैं।
क्या तमाशा है कि हम बेखुदीए शौक में अब,
जो छुपाते थे वही राज़ कहे देते हैं।
अब जो की वादा ख़िलाफ़ी तो बुरी ठहरेगी,
ऐ दग़ाबाज़ फ़ुसूँसाज़[४] कहे देते हैं।
इश्क छुपता ही नहीं लाख छुपाये कोई,
'नूह' यह सब तेरे अन्दाज़ कहे देते हैं।

× × ×

बेकसी में यही हो पास कहीं,
मैं कहीं हूँ मेरे हवास कहीं।
रोज़ होता है इम्तहाने वफ़ा,
या ख़ुदा दिल मेरा हो पास कहीं।
हिज्र में साक़ी में फेंक देता हूँ,
मैं कहीं ख़ुम[५] कहीं गिलास कहीं।

---

(१) ग़रीब का घर (२) ज़माना (३) भेद जाननेवाले (४) मक्कार (५) मटका।

काबाओ दैर[1] मे तो ढूँढ चुके,
वो न हो दिल के आस पास कही।
रोज का इन्तजार मिट जाए,
मुझ को उम्मीद से हो यास[2] कही।
शिकवए जौर भी नही करता,
कि न हो जायं वो उदास कही।
'नूह' जायेगे बज्मे यार मे हम,
शौक से बढ़ के है हिरास[3] कही।

× × ×

हजारों ग़म उठाते है हजारों जुल्म सहते है
वो जिस हालत मे रखता है हम उस हालत मे रहते हैं।
हमेशा वो कशीदा[4] सूरते तस्वीर रहते हैं,
न मेरी बात सुनते है न अपनी बात कहते है।
सितमगर बेवफा कहने पे तुमने क्यों बुरा माना,
जो दुनिया तुमको कहती है वही तो हम भी कहते है।
हमीं ऐसे है यारब यह हमारा ही कलेजा है,
वो कोई सह नहीं सकता जो हम आज़ार[5] सहते है।
तुझे क्या क़द्र तू क्या जाने कैसे है मेरे आँसू,
ये ऐसे हैं कि हर सायत मेरी आँखों मे रहते हैं।
तुम अच्छे हो तुम्हारी जितनी बातें है वो सब अच्छी,
मगर मै क्या कहूँ जो कहने वाले तुमको कहते है।
जनाबे 'नूह' पर फिकरा तुम्हारा चल नहीं सकता,
ये क्या तुमको नही मालूम वो 'नारे' मे रहते है।

× × ×

(१) मंदिर, (२) निराशा, (३) डर, (४) खिंचे हुए, (५) दुख।

उसी हंसी का खयाल है दिल मे,
जिसका आना मोहाल है दिल मे।
क्यों न दिल इस ख़याल से ख़ुश हो,
कि तुम्हारा ख्याल है दिल मे।
तीर चलते हैं तेग[1] चलती है,
आरज़ू पायमाल है दिल मे।
क्या कहूँ कुछ कहा नहीं जाता,
सौ तरह का ख़याल है दिल मे।

क्या करे रह के वो ख़दंगे[2] निगाह,
अब लहू का भी काल है दिल मे।
मेरे पहलू मे जिस तरह दिल है,
यों तुम्हारा खयाल है दिल मे।
दिल मे जिस का क़याम था पहले,
अब उसी का ख़याल है दिल मे।
'नूह' को मुँह से कुछ नहीं कहते,
उनको तुमसे मलाल है दिल मे।

× × ×

वहीं तक आप समझे ओर जब तक दिल मे नाले है,
मेरे आगे ये सातो आस्मा मकड़ी के जाले हैं।
क़यामत से मिलो तुम मुझसे ऐसा हो नहीं सकता,
ये झिकरे हैं ये चकमे हैं ये सब हीले हवाले हैं।
अदम[3] मे कौन सा आराम दुनिया से ज़ियादा है,
वहीं से लोग आए हैं वहीं फिर जाने वाले हैं।
न पूछा हम को इतना भी किसी ने उनकी महफ़िल मे,

(१) तलवार, (२) तीर, (३) परलोक।

कहां से आप आए हैं कहां के रहने वाले है
उतर जाए जो दिल मे जो समा जाए कलेजे मे,
वही आहे तो आहे है वही नाले तोले नाले है।
कभी ग़म खाने वाले गम से आज़ुरदा[१] नही होते,
हमारे हक मे गम दोनों जहॉ के दो निवाले है।
इसी से साफ ज़ाहिर है दोरंगी खूबरूयों[२] की,
कि इनका रंग गोरा है तो इनके बाल काले है।
जनाबे खिज्र की हालत पे हमको रश्क आता है,
उन्हे जीने की हसरत है हमे जीने के लाले है।
जनाबे 'नूह' तोबा करके मय से बन गए नासेह[३],
कोई ये आपको जाने बड़े अल्लाह वाले है।

× × ×

जाएगा मेरे डर से न तू ग़ैर के घर मे,
ये सोच के बैठा हूँ तेरी राह[४] गुज़ार मे।
फरमाते हैं वो देख के हैरां मुझे घर मे,
दीवार कहॉ से ये खड़ी हो गई दर मे।
जो मिट सकता नहीं जो कभी मर नही सकता,
वो दाग़ मेरे दिल मे है वो ज़ख्म जिगर मे।
दुश्मन के मकां मे न रहो लोग कहेगे,
क्या घर नहीं इनके जो हैं यह ग़ैर के घर मे।
तस्वीर से खुलती है मुसव्वर[५] की हकीकत,
अल्लाह की कुदरत नज़र आती है बशर मे।
ऐ 'नूह' न मसजिद मे करो बादाकशी[६] तुम,

---

(१) शोकमय, (२) अच्छी सूरत वाले, (३) शिक्षक, (४) रास्ता, (५) तसवीर बनाने वाला, (६) शराब पीना।

अव्वल तो बुरा काम फिर अल्लाह के घर में।

× × ×

दोस्ती को बुरा समझते है,
क्या समझ है वो क्या समझते हैं।
सब अदा को अदा समझते हैं,
हम अदा को कज़ा समझते है।
कोई उनको हज़ार समझाए,
सब वो अच्छा बुरा समझते है।
हम तो क्या जाने कह रहे है क्या,
आप क्या जाने क्या समझते हैं।
मेरे नाले ग़ज़ब के हैं लेकिन,
वो इन्हें भी हवा समझते हैं।
दिल अगर है तो खूबरू लाखों,
आप अपने को क्या समझते हैं।
जब बुलाया तो कह दिया उसने,
हम तेरा मुद्दआ समझते है।
वो भी अल्लाह का पयम्बर[1] है,
'नूह' को आप क्या समझते हैं।

× × ×

मेरी ज़बान ये कह कर वो थाम लेते है,
इसी से आप हसीनों के नाम लेते हैं।
ये मुद्दआ है इसे कोई मुद्दई न सुने,
दबी ज़ुबां से वो मेरा सलाम लेते हैं।
वो आदमी नहीं इन्सा नहीं बशर ही नहीं,

(१) देव दूत।

जो रोक लेते हैं जो दिल को थाम लेते हैं।
वो इसमे शाद[1] कि देते हैं गालियां हमको,
हम इसमें ख़ुश कि हमारा वो नाम लेते हैं।
कोई अब इसको शरारत कहे कि शर्म कहे,
वो मुंह को फेर के मेरा सलाम लेते हैं।
जहाँ ज़बान से हम बात कर नहीं सकते,
वहाँ नज़र के इशारे से काम लेते हैं।
कहीं न भेस बदल कर गया हो 'नूह' वहाँ,
सुना है मोल कोई वो ग़ुलाम लेते हैं।

× × ×

कमसिनी मे जो कयामत की जफ़ा[2] करते हैं,
देखिए अपनी जवानी मे वो क्या करते हैं।
लुत्फ़ कैसा कि हमे उसकी भी उम्मीद न थी,
तुम जफ़ा करते हो हम शुक्रे जफ़ा करते हैं।
मुझ को मालूम नहीं आप बता दे मुझ को,
दिल जब आता है तो क्या होता है क्या करते हैं।
वो तुम्हीं हो कि वफ़ा पर भी जफ़ा करते हो,
ये हमीं हैं कि जफ़ा पर भी वफ़ा करते हैं।
'नूह' यह बादाकशी[3] और मुसलमां होकर,
आप क्या करते हैं क्या करते हैं क्या करते हैं।

× × ×

क्या हुवा क्या न हुवा हाल ये खुलता ही नहीं,
या ख़ुदा था मेरे पहलू मे कि दिल था ही नहीं।
जो निकल जाय ज़माने मे जो पूरी हो जाय,

(१) ख़ुश, (२) ज़ुल्म, (३) शराब पीना।

मेरी हसरत ही नहीं मेरी तमन्ना ही नहीं।
ख़्वाब मे आए भी तो मुँह को छुपा कर आए,
इस तरह देखा है गोया उन्हे देखा ही नही।
आप क्या जाने अभी दश्तनवर्दी[1] के मज़े,
घर से बाहर कदमे नाज तो रक्खा ही नही।
हर घड़ी फ़िक्र हमे रहती है कल क्या होगा,
वही अच्छे हैं कि जिन कोई ग़मे फ़र्दा ही नही।
वही अग़यार की बातें वही अग़यार का ज़िक्र,
और दुनिया मे तुम्हे क्या कोई चर्चा ही नही।
मैं न मानूंगा ये क्या कहते हो तुम फिर तो कहो,
आज तक हमने कभी 'नूह' को देखा ही नही।

× × ×

ये मेरे पास पास जो चुपचाप आए बैठे है,
हज़ार फ़ितनए महशर उठाए बैठे है।
वो जानते है कि आँखे लगाए बैठे है,
हम उनके दर पे उन्ही के बिठाए बैठे हैं।
उदू से बज़्मे उदू मे लड़ा रहे हो निगाह,
नहीं ख़याल कि अपने पराए बैठे है।
उठाओ तेग संभालो कमाँ चलावो तीर,
तुम्हारे सामने सर हम झुकाए बैठे हैं।
किसी से एक अलम[4] एक ग़म नहीं उठता,
हम एक गम नहीं लाखों उठाए बैठे हैं।
कहीं न उनकी नजर मे नज़र किसी की लड़े,
वो इस लिहाज़ से आंखे झुकाए बैठे हैं।

(१) जंगल में फिरना (२) कल का रंज, (३) फ़साद (४) दुःख।

कोई हसी नज़र आया ये बेकरार हुए,
जनाबे 'नूह' को को हम आज़माए बैठे हैं।

× × ×

हम किसी से राज़े[1] उल्फत को जता सकते नही,
और अगर चाहे छुपाना तो छुपा सकते नहीं।
हश्र के दिन वो किसी सूरत से पा सकते नहीं,
इतने लोगो मे हमारा दिल चुरा सकते नही।
मेरी उल्फत ग़ैर की चाहत मे क्यो है गुफ्तगू,
आज़मा सकते हो क्या तुम आज़मा सकते नही।
मैंने देखी एक से एक अच्छी अच्छी सूरतें,
ऐसे वैसे मेरी आंखों मे समा सकते नही।
दिल मे चुटकी लेके वो तड़पा न दे ये खौफ है,
हम कलेजे से भी ज़ालिम को लगा सकते नहीं।
मेरे नाले मेरे मुँह से निकले ये कहते हुए,
ढूँढ़ने उसको चले है जिसको पा सकते नही।
अब दबाए दर्द दिल से इस क़दर फुरसत कहाँ,
हम दुआ के वास्ते भी हाथ उठा सकते नहीं।
पर्दादारी ने कुछ ऐसा हमको बेबस कर दिया,
बुतकदे[2] से उठ के हम काबे को जा सकते नही।
'नूह' बज्मे[3] यार मे तो मजमए अग़यार[4] है,
आप क्यों जाते हैं क्या उसको बुला सकते नही।

× × ×

ये नया ज़ुल्म नई तर्ज़े जफा है कि नहीं,
वो बुरा कह के ये कहते हैं सुना है कि नहीं।

(१ प्रेम का भेद, (२) मंदिर, (३) प्रियतम की सभा, (४) ग़ैर लोग।

दर्दे दिल की तो दवाएं हैं ज़माने में बहुत,
चारासाज़ो[1] कोई आदत की दवा है कि नहीं।
हम इसी फ़िक्र में बेमौत मरे जाते हैं,
उनके हाथों से हमारी भी क़ज़ा है कि नहीं।
नाज़, अन्दाज़, अदा, गमज़ा करिश्मा शोख़ी,
ये तो सब कुछ है मगर तुममें वफ़ा है कि नहीं।
उनसे वापस न करूं दिल ये समझ लूं पहले,
कहीं ऐसा भी मोहब्बत में हुवा है कि नहीं।
सुन के अशआर[2] यही 'नूह' से वो पूछते हैं,
तुममें कुछ और सिफ़त[3] इसके सिवा है कि नहीं।

× × ×

अह्द में क़ौल में इक़रार में पैमां में नहीं,
जो मज़ा तेरी नहीं में है तेरी हॉ में नहीं।
आशियॉ[4] बादे[5] मुख़ालिफ़ ने उजाड़ा मेरा,
मुझको तिनके का सहारा भी गुलिस्तॉ[6] में नहीं।
क्यों करें दश्तनवर्दी[7] हमें मतलब क्या है,
ख़ाक उड़ाने के सिवा ख़ाक बयांबां में नहीं।
क़ाबिले दाद है उसके रुख़े रंगीं की बहार,
वो परी फूल है जो मेरे गुलिस्तां में नहीं।
क्यों न यों नाज़ करें उक़दये[8] तक़दीर पे हम,
यह गिरह वो है जो उस ज़ुल्फ़े परीशां में नहीं।
बादे सरसर[9] ने न छोड़ा कोई तिनका बाक़ी,
फूल तो फूल हैं कांटे भी गुलिस्तां में नहीं।

---

(१) दवा करने वाले, (२) कविता (३) गुण (४) घोंसला (५) ख़िलाफ़ हवा, (६) बाग़ (७) जंगल में फिरना, (८) तक़दीर की गिरह (९) तेज़ हवा।

'नूह' शायर नहीं मैं बल्कि जमींदार हूँ मैं,
वो जमीं कौन सी है जो मेरे दीवां में नहीं।

× × ×

इस बनावट पर इस अन्दाज पे मरता हूँ मैं,
सब तो अल्लाह के बन्दे हैं तुम्हारा हूँ मैं।
दिल मेरा बज्मे हसीनां में बचे या न बचे,
इस कदर है ये सितमगार अकेला हूँ मैं।
देख जाहिद मुझे तू चश्मे हिकारत से न देख,
कि गुनहगार अगर हू भी तो कि किस का हूँ मैं।
मैं ये तुझसे नहीं कहता हूँ कि आजार[1] न दे,
ये समझ ले कि तेरा चाहने वाला हूँ मैं।
उसकी तारीफ़ हुआ करती है मेरे आगे,
आप ये चाहते हैं गैर को भी चाहूँ मैं।
मेरे रोने से ख़ुदा के लिए डरते रहना,
'नूह' हूँ 'नूह हूँ' तूफ़ान उठाता हूँ मैं।

× × ×

किस तरह जल्वए हुस्ने रुखे[2] अनवर देखूं,
वो झलक मुझको दिखाते नहीं क्यों कर देखूं।
मेरे पहलू से मेरी जान उठे जाते हो,
क्या दिखाता है मुझे अब दिले मुज़तर[3] देखूं।
इश्क कामिल है तो ये बात भी कुछ दूर नहीं,
वो नज़र आए जिधर आँख उठा कर देखूं।
आन का ग़ैर से मिलना नहीं देखा जाता,
जो न हो देखने की बात वो क्यों कर देखूं।

(१) दुःख (२) चमकता हुआ मुखड़ा, (३) बेचैन।

कहते हैं सब्र का होता है नतीजा अच्छा,
जी में आता है कि कुछ रोज़ इसे कर देखूं।
'नूह' अब तक जो न देखा था कभी वो देखा,
और क्या मुझको दिखाता है मुकद्दर[1] देखूं।

× × ×

आप मेरे दिले नाशाद को क्या लेते हैं,
लेने वाले तो फकीरों की दुआ लेते हैं।
क्या खबर कल को मिले मय हमें या कल न मिले,
थोड़ी सी पीते हैं थोड़ी सी बचा लेते हैं।
अपने मुशताक[2] से छुपते हो ये क्या करते हो,
दिल चुरा कर कहीं लोग आँख चुरा लेते हैं।
गम ने छोड़ा न लहू दिल में कहीं नाम को भी,
मेरे मेहमान मुझे लूट के खा लेते हैं।
दिल किसी का वो यूँही लेलें यह मुमकिन ही नहीं,
देख लेते हैं हज़ारों को दिखा लेते हैं।
एक दिल खो के मिले सैंकड़ों आज़ारों[3] अलम,
जिस क़दर देते हैं हम उस से सिवा लेते हैं।
कोई पत्थर जो कहीं हम को नज़र आता है,
बुत[4] समझ कर उसे क्या जल्द उठा लेते हैं।
उनकी तलवार भी खिचती है तो इस नाज़ के साथ,
हम उसे बढ़ के कलेजे से लगा लेते हैं।
देख पाते हैं जो नक्शे क़दमे यार को हम,
खाक पर लोट कर आँखों से लगा लेते हैं।
जान उनकी है दिल उनका है कलेजा उनका,

(१) क़िस्मत, (२) चाहने वाला, (३) दुःख (४) मूर्ति।

जो तेरे वार महब्बत को उठा लेते हैं।
हजरते 'नूह' को भी याद हैं फ़िक्रे क्या क्या,
चार बातों मे हसीनों को मिला लेते हैं।

× × ×

कभी आहें, कभी नाले कभी फ़रियाद करते हैं,
ख़ुदा से जो नही होता वो आदमज़ाद[1] करते हैं।
महब्बत मे कहीं काम ऐसी बातों से निकलता है,
उन्हे मै क्या कहूं जो शिकवए बेदाद करते हैं।
असर अच्छा बुरा कोई न देखा आज तक इसका,
इलाही तुझसे हम फरियाद की फरियाद करते हैं।
वहाँ तो हुक्म ये है तुम मेरी उल्फत से बाज आओ,
मगर ऐ हज़रते दिल आप क्या इरशाद[2] करते हैं।
ख़ुदा रक्खे हसीनों को भी उल्फत है हसीनों की,
कभी बर्बाद होते हैं कभी बर्बाद करते हैं।
कहीं है आरज़ू उनकी कही है मुद्आ उनका,
वो मेरे दिल मे इक दुनिया नई आबाद करते हैं।
दुआ मांगी थी हमने हाथ उठाकर उनके मिलने की,
वो ये समझे ख़ुदा से शिकवए[3] बेदाद करते हैं।
हमे ऐ 'नूह' जन्नत की न ख़्वाहिश है न हसरत है,
कि हम आठों पहर सैरे इलाहाबाद करते हैं।

× × ×

अच्छी अच्छी प्यारी प्यारी भोली भाली सूरतें,
एक से हैं एक दुनिया मे निराली सूरतें।
आज आएंगे कल आएंगे अतरसों आएंगे,

(१) मनुष्य, (२) आज्ञा, (३) ज़ुल्म का गिला।

खींचता हूँ रोज़ मैं क्या क्या ख़याली सूरतें।
जिसने देखा एक नजर इनको वो इनका हो गया,
किस क़दर हैं मोहिनी ये हुस्न वाली सूरतें।
हम वहां रहते नहीं होतीं नहीं हैं जिस जगह,
रूप वाली हुस्न वाली नाज वाली सूरतें।
इश्क़ बाज़ी के लिए कुछ हुस्न की हाजत नहीं,
मरने वाले को हैं यकसां[1] गोरी काली सूरतें।
गुलशने[2] आफ़ाक़ भी गोया है कोई बुतकदा[3],
पत्ती पत्ती सूरतें हैं, डाली डाली सूरतें।
रंजोग़म भी शर्त हैं ऐशो[4] मसर्रत के लिए,
एक दिन सब को हैं ये पेश आने वाली सूरतें।
और सब कुछ है हसीनों में वफ़ादारी नहीं,
ये हैं जांची समझी बूझी देखी भाली सूरतें।
मौत ने क्या-क्या हसीनों को मिलाया ख़ाक में,
अब कहां ऐ 'नूह' वो नाज़ों की पाली सूरतें।

× × ×

न कोई आरज़ू दिल में न कोई मुद्दआ दिल में,
फ़क़त अब दिल ही दिल है और अब रक्खा है क्या दिल में।
न पूछ ऐ हमनशीं यह बात मुझसे अब है क्या दिल में,
मेरे पहलू में दिल है और है वह दिलरुबा[5] दिल में।
हज़ारों हसरतें दिल में हज़ारों मुद्दआ दिल में,
ये मेरा दिल है समझा मेरे दिल को तूने क्या दिल में।
ये तेरा घर है कोई ग़ाफ़िल अपने घर से होता है,

---

(१) एक तरह, (२) संसार वाटिका, (३) मन्दिर, (४) आनन्द, (५) प्रियतम।

कहाँ जाता है ए तीरे निगाहे नाज़ आ दिल मे।
तुम उसको वे निकाले किस तरह इसको निकालोगे,
मेरे पहलू मे जैसे दिल है योंहीं मुद्आ दिल मे।
ये कहती थी वो आएँगे यह कहती थी न आएँगे,
उमीदो[1] बीम[2] पर आख़िर को झगड़ा हो गया दिल मे।
कोई अच्छी तरह ढूंढे कोई अच्छी तरह देखे,
यही होगा कहीं वो तीर या पहलू मे या दिल मे।
अब इसको क्या करूं मै ये मेरी किस्मत की ख़ूबी है,
वो अच्छा मुँह से कहते है समझते है बुरा दिल से।
अबस[3] दैरो हरम की ख़ाक उड़ाई मुद्दतों हमने,
जिसे हम ढूंढते फिरते थे वो आख़िर मिला दिल से।
यही उल्फ़त यही चाहत यही रस्मे महब्बत है,
तुम्हीं जांचो ज़रा सोचो ज़रा समझो ज़रा दिल मे।
कभी तूफान उठाकर जिसने एक महशर उठाया था,
वही हूँ 'नूह' मै समझा है तुमने मुझको क्या दिल मे।

× × ×

जो वाकिफ़कार हों वो सख़्त मुशकिल इसको कहते है,
दिल आज़ारों[4] को हमने दिल दिया दिल इसको कहते हैं।
चुरा लेजाओ सीने से उड़ा ले जाओ पहलू से,
मगर ये जान लो हसरत भरा दिल इसको कहते है।
नहीं मिलता जो ख़ंजर तो अदा से काम लेता है,
ख़ुदा रक्खे मेरे कातिल को कातिल इसको कहते है।
किसी से दिल लगाएँ दिल्लगी के वास्ते हम भी,
मगर मुशकिल तो ये है लोग मुश्किल इसको कहते है।

(१) आशा (२) निराशा (३) बेकार (४) दिल दुखाने वालों।

हमारी बात मे तेरी निगाहे मस्त रहती हैं,
वड़े गाफिल वो है जो लोग गाफिल इसको कहते है।
कहीं ऐ 'नूह' धोखा दे शवे खिलवत[1] न शर्म उसकी,
मिला रक्खो इसे पहले से अनमिल इसको कहते है।

× × ×

अहदे[2] पीरी मे जवानी के मजे मुमकिन नहीं,
वो जमाना ही नहीं वह दिन नही वो सिन नही।
मैं शवे गम से रिहाई पाऊँ ये मुमकिन नहीं,
तीस दिन मे या इलाही कोई ऐसा दिन नहीं।
वो जो इक उम्मीद थी मिलने की वो जाती रही,
सर झुका कर कह दिया उस शोख़ने मुमकिन नही।
मैं फिरूँ अहदे वफा से अपने कोई बात है,
न कभी मुमकिन नहीं मुमकिन नही मुमकिन नहीं।
किस तरह वायज से अब निभती है देखा चाहिए,
उसका हमसिन[3] मैं नहीं हूं वो मेरा हमसिन नहीं।
एक तो शर्ते वफा फिर दूसरे अहदे विसाल,
कौन सी है बात मुमकिन कौन सी मुमकिन नहीं।
क्यों उसे दिल देकर अपनी जान का दुश्मन हुवा,
'नूह' कुछ ऐसा अभी तेरा जियादा सिन नहीं।

× × ×

हम पयामी से यह दे दे के कसम पूछते है,
पूछते हैं हमे वो भी जिन्हे हम पूछते है।
महवा हो के कहाँ किस्सए गम पूछते हैं,
अब मेरे पूछने वाले मुझे कम पूछते हैं।

---

(१) एकान्त वास की रात (२) बुढापे के दिन (३) बराबर आयु का (४) दून।

हम से यह कहके वो हाले शबे ग़म पूछते हैं,
क्या बताओगे न तुम अब भी कि हम पूछते हैं।
हम से तो पूछते हो राज़ हमारे दिल का,
तुम बता देते हो जिस बात को हम पूछते हैं।
यों कोई दे के जबां अपनी मुकर जाता है,
आपसे कहते हैं यह आपसे हम कहते हैं।
भूले भटके जो उधर कोई निकल जाता है,
खैर बुतखाने[1] की सब अह्ले[2] हरम पूछते हैं।
मैंने ऐसा कोई हमदर्द न देखा न सुना,
सुब्ह को मुझसे वो हाले शबेगम पूछते हैं।
वो तबीयत है तुम्हारी ये हमारा है मिजाज,
तुम नहीं पूछते हमको तुम्हे हम पूछते हैं।
अह्ले उल्फत का नहीं पूछने वाला कोई,
पूछते हैं तो गमो रंजो अलम पूछते हैं।
जो न झेली थी कभी उसने वो आफत झेली,
आप क्या 'नूह' से अफसानए[3] ग़म पूछते हैं।

× × ×

तुझे क्या मुझसे मतलब है तुझे क्या बह्स मैं क्या हूँ,
बुरा हूं तो बुरा हूं और अच्छा हूं तो अच्छा हूं।
फिरा करते हैं लाखों खूबरू मेरी निगाहों में,
किसे जांचूं किसे बतूं किसे देखूं किसे चाहूं।
लिए जाता है दिल मुझको तमाशागाहे उल्फत में,
कहीं ऐसा न हो मैं खुद वहां जाकर तमाशा हूँ।
बता दे तूही कुछ मेरा पता ऐ बेखुदी मेरी,

(१) मिन्दर (२) काबे वाले (३) दुख का किस्सा।

किधर हूँ किस जगह हूँ मैं कहां हूँ और मैं क्या हूं।
वो घबराए कुछ ऐसा देखकर मेरी अलालात[1] को,
मुझे आख़िर यही कहना पड़ा उनसे कि अच्छा हूं।
मेरी बायस[2] से अब तक नाम ज़िन्दा है महब्बत का,
जिगर मे दर्द हूं दिल मे कलक हूं सर मे सौदा हूं।
तख़ल्लुस[3] 'नूह' है तूफान उठाना काम है मेरा,
अभी इसकी ख़बर तुमको नहीं मैं कौन हूँ क्या हूं।

× × ×

हम दुश्मनों से इश्क़ो महब्बत मे कम नहीं,
हमको दबा ले कोई अब ऐसे भी हम नहीं।
तुम सा मिज़ाजदार उदू[4] सा मिजाजदां[5],
कोई खुदाई भर में खुदा की कसम नहीं।
उनका हमारा शामो सहर[6] का सा हाल है,
हम हैं तो वो नहीं है जो वो है तो हम नहीं।
लिखने मे ख़त के वो युंही हीला किया किये,
कागज नहीं दवात नहीं है क़लम नहीं।
नाले दहन से निकले ये ललकारते हुए,
या आज आस्मां नहीं या आज हम नहीं।
हम इसको ख़ूब जानते हैं हम से पूछिए,
मरना भी इश्के यार मे जीने से कम नहीं।
जाती रही उमंग जवानी के साथ साथ,
वह बात हम मे आए कहा से वो हम नहीं।
हम इन के वास्ते हैं हमारे लिए ये हैं,

---

(१) बीमारी (२) सबब (३) उपनाम (४) दुश्मन (५) मिज़ाज परखने वाला (६) सवेरा।

हम भी नहीं अगर ग़मो रंजो अलम नहीं।
मैं क्या बताऊँ क्या तेरी महफ़िल का हाल है,
रहना यहां अहम[1] है न रहना अहम नहीं।
हमसे ये इजतिनाव[2] तुम्हारा फ़िज़ूल है,
तूफ़ान उठाएँ हम कोई वो 'नूह' हम नहीं।

× × ×

कूए जाना[3] में ये सामान नज़र आते हैं,
कहीं दुश्मन कहीं दर्बान नज़र आते हैं।
वो भी राजी हैं मुआफ़िक मेरी तकदीर भी है,
अब निकलते हुए अरमान नजर आते हैं।
जबसे रहता है तेरी ज़ुल्फ़ परीशां का ख़याल,
ख्वाब भी मुझको परीशान नजर आते हैं।
हाय ये हुस्न ये सूरत ये जवानी तेरी,
अब तो कुछ और ही सामान नजर आते हैं।
हम जगह किसको न दें किसको जगह दें यारब,
दिल में अरमान ही अरमान नज़र आते हैं।
कल जहां भीड़ हसीनों की नजर आती थी,
आज वो घर मुझे सुनसान नजर आते हैं।
अहबाब मुझपे कभी वो नजर आते ही नहीं,
नज़र आने को तो हर आन 'नजर आते हैं।
और सब कुछ भी नहीं दिल में दिखाई देता,
नज़र आते हैं तो अरमान नज़र आते हैं।
हज़रते 'नूह' का अब और कोई शग़ल नहीं,
साफ़ करते हुए दीवान[4] नज़र आते हैं।

(१) कठिन, (२) परहेज, (३) प्रियतम की गली, (४) कविताओं का सग्रह।

दग़ाबाज़ ज़ालिम सितमगर[1] तुम्हीं हो,
दिलाज़ार दिलदार दिलबर[2] तुम्हीं हो।
तुम्हारे सिवा और मैं किसको चाहूँ,
कि दुनिया में दुनिया से बढ़ कर तुम्हीं हो।
तुम्हीं ने चुराया मेरा दिल तुम्हीं ने,
तुम्हीं हो तुम्हीं मेरे दिलबर तुम्हीं हो।
अभी ली किसी ने मेरे दिल में चुटकी,
मगर हो न हो बन्दा[3] परवर[3] तुम्ही हो।
हज़ारों में क्या हम तो लाखों में कह दें,
सितमगर, सितमगर, सितमगर तुम्हीं हो।
वो अनजान बनकर ये कहना किसी का,
हमारे लिए 'नूह' मुज़तर[4] तुम्हीं हो।

× × ×

उड़के जलने के लिये जल के पिघल जाने को,
शमआ को आग मिली पर मिली परवाने को।
वही जाने वही समझे मेरे मयख़ाने को,
जिसने देखा हो छलकते हुए पैमाने को।
क्या नसीहत से गरज़ है तेरे दीवाने को,
जो समझते हैं वो आवे नहीं समझाने को।
ये है आना कोई जाना कोई मिलना कोई,
अभी आए हो अभी कहते हो घर जाने को।
सातवें आठवें दिन हम कभी आते जाते,
दूर से देख लिया करते हैं बुतख़ाने को।
इस तरफ़ हम भी हैं तैय्यार निकलने के लिए,

(१) ज़ालिम, (२) प्रियतम, (३) श्रीमान, (४) बेचैन।

उस तरफ़ आप भी आमादा हैं घर जाने को।
देख ले ग़ौर से गर्दिश[1] मे तेरी आंखों को,
जिसने देखा हो न चलते हुए पैमाने को।
हर घड़ी लब[2] पे रहा करते हैं अशआरे[3] फ़िराक़,
याद है 'नूह' का दीवां तेरे दीवाने को।

× × ×

अगर उसका मेरा झगड़ा यही तै हो तो अच्छा हो,
ख़ुदा जाने ख़ुदा के सामने कल क्या न हो क्या हो।
न उल्फ़त हो न आफ़त हो न शिकवा हो न झगड़ा हो,
बुरा उनको जो अपने दिल मे हम समझे तो अच्छा हो।
तुम्हारे वादए फ़रदा[4] पे क्यों कर एतबार आये,
घड़ी मे कुछ घड़ी मे कुछ अभी क्या थे अभी क्या हो।
महब्बत मे हज़ारों ज़ुल्म लाखों रंज होते हैं,
मुनासिब तो यही अब है न मै चाहूँ न तुम चाहो।
वो हरदम की अयादत[5] से मेरी घबरा के कहते हैं,
ग़ज़ब मे जान है अपनी न मर जाये न अच्छा हो।
वो फ़रमाते हैं मुझको देख कर मै यूं न मानूँगा,
अगर यह 'नूह' है तूफ़ान उठाये गर्क़[6] दुनिया हो।

× × ×

मेरा दिल देखो अब या मेरे दुश्मन का जिगर[7] देखो,
तुम्हारे बस मे आंखे हैं जिधर चाहो उधर देखो।
ये मै कहता ही जाऊंगा मुझे भी इक नज़र देखो,
न मानो या इसे मानो न देखो वा इधर देखो।

---

(१) चलना फिरना, (२) ओंठ, (३) बिरह की कविता, (४) कल का वादा, (५) बीमार को देखने जाना, (६) डूबना, (७) कलेजा।

क़यामत में न मेरे मुंह से फिर फरियाद निकलेगी,
अगर ये कह दिया उसने यहां आओ इधर देखो।
लुटाते हैं वो जब मेरे जिगर को तिरछी चितवन से,
तड़प कर दिल ये कहता है इधर भी एक नज़र देखो।
तुम्हारे नाम पर मर मिटने वाला कौन है मैं हूँ,
अगर सोचो अगर समझो अगर मानो अगर देखो।
जो कहता हूं फ़ना[1] के बाद सब को चैन मिलता है,
तो वो कहते हैं फिर अब देर क्या है तुम भी मर देखो।
तुम अपने जी के मालिक हो तुम्हारा कौन मालिक है,
जहां चाहो वहां जाओ जिधर चाहो उधर देखो।
निगाहे शोख़[2] कैसी है निगाहे शौक कैसी है,
तुम्हारी हम नजर देखें हमारी तुम नज़र देखो।
यही बस क्या ख़ुदाई[3] में ख़ुदाई भर से अच्छे हैं,
कोई घर और ताको 'नूह' कोई और घर देखो।

× × ×

कहता है कोई सुन के मेरी आहे रसा को,
पहचानते हैं हम भी जमाने की हवा को।
तुमने अभी देखा ही नहीं आहे रसा को,
मज़लूम की फ़रियाद को बेकस की दुआ को।
तामीर के दो हिस्से अगर हों तो मज़ा है,
इक मेरी फ़ुगां को मिले एक तेरी अदा को।
हर वक्त है उनसे ये जवानी का तक़ाज़ा,
शोख़ी से बदल डालिये अब अपनी हया को।
इज़हारे तमन्ना पे झुकी जाती हैं आखें,

(१) नाश होना; (२) चंचल; (३) संसार।

पूछे मेरे दिल से कोई इस खास अदा को।
ऐ 'नूह' अभी है मेरी फरियाद उन्ही से,
जब वो न सुनेंगे तो पुकारूँगा .खुदा को।

× × ×

यों न मेरी बात मानी जायगी,
.खूब जांची .खूब छानी जायगी।
क्या कहूं मै दिल की हालत आप से,
न न मनवाई न मानी जायगी।
उन से कुछ कहते हुए डरते हैं हम,
बात मानी या न मानी जायगी।
आते-आते राह पर वो आएँगे,
जाते-जाते बद्गुमानी जायगी।
उन से हम कह देंगे अपने दिलकी बात,
और क्या होगा न मानी जायगी।
सब मेरी बातें वो मानें क्या जरूर,
एक मानी इक न मानी जायगी।
दिल कहीं मुट्ठी से खुल कर गिर पड़ा,
हर गली की ख़ाक छानी जायगी।
उन को क्या जाने बुरा किस ने कहा,
सारी दुनिया मुफ्त सानी जायगी।
यह हमें ऐ 'नूह' क्या मालूम था,
जल्द दीवानी जवानी जायगी।

× × ×

मुझ से यों उस तुन्दख़ू[1] ने बात की,
दिन की पूछी तो बताई रात की।

(१) तेज़ मिज़ाज।

यों शबे ग़म दिल को बहलाते रहे,
कुछ इधर की कुछ उधर की बात की।
कोई तनहा रात काटे किस तरह,
और फिर वो रात भी बरसात की।
मुझ से अच्छा है मेरा पैग़ाम्बर,
मने इस से इस ने उस से बात की।
'नूह' हम भी कितने ख़ुशतक़दीर है,
ख़ूबरूयों से बसर औक़ात की।

× ×

आह 'नूह' गर कोई ऐ बुलबुले नाशाद की,
ख़ाक हो जायेगी जलकर झोंपड़ी सैय्याद की।
जो कोई आया अयादत[1] को दिले नाशाद की,
पहले देखा ग़ौर से फिर देख कर फ़रियाद की।
क़त्ल करना बेगुनाहों का कोई आसा नहीं,
गिर पड़ेगी हाथ से छुटकर छुरी जल्लाद की।
बाद मरने के भी मैं ठहरा न जम कर इक जगह,
क्या हवाए शौक़ ने मिट्टी मेरी बरबाद की।
वो अभी आने न पाए थे कि आ पहुंची अजल,
क्या कहूँ अल्लाह ने किस वक़्त मेरी याद की।
मन्त्र क्या इतने अमीरों का अकारथ जायगा,
ख़ैर अब मुझ को नज़र आती नहीं सैय्या की।
जिस को कहते हैं फ़सीहुल[3] मुल्क 'दाग़' देहलवी,
'नूह' ने सोहबत उठाई उस जगत उस्ताद की।

× ×

(१) मरीज़ को देखने जाना (२) कायरों (३) महाकवि 'दाग़' देहलवी का लक़ब।

उम्र भर हालत रही य आशिके नाशाद की,
जो कोई आया उसी के सामने फरियाद की।
कुछ हवा बिगड़ी है ऐसी गुलशने[1] इजाद की
बागबां भी ढूंढ़ता है नौकरी सैय्याद की।
मैंने देखी शक्ल जब उस बानिए बेदाद की,
पहले थामा दिलको फिरदिल थाम कर फरियादकी।
बात भी निकली मरे मुंह से तो वो कहने लगे,
फिर वही नाला किया फिर आपने फरियाद की।
हो अगर दो चार बातें तो कोई खत में लिखे,
खींच दूं तस्वीर मैं क्यों कर दिले नाशाद की।
'नूह' साहब है ग़नीमत हज़रते[2] 'अकबर' का दम,
मैं न भूलूंगा कभी सोहबत इलाहाबाद की।

× × ×

बज्मे दुश्मन मे भी हम को नही मिलता कोई,
ये तमन्ना थी कि मिलता कही मिलता कोई।
लुत्फ मिलने का तो जब था कहीं मिलता कोई,
सब से हम मिलते है हमसे नही मिलता कोई।
लोग कहते है किसी से नही मिलता कोई,
हम मिला लेते जो हमको कही मिलता कोई।
जिससे तुम मिलते हो वो खाक मे मिल जाता है,
यों जमाने मे किसी से नही मिलता कोई।

× × ×

---

(१) वाटिका (२) जनाब 'अकबर' इलाहाबादी से मतलब है।

हम तो जब उससे न मिलने की शिकायत करते,
उसको मिलने का भी मौका कहीं मिलता कोई।
दिल से मिलना तो जमाने मे है दुशवार बहुत,
ऊपरी दिल से भी हम से नहीं मिलता कोई।
खाक में मिल गए लेकिन न पता ख़ाक मिला,
कहीं होता तो किसी से कहीं मिलता कोई।
सैकड़ों मिलते है यों तो हमे मिलने वाले,
जिस से मिल जाए दिल ऐसा नहीं मिलता कोई।
मुझ को भी सारी ख़ुदाई की खबर रहती है,
मैं जहाँ ढूँढने जाता वहीं मिलता कोई।
ख्वाब मे भी मेरे आया तो न ठहरा दम भर,
कोई यों मिलता है जैसे नहीं मिलता कोई।
मुझ को अरमान तो मिलने का न बाकी रहता,
दो घडी ही के लिए गर कहीं मिलता कोई।
ये तग़ाफ़ुल[1] है बुरा शर्म बुरी नाज बुरे,
जैसे हम मिलते है हम से युँही मिलता कोई।
अब ये क्यों 'नूह' के मिलने से है इन्कार तुम्हे,
मिलने वाले से भी अपने नहीं मिलता कोई।

×　　　　×　　　　×

परवा नहीं करते हैं सितमगार[2] किसी की,
खंजर न किसी का है न तलवार किसी की।
हरगिज न मिटे हसरते दीदार किसी की,
सूरत नजर आए भी जो सौ बार किसी की।
देखे तो कोई आँख उठाकर महे[3] नौ को,
जो झूलती है अर्श[4] पे तलवार किसी की।

---

(१) गफ़लत (२) ज़ालिम (३) नया चांद (४) आकाश।

पहलू से तो जाते हो मगर ये तो समझ लो,
अटकी नही रहती मेरे सरकार किसी की।
वो अबरुए[1] पुरखम के इशारे सरे महफ़िल,
वो छोटी सी चलती हुई तलवार किसी की।
देख ऐ निगहे शौक़ ये तेज़ी नहीं अच्छी,
छलनी कही हो जाय न दीवार किसी की।
कुछ क़त्ल का अरमान है कुछ ख़ौफ़ ख़ुदा का,
चलती भी है रुकती भी है तलवार किसी की।
ऐ 'नूह' न घबराओ न घबराओ, न घबराओ,
फ़रियाद नही जाती है बेकार किसी की।

× × ×

मुझ से उन से जो क़यामत मे लड़ाई होती,
वो जिधर होते उधर सारी ख़ुदाई होती,
तेरे रहने के लिए और मकां कौन सा था,
मेरे दिल मे अगर इतनी न समाई होती।
तुम ने की जितनी बुराई वो भलाई ठहरी,
मै बुरा ग़ैर को कहता तो बुराई होती।
नामावर[2] को भी न कुछ भेद बताया हम ने,
बात जो मुँह से निकलती वो पराई होती।
तुमने ने पहलू मे न दुश्मन को बिठाया होता,
इस से बेहतर था क़यामत ही उठाई होती।
अश्क[3] ने सोज़े[4] जिगर को जो बुझाया भी तो क्या,
बात जब थी कि लगी दिल की बुझाई होती।

(1) टेढी भँवें (2) डाकिया (3) आँसू (4) जलन।

मुझ को दोनों से किसी ने भी न पूछा शबे हिज्र[1],
वो न आए थे मेरी मौत ही आई होती।
जैसी हाथों मे सफाई है तेरे ऐ कातिल,
काश ऐसी ही तेरे दिल मे सफाई होती।
दिल का जाना है तबीयत का भी आना यारब,
.खूबरुयों पे ये क्यों आई न आई होती।
'नूह' के मिलने से अगमाज[2] अगर आप को था,
उसको पर्दे से झलक भी न दिखाई होती।

× × ×

तमन्ना हो कि हसरत .खुद बखुद मुश्किल से निकलेगी,
जो तुम दिल से निकालोगे तो मेरे दिल से निकलेगी।
तमन्ना अपने दिल मे हम ने पैदा की है मर मर कर,
ये जिस मुश्किल से आई है उसी मुश्किल से निकलेगी।
कोई ऐसा ठिकाना और उसको मिल नहीं सकता,
कभी रौनक न उस महफिल की उस महफिल से निकलेगी।
किसी के वस्ल का अरमां किसी के दीद की हसरत,
न मेरे दिल से निकलेगा न मेरे दिल से निकलेगी।
तेरी हसरत न निकलेगी ये क्या तुम मुझ से कहते हो,
निकलने को तो निकलेगी मगर मुश्किल से निकलेगी।
जो ये निकले तो हो उम्मीद उसके भी निकलने की,
न दिल पहलू मे निकलेगा न हसरत दिल से निकलेगी।
निकलना क्या हमारी आरज़ू का कोई आसा है
बड़ी दिक्कत बड़ी जहमत बड़ी मुश्किल से निकलेगी।
ये गरदाबे महब्बत है वो था तूफान पानी का,
जनाबे 'नूह' की कश्ती बड़ी मुश्किल से निकलेगी।

× × ×

(१) विरह की रात (२) खिचना (३) भँवर।

बुतों का दिल कभी जाकर हिला नही आती,
हमारे काम हमारी दुआ नही आती।
जो भोले भाले हैं कोई अदा नहीं आती,
वफ़ा तो क्या उन्हे पूरी जफ़ा नहीं आती।

हमारे साथ वफ़ा कर के तुम दिखा दो उन्हें,
जो लोग कहते हैं तुम को वफ़ा नही आती।
.खुदा की शान है हम पर वो .जुल्म करते हैं,
कि जिनको बात भी करनी जरा नही आती।

ये क्या खबर हमे उसको असर मिला न मिला,
फ़लक[1] से फिर के हमारी दुआ नहीं आती।
मरीजे इश्क को बातों मे टालता है तबीब[2],
यही न कह दे कि मुझको दवा नही आती।

कमर से खींच के खंजर वो बोले फिर तो कहो,
बग़ैर हुक्मे इलाही कज़ा नही आती।
शराब पीता है मस्जिद मे बैठकर ऐ 'नूह'
हया जरा भी तुझे बेहया नहीं आती।

× × ×

क्या कहूं मै तेरी रफ्तार की सूरत क्या है,
लोग कहते हैं कयामत है कयामत क्या है।

बात इक होनी थी वो हो गई नादानी मे,
मुझसे अब उनको शिकायतकी शिकायत क्या है।
कभी वो मांगते हैं हम से हमारे दिल को,
कभी कहते है हमे इस की जरूरत क्या है।

---

(१) आकाश- (२) दवा करने वाला।

जिस तरह गुजरा है दिन ये भी गुजर जायेगी,
हम सलामत है अगर तो शबे फुरकत[1] क्या है।
आपको हुस्न दिया मुझको दिया आपका इश्क,
इसमें क्या जानिए अल्लाह की हिकमत क्या है।

उस पे मरता नहीं मरता है जमाना जिस पर,
सारी दुनिया से अलग मेरी तबीयत क्या है।

जब वो आईने मे देखे कभी सूरत अपनी,
कोई आईने से पूछे तेरी सूरत क्या है।
'नूह' को देते है दरबार में कुर्सी हुक्काम[2],
तुमको मालूम भी है कुछ मेरी इज्जत क्या है।

× × ×

दुश्मन से मुहब्बत का गुमां .खूब नही है,
हा .खूब समझ लीजिये हा .खूब नहीं है।
जिसमे नहीं समां हो वो है किस कामकी महफिल,
हो लुत्फ न जिस मे वो समा .खूब नहीं है।

पहले कहीं जाने से तुम इतना तो समझ लो,
ये .खूब जगह है ये मका .खूब नहीं है।
हर तरह मुहब्बत मे है आशिक की खराबी,
ये दर्द अयां[3] हो कि निहां .खूब नहीं है।

हर काम को दुनिया मे है मौक़े की जरूरत,
ये .खूब कहा है ये कहां .खूब नहीं है।
घुल जायगा रोने से हमारा तनेखाकी,
बरसात मे मिट्टी का मकां .खूब नहीं है।

(१) विरह की रात, (२) हाकिम लोग, (३) प्रकट।

ऐ 'नूह' कहाँ दिल के सिवा उनको जगह दूँ,
वो कहते हैं छोटा सा मकां ख़ूब नही है।

× × ×

मिलने के वास्ते तो वो यों बारहा मिले,
दिल से मिले तो मिलने का मुझको मजा मिले।
हसरत जुदा मलाल जुदा गम जुदा मिले,
सब कुछ तो मिल गया मुझे अब और क्या मिले।
दोनों तरफ़ से चाहिये उल्फत की छेड़ छाड़,
जब तुम मिलो न दिलसे तो दिल तुमसे क्या मिले।
लब पर उदू का ज़िक्र है दिल मे उदू की फ़िक्र,
आये तो क्या वो आये मिले भी तो क्या मिले।
लिक्खा नसीब का जो मिला तो भी क्या मिला,
मिलना तो है वही अगर इससे सिवा मिले।
ऐ 'नूह' ये उसूल है अपना बक़ौले[1] 'दाग',
कोई खिचा खिंचे कोई हम से मिला मिले।

× × ×

हमारा कुछ है तेरा कुछ बयाँ है,
कयामत मे कयामत का समाँ है।
वही जल्वा इधर भी है उधर भी,
जमीं जिसकी है उसका आस्मां है।
जो बदले जो कभी हरगिज न बदले,
ये मेरा दिल है वो तेरी जबां है।
वो कहते हैं जरा मै भी तो देखूं,
महब्बत आप के दिल मे कहाँ है।

---

(१) कहने के अनुमार।

पता दिल का मिले क्या बेख़ुदी मे,
यहाँ है या वहाँ है या कहाँ है।
वो मेरे दिल से रहते क्यों नहीं है,
ये क्या कोई किराये का मकाँ है।
वो आये मेरे घर ऐसा कहाँ मै,
मिले वो ये मेरी किस्मत कहां है।
हुई रुख़सत जवानी की उमँगे,
वो अगला जोश अब दिल मे कहां है।
हमे कहने की हाजत क्या है ऐ 'नूह',
हमारा हाल सूरत से अयां है।

× × ×

बाद[1] फना भी ख़ाक हमारी सफ़र मे है,
इस रहगुजर[2] मे है कभी उस रहगुजर मे है।
हम जानते थे आँख मे घर है निगाह का,
लेकिन तुम्हारी आँख हमारी नजर मे है।
दर्दे फिराक भी कभी जम कर न रह सका,
ये मेरे दिल मे है कभी मेरे जिगर मे है।
मालूम हो गया हमे मालूम हो गया,
कुछ मोहनी भी आपकी तिरछी नजर मे है।
दोनों को एक तीरे नजर ने लुटा दिया,
आधा अगर है दिल मे तो आधा जिगर मे है।
क्यों जायँ हम यहां से कहीं हम न जायँगे,
दोनो जहाँ का लुत्फ़ तेरी रहगुज़र मे है।
देखेंगे आप दर्दे महब्बत को जिस तरह,
ये जिस के दिल मे है ये उसी की नज़र मे है।

---

(1) मरने के बाद (2) रास्ता।

दोहरा मकाँ मिला तेरे तीरे निगाह को,
पहलू में है जिगर वो हमारे जिगर में है।
ऐ तैश[1] 'नूह' पर निगहे लुत्फ चाहिए,
सब कुछ ख़ुदा के फ़ज़्ल[2] से मौजूद घर में है।

× × ×

खुलता नहीं तेरी निगहे लुत्फ किधर है,
ये कोई नजर है कोई अन्दाजे नजर है।
अक्सर यही कहकर मुझे दरबान ने टाला,
ये घर नहीं उनका ये किसी और का घर है।
आगाजे महब्बत में न अंजाम को सोचे,
अब हाय जिगर हाय जिगर हाय जिगर है।
दिल दूँ कि न दूँ मैं उन्हें चाहूँ कि न चाहूँ,
इस पर भी नजर है मेरी उस पर भी नजर है।
हम आंख मिलाते ही समझ लेते हैं दिल में,
ये कह[3] कि चितवन है ये उल्फत की नजर है।
मैं उनको बुलाता हूं तो कहते हैं बिगड़ कर,
तुम आओ मेरे पास मेरा पास[4] अगर है।
अगयार सहें ज़ुल्म कभी सह नहीं सकते,
ये दिल है हमारा ये हमारा ही जिगर है।
ऐ 'नूह' खुदा सब को हर आफत से बचाए,
तेरा नहीं डर हां तेरे तूफान का डर है।

× × ×

इश्क में कम या सिवा कुछ आरजू दरकार है,
तुमको मैं दरकार हूं तो मुझको तू दरकार है।

---

(१) जनाब नूह साहब के एक मित्र हैं, (२) कृपा, (३) गुस्से, (४) ध्यान।

मांगता हूँ मैं तुझी को तुझसे ऐ रब्बे करीम[1],
और मुझको कुछ नहीं दरकार तू दरकार है।
अब हमें गरदन से अपना सर जुदा करना पड़ा,
वो ये फरमाते हैं थोड़ा सा लहू दरकार है।
ये जो मेरे पास है इसको तो वह ले जायंगे,
इक नया दिल और मुझको फालतू दरकार है।
कुछ निकलने के लिए हो कुछ हो रहने के लिए,
खानए दिल में हुजूमे[2] आरजू दरकार है।
इश्क़ की दौलत कभी घर बैठे यों मिलती नहीं,
आरज़ू है शर्त इसकी जुस्तजू दरकार है।
'नूह' साहब दुख़्तरेरज़[3] से न रखिये रस्मो राह,
आप जैसे नेकरू को नेक[4] ख़ू दरकार है।

× × ×

अब ये सलूक हुस्नो मुहब्बत में रह गए,
मुझ को बुरा भला वो मेरे मुंह पे कह गए।
कल ख्वाब में जो मुझसे वो मिलने को कह गए,
इतनी बलाएँ ली कि मेरे हाथ रह गए।
रहते थे मेरे दिल में बड़ी आबरू के साथ,
हसरत उन आंसुओं पे जो आँखों से बह गए।
हम और आस्मान से दबते मुहाल था,
उसका भी जुल्म आपकी ख़ातिर से सह गए।
अब तर्क रस्मो राह का मुझको गिला नहीं,
जो बात साफ़ साफ़ थी मुझसे वो कह गए।

(१) ईश्वर, (२) इच्छाओं की भीड़, (३) शराब, (४) अच्छी आदत वाला।

अब तेरे पास में कभी हरगिज़ न आऊँगा,
ऐ 'नूह' चलते-चलते वो मुझ से ये कह गए।

× × ×

कभी साँस आती है सीने मे कभी जाती है,
ये घड़ी वो है कि बेकूक चली जाती है।
कह दो नासेह[1] से खुदा के लिए खामोश रहे,
कहीं बातों से लगी दिल की बुझी जाती है।
हो गई लड़ने झगड़ने की तुम्हारी आदत,
वही हुज्जत वही तकरार चली जाती है।
शिकवए गैर पे क्यों आप बिगड़ जाते है,
बात कहने की जो होती है कही जाती है।
सुन ले पैगाम जवानी भी ठहर कर कासिद,
तेरी जल्दी मे मेरी बात रही जाती है।
हिज्र[2] की बात है ऐसी कि इलाही तोबा,
न कही जाती है हम से न सुनी जाती है।
क्या सखावत[3] है मेरे पीरेमुगां[4] मे ऐ 'नूह',
इतनी देता है कि मुझ से नही पी जाती है।

× × ×

मतलब समझ मे आए न मेरे सवाल के,
कासिद से पूछते है वो मानी विसाल[5] के।
रख दे हजार कोई कलेजा निकाल के,
लाएं खयाल मे वो नही इस खयाल के।

---

(१) नसीहत करने वाला, (२) विरह, (३) दान करना, (४) मदिरालय का मालिक, (५) मिलाप।

वो और अहदे वस्ल फिर उसका यक़ीं बेसूद[१]
दुनिया से लोग कम हैं हमारे ख़याल के।
बदनामियों का ख़ौफ़ है रुसवाइयों का डर
वो लेंगे दिल मेरा कोई पहलू निकाल के।
ज़ाहिद[२] को अपने ज़ुह्द[३] का क्या क्या ग़ुरूर था,
जन्नत से हम गए उसे दोज़ख़ में डाल के।
ये मैंने कब कहा न मेरा दम निकालिए,
इसको निकालिए मेरी हसरत निकाल के।
नज़रों के लड़ते ही मेरी तक़दीर लड़ गई,
दिल उस के दिल में डाल दिया आँख डाल के।
क्यों मैंने उनको देख लिया इस क़ुसूर पर,
अब चैन लेंगे वो मेरी आँखें निकाल के।
ऐ 'नूह' और दो उन्हें पहलू में तुम जगह,
सीने से ले गए वह कलेजा निकाल के।

× × ×

ये माना कुछ न करते मेरी हालत देख तो लेते,
वो सच्चा इश्क़ या झूठी मुहब्बत देख तो लेते।
हमारा सर जुदा तुम क्या करोगे इस नज़ाकत पर,
ज़रा अपने से पहले इतनी ताक़त देख तो लेते।
बला से जान अपनी क़त्लगाहे नाज़ में जाती,
मगर जी भर के उस ज़ालिम की सूरत देख तो लेते।
न करते या दवा करते मेरे दर्दे मुहब्बत की,
वो दिल पर हाथ रखकर दिल की हालत देख तो लेते।
जनाबे 'नूह' तोबा तोबा मयख़्वारी[४] से करते हैं,
किसी दिन वो भी पीकर इसकी लज़्ज़त देख तो लेते।

---

(१) [illegible] (२) पंडित, (३) पंडिताई, (४) मदिरा पान।

पार होना मेरे बेड़े का बहुत मुश्किल है,
नाव मंझधार में है दूर अभी साहिल[1] है।
कूचए यार में पामाल हमारा दिल है,
सच तो य है कि ये कम्बख़्त इसी काबिल है।
अर्सए[2] हश्र से कुछ और ही सजमा निकला,
हम तो ये जान के आए थे तेरी महफ़िल है।
दिल गया जान गयी चैन गया नींद गई,
क्या तेरे इश्को महब्बत का यही हासिल है।
.खुदसताई[3] से बुरा और कोई ऐब नहीं,
जो न कामिल कहे अपने को वही कामिल है।
क्यों न हम इसको कलेजे से लगाए रक्खें,
जिसपर उनका भी दिल आया है ये दिलवो दिल है।
दो घडी एक जगह चैन से रहता ही नहीं,
बर्क़[4] कहते है जिसे सब वो किसी का दिल है।
'नूह' को फ़िक्रे सो.खुन[5] से कभी .फ़ुरसत ही नहीं,
कागज इक हाथ में है दूसरे में पेन्सिल है।

× × ×

कभी पहलू में न आयेंगे न आने वाले,
याद रक्खें ये जरा दिल के लगाने वाले।
यों ही बिगड़ोगे, तो इक रोज बिगड़ जायगी,
तुम बड़े आये मेरे दिल के सताने वाले।
आशिकों पर वो सितम करके ये फरमाते हैं,
दिल्लगी समझे है क्या दिल के लगाने वाले।

---

(१) किनारा (२) प्रलय का बाजार (३) अपनी प्रशंसा करना (४) बिजली (५) कविता करना।

वाद रंजिश के महव्वत का जताना कैसा,
अब नहीं आप के फिक्रों मे हम आने वाले।
'नूह' को हश्र के दिन भूल न जाना हजरत[१],
इक तुम्हीं हो मेरी विगड़ी के बनाने वाले।

× × ×

ख़ूबरू[२] है वो चुलबुला भी है,
ये जहां सब है बेवफा भी है।
क्यों न इन्साफ़ हश्र मे होगा,
क्या तुम्हारी तरह ख़ुदा भी है।
हर तरफ़ शोर है मेरे दिल का,
कहीं कम्बख़्त का पता भी है।
हम नहीं अपने कौल से फिरते
जो कहा है वही किया भी है।
'नूह' पीते हो मैकदे[३] से शराव,
और दावाए इत्तका[४] भी है।

× × ×

गुलजार[५] मे ये कहती है बुलबुल गुले[६] तर से,
देखे कोई माशूक को आशिक की नजर से।
मर कर ही उठे हम तो उठे कावे के दर से,
अल्लाह के घर जायेंगे अल्लाह के घर से।
तो और सुनो कहते हैं वो हम से विगड़ कर,
देखो हमें देखो न महव्वत की नजर से।
वो उट्ठी वो आई वो घटा छा गई साकी,
मैखाने पे अल्लाह करे टूट के वरसे।

---

(१) हजरत मुहम्मद साहब से मतलब है (२) सुन्दर (३) शराव खाना (४) पवित्रता (५) बाग (६) फूल।

दिल का कोई ख़्वाहां[1] है जिगर का कोई तालिब,
किस किस को बचाता रहूँ किस किस की नज़र से।
बस ताक लिया है शबे ग़म ने मेरे घर को,
क्या जानिये आ जाती है कम्बख़्त किधर से।
मिलने का नहीं है कभी लड़ने की नहीं है,
वो दिल मेरे दिल से वो नज़र मेरी नज़र से।
ऐ 'नूह' तुम इक और ग़ज़ल पढ़ के सुनाओ,
लेनी हो अगर दादे हुनर अहले हुनर से।

× × ×

सूरत कोई अच्छी जो गुज़रती है नज़र से,
बेसाख़्ता[2] इक आह निकलती है जिगर से।
नाज़ुक है कहीं बढ़ के मेरे तारे नज़र से,
क्या कत्ल पे बांधेगे वो तलवार कमर से।
मैख़ाने पे घनघोर घटा छाई है बेकार,
खुलना हो तो खुल जाय बरसना हो तो बरसे।
दुनिया मे किसी काम की जहमत नहीं होती,
य बेहुनरी ही मेरी अच्छी है हुनर से।
इस ख़ौफ़ से मिल लेते है वो 'नूह' से अकसर,
तूफाँ न उठाए यह कहीं दीदए[3] तरसे।

× × ×

क्यों आपको ख़िलवत[4] मे लड़ाई की पड़ी है,
मिलने की घड़ी है कि ये लड़ने की घड़ी है।
क्या चश्मे[5] इनायत का तेरी मुझ को भरोसा,
लड़ लड़ के मिली है कभी मिलमिल के लड़ी है।

(१) इच्छुक, २) अकस्मात, (३) आँखों से, (४) अकेले,
(५) कृपा-दृष्टि।

ये दिन भी किसी तरह कयामत से नहीं कम,
एक एक बरस हिज्र की एक एक घड़ी है।
ये मिलने के आसार[1] लगावट की हैं बातें,
वो आंख लड़ी क्या मेरी तकदीर लड़ी है।
जाते हैं मेरे घर से वो अब गैर के घर मे,
आफत का है ये वक्त, कयामत की घड़ी है।
हर एक जगह दुख्तरेरज़[2] का है जुदा रंग,
छोटों मे ये छोटी है बड़ों मे ये बड़ी है।
हँसना वो तुम्हारा है कि बिजली का चमकना,
रोना ये हमारा है कि सावन की झड़ी है।
तलवार लिए वो नहीं मकतल मे खड़े हैं,
इस वक्त मेरे आगे मेरी मौत खड़ी है।
चलते हुए बालीं[3] से वो मुझ को यह सुना कर
कम्बख्त के मरने मे अभी देर बड़ी है।
हरजाई है तुझ से भी तेरी आंख जियादा,
लाखों से यह अटकी है हज़ारों से लड़ी है।
जीने नहीं देते है वो मरने नहीं देते,
ऐ 'नूह' मेरी जान कशाकश[4] मे पड़ी है।

× ×

क्या हमीं पैदा हुए हैं गम उठाने के लिए,
सारी दुनिया के लिए सारे जमाने के लिए।
शमए[5] रोशन की ज़रूरत कुछ शबे हिजरा न थी,
ये भी आई है हमारा जी जलाने के लिए।
शेख की तसबीह[6] गोया मुफलिसी की है दलील,

(१) पहचान (२) मदिरा (३) सिरहाना (४) खींचतान (५) दीपक (६) माला।

रात दिन ये मर रहे हैं दाने दाने के लिए।
दूसरा है कौन किस से कहिए किस्सा हिज्र का,
मैं ही सुनने के लिए मैं ही सुनाने के लिए।

ये भी दिन अल्लाह का है वो भी दिन अल्लाह का,
अच्छे दिन की शर्त क्या मिलने मिलाने के लिए।
मौत आई भी शबे[1] फुर्क़त तो गुजरा ये ख़याल,
उसने भेजा आदमी मेरे बुलाने के लिए।

दिल गया अच्छा हुवा तुमने लिया मैंने दिया,
इश्क में ये चीज होती है गँवाने के लिए।
ग़म किसी का हो मगर रोने से मुझको काम है,
'नूह' मैं दुनिया में हूं तूफ़ान उठाने के लिए।

× × ×

क्या नहीं जानते सामान के रोने वाले,
खाक पर सोते हैं तकियों में बिछौने वाले।
आज वो गोरे ग़रीबां[2] पे हैं रोने वाले,
कसमसा कर कहीं जाग उट्ठें न सोने वाले।

वो मेरी लाश को ठुकरा के ये फरमाते है,
हम ने देखे नहीं ऐसे कहीं सोने वाले।
रोज़ इक लाश निकलती है तेरे कूचे से,
अब तो उजरत[3] पे भी मिलते नही रोने वाले।

मैंने जाना किसी आशिक का जनाज़ा उट्ठा,
कहीं दस बीस नजर आए जो रोने वाले।
देख कर 'नूह' को ये ग़ैर से इर्शाद[4] हुआ,
है यहीं सारे ज़माने के डुबोने वाले।

---

(१) विरह की रात, (२) क़ब्र (३) किराये पर, (४) कहना।

हर तलबगार[1] को मेहनत का सिला मिलता है,
बुत है क्या चीज़ कि ढूंढे से ख़ुदा मिलता है।
क्या कहूं मैं कि मुझे इश्क़ में क्या मिलता है,
ग़म जुदा मिलता है आज़ार[2] जुदा मिलता है।
वो जो इन्कार भी करते हैं तो किस नाज़ के साथ,
मुझको मिलने का न मिलने में मज़ा मिलता है।
ये कुदूरत[3] ये अदावत ये जफ़ा ख़ूब नहीं,
मुझको मिट्टी में मिला कर तुम्हें क्या मिलता है।
हमने ये बात महब्बत में निराली देखी,
रोज़ गुम होता है दिल रोज़ नया मिलता है।
शर्त है इश्क़े हक़ीक़ी के लिए इश्क़े मजाज़,
ये वसीला कहीं बन्दे को ख़ुदा मिलता है।
ग़म हो या ऐश[4] हो हर हाल में ख़ुश हूं यारब,
जो मुझे मिलता है तेरा ही दिया मिलता है।
क्यों न मेरा दिले गुमगश्ता[5] मिलेगा मुझको,
ढूंढने वाले को क्या जानिए क्या मिलता है।
लुत्फ़ मिलने का है उस वक़्त कि वो दिल से मिले,
ऊपरी दिल से जो मिलता है तो क्या मिलता है।
'नूह' हम को नज़र आया न यहां बुत भी कोई,
लोग कहते थे कि काबे में ख़ुदा मिलता है।

× × ×

ग़ैर का इश्क़ है कि मेरा है,
साफ़ कह दो अभी सवेरा है।
दिल न वापिस कभी वो देंगे मुझे,
किस ने ले कर ये माल फेरा है।

---

(१) [illegible] (२) दुःख (३) [illegible] (४) सुख (५) खोया हुआ।

थां कभी दिल से हसरतों का हुजूम,
अब यहां दर्दो गम का डेरा है।
सब ये झगड़े हैं रस्मे उल्फत तक,
मैं न तेरा हूं तू न मेरा है।

इश्क से कुछ नजर नहीं आता,
जिस तरफ़ देखिए अँधेरा है।
दैरो[1] काबे मे उसको ढूँढ चुके,
सातवां आठवाँ यह फेरा है।

दिल मे रहता है दर्दोग़म का हुजूम[2],
एक को सैकड़ो ने घेरा है।
क्यों न तूफान उठाऊँ अश्कों[3] से,
'नूह' मैं हूं ये काम मेरा है।

× × ×

ज़ुबाँ पे राज़ महब्बत को ला नही सकते,
हम उनकी बात उन्ही से बता नही सकते।
कभी झलक कभी जल्वा दिखा नही सकते,
वो सब के सामने महफिल मे आ नहीं सकते।

इलाज इश्क का मुश्किल है सख्त मुश्किल है,
ये दर्द वो है जिसे हम मिटा नही सकते।

वो अपने अहदे जवानी की कद्र क्यों न करें
ये ऐसी शै है जिसे खो के पा नही सकते।
यही सबब है जो मरना मुझे क़बूल नही,
वो मेरी मौत का सदमा उठा नहीं सकते।

(१) मन्दिर, (२) भीड़, (३) आँसुवों।

वो आएंगे तो निगेहवां भी साथ आएगा,
हम इस ख़याल में उन को बुला नहीं सकते।
वो अब के साल ज़माने में कहते यारों है,
कि 'नूह' भी कोई तूफ़ां उठा नहीं सकते।

× × ×

माँगते हैं पनाह सब जिस से,
हाय मेरी नज़र लड़ी किस से।
कौन सी बज़्म[1] बढ़ के है इस से,
हम कहां जायें तेरी मजलिस से।
सत्तियानास हो कहीं दिल का,
बन गई मेरी जान पर इस से।
दुश्मनी उसने की हमारे साथ,
दोस्ती की उमीद थी जिससे।
सबसे करते हो हश्र[2] का वादा,
एक दिन में मिलोगे किस किस से।
'नूह' रोते हैं इश्क़ में नाहक़,
कहीं बुझती है दिल की आग इससे।

× × ×

हुस्न की जिसमें शान होती है,
उसमें क्या आन बान होती है।
कोई ले जाय अब कहां दिल को,
हर जगह छीन छान होती है।
दिलें आशिक़ में हसरतें माशूक़,
दूसरी एक जान होती है।

(१) सभा, (२) प्रलय।

क्यो वो दुश्नाम[1] मुझको देते है,
सबके मुँह मे जबान होती है।
कुछ हुवा और मर गए उश्शाक़,
फ़ालतू इन की जान होती है।
किस को ताक़त है आह करने की,
बोलने मे तकान होती है।
हम तो ऐ 'नूह' उस पे मरते है,
जिस मे कुछ आन बान होती है।

× × ×

मुझ से क्यों मिलते नहीं बरसात है,
अब तो खुल खेलो अंधेरी रात है।
कोई क्या आये तुम्हारे सामने,
पहले गाली है तो पीछे बात है।
वो ये कहते है कि तड़का हो गया,
मै ये कहता हूं कि आधी रात है।
दिल जो मै ने उनको भेजा तो कहा,
कौन ये ऐसी बड़ी सौगात है।
हूर ज़ाहिद ही को महशर मे मिले,
'नूह' साहब ये भी कोई बात है।

× × ×

ज़माने भर को क्या क्या झूठी सच्ची बदगुमानी[2] है,
हमारी भी जवानी है तुम्हारी भी जवानी है।
जिगर मे सोज़[3] दिल मे दर्द लब पर हर घड़ी नाले,
इसी का नाम क्या दुनिया मे यारब ज़िन्दगानी है।

---

(१) गाली (२) बुरा ख़याल (३) जलन।

बजा है जिस क़दर हो नाज़ तुमको अपनी सूरत का,
जवानी भी जवानी और उस पर नौजवानी है।
ज़माने में हमेशा कोई ज़िन्दा रह नहीं सकता,
जनाबे ख़िज़्र को भी आख़िर इक दिन मौत आनी है।
न मैं ऐ 'नूह' काबिल हूँ, न मैं ऐ 'नूह' कामिल हूँ,
जो मुझ को मानते हैं सब ये उन की मेहरबानी है।

× × ×

अलम के वास्ते मैं हूँ उदू ख़ुशी के लिए,
कोई किसी के लिए है कोई किसी के लिए।
ये बात किस के लिए है नहीं किसी के लिए,
अदाएँ आप की हैं ख़ास आप ही के लिए।
ज़माने भर के ये झगड़े हैं जीते जी के लिए,
पसे फ़ना नहीं मरता कोई किसी के लिए।
वो पांव हैं जो चलें तेरी राह में यारब,
वो हाथ हैं जो उठें तेरी बन्दगी के लिए।
हमारे वास्ते तुम हो तुम्हारे वास्ते हम,
न हम किसी के लिए हैं न तुम किसी के लिए।
जो तुम से हम को मिला है जो चैन हमको मिला,
कि जान दे के मज़े हम ने आशिक़ी के लिए।
बहिश्त में भी न भूलेंगे कूए यार को हम,
वहां भी ख़ाक उड़ाएँगे उस गली के लिए।
हमें जो ग़म है तो इस ग़म का हमको ग़म भी नहीं,
कि हम उठाते हैं ग़म आपकी ख़ुशी के लिए।
कोई निशात अभी होने को रह गया तो नहीं,
वो मांगते हैं दुआ मेरी ज़िन्दगी के लिए।

(१) दुःख (२) मरने के बाद (३) आनन्द।

मिला जो कोई हसीं दिल उसी ने लूट लिया,
हमें ख़ुदा ने बनाया है क्या इसी के लिए।
वो ऐसे वक़्त जो मुझको मिला तो ख़ाक मिला,
कि उठ सकें न मेरे हाथ बन्दगी के लिए।
ये क्या कहा कि हमें 'नूह' का ख़याल नहीं,
उठा रहा है वह तूफ़ान आप ही के लिए।

× × ×

कभी कटने के लिए है कभी जलने के लिए,
नख़्ले[1] उम्मीद नहीं फूलने फलने के लिए।
अब उठा रखिए कोई चाल न चलने के लिए,
लीजिए लीजिए इस दिल को मसलने के लिए।
रंजो ग़म का है मेरे ख़ानए दिल में वो हुजूम[2],
हसरतें ढूँढती है राह निकलने के लिए।
या तो ख़ुद आएँ वो या भेज दें अपनी तस्वीर,
सूरतें हैं यही दो मेरे बहलाने के लिए।
'नूह' वो जाते हैं तो दिल को भी लेते जाएँ,
क्यों रहे ये मेरे पहलू में मचलने के लिए।

× × ×

तेग[3] है तीर है कटारी है
वो नजर सैकड़ों पे भारी है।
कूचए यार से चला आया,
मैंने जन्नत में लात मारी है।
अब्र उठा चर्ख़[4] पर तो मैं समझा,
किसी माशूक़ की सवारी है।

---

(१) पेड़ (२) भीड़ (३) तलवार (४) आकाश।

वो लगाते हैं दिल पे तीरे निगाह,
ये भी क्या कोई चांदमारी है।
ख़ाक होकर हमें हुवा मालूम,
कि अजब चीज ख़ाकसारी है।
'नूह' क्यों अपनी जान दे उन पर,
वो भी प्यारे हैं ये भी प्यारी है।

× × ×

मिला न आराम मुझ को दम भर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक[1] के नीचे।
इलाही मैं क्या करूँ ठहर कर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
न ज़िन्दगानी में लुत्फ़ उठाया,
न बाद मरने के चैन पाया।
ज़मीं के नीचे फ़लक के ऊपर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
अगर हैं दो चार शादो[2] ख़ुर्रम,
तो हैं हज़ारों मुलूलो[3] ग़मगीं।
अलग ज़ियादा ख़ुशी है कमतर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
ये तुन्दख़ू[4] है वो कीनाजू है,
इसे है कीना उसे है रंजिश।
कोई बनाएगा किस लिए घर,
ज़मीं के ऊपर फ़लक के नीचे।

---

(१) आसमान (२) प्रसन्न (३) दुःखी (४) तेज़ मिजाज।

हमारे नालों ने छान डाला,
कहीं न पाया निशॉ असर का।
जमीं के अन्दर फलक के वाहर,
जमीं के ऊपर फलक के नीचे।
न हद से बाहर कदम वढ़ाए,
न सर कभी भूल कर उठाए।
वशर[1] को रहना है सख्त दूभर,
जमीं के ऊपर फलक के नीचे।
वो दूसरी कौन सी जगह है,
जहॉ रहे हम जहां बसे हम।
जमीं से हट कर फलक से बचकर,
जमीं के ऊपर फलक के नीचे।
बहुत गनीमत है 'नूह' का दम,
ये बात कह देंगे लाख मे हम।
नहीं है ऐसा कोई सोखनवर[2],
जमी के ऊपर फलक के नीचे।

× × ×

अपने खंजर को मेरी गर्दन पे चलने दीजिए,
सैकड़ों मे एक तो हसरत निकलने दीजिए।
आप दरवाजे से क्यों चिलमन उठाते हैं अभी,
तालिबे[3] दीदार को पहले संभहलने दीजिए।
मेरी दिलसोजी बहुत दुश्वार है आसां नहीं,
आप क्यों जलते हैं मै जलता हूँ जलने दीजिए।
कत्लगाहे नाज मे अच्छा नहीं ये इज्तराब[4],
.खुद संभलिये और मुझ को भी संभहलने दीजिए।

---

(१) मनुष्य (२) कवि (३) दर्शक (४) वेचैनी।

जान कहता है न निकले मुँह से कोई बात भी,
आह कहती है मुझे दिल से निकलने दीजिए।
'नूह' साहब आप हैं रंजो अलम के वास्ते,
तीर चलने दीजिए तलवार चलने दीजिए।

× × ×

खिंचना नहीं है अच्छा टेढ़ी कमान वाले,
कुछ आनबान कम कर ऐ आनबान वाले।
जो हम कहें वो तुमसे जो तुम कहो वो हम से,
वरना लड़ा ही देंगे ये दरमियान वाले।
मुफ़लिस हो या तवंगर[1] आएगी मौत सबको,
नीचे ज़मीं के होंगे ऊँचे मकान वाले।
दुनिया में आह कब से कोई वहां न चौंका,
बहरे हैं क्या इलाही सब आसमान वाले।
हम लोग नए नए हैं हूरें हैं सब पुरानी,
ख़ुश होंगे उस जहां में क्या उस जहान वाले।
ऐ 'नूह' दुश्मनों से क्या दुश्मनी का शिकवा,
[illegible] हैं [illegible] के [illegible] अब ख़ानदान वाले।

× × ×

आशिक़ों के रूबरू अहले वफ़ा के सामने,
वो [illegible] न आएँगे ख़ुदा के सामने।
आसमां क्या है [illegible] उस कजअदा[2] के सामने,
है शिकायत [illegible] की बेवफ़ा के सामने।
सामने तो रोए तुम अपने ज़ुल्मे बेजा का जवाब,
ग़ुम न बन जाना कहीं जा कर ख़ुदा के सामने।

---

१. मालदार (२) [illegible]।

क्यों न आंधी में तने[1] लागर मेरा उड़ता रहे,
क्या हकीकत एक तिनके की हवा के सामने।
माँगना औरों से क्या वो आप जब मुहताज़ हों,
हाथ फैलाते हैं अपना हम ख़ुदा के सामने।
तुम को आना चाहिए तुम को न आना चाहिए,
आशना[2] के सामने ना आशना के सामने।
बावफा मैं हूँ कि तुम हो बेवफा तुम हो कि मैं,
फैसला हो जायगा इस का ख़ुदा के सामने।
किस को कहते है महब्बत नाम है किसका मिलाप,
अब न कहना ये कभी अहले वफा के सामने।
क्या न होगा हश्र मे भी उनका मेरा फैसला,
मै ख़ुदा का वास्ता दूँगा खुदा के सामने।
इक निगाहे शर्म ने वो लुत्फ सारा खो दिया,
पाँव शोख़ी[3] के नहीं जमते हया के सामने।
आगे पीछे आहो नाला दहिने बांए रंजो गम,
मै चला इस शान से अपने खुदा के सामने।
इस ग़ज़ल मे 'नूह' ये किस लुत्फ का है क़ाफिया,
बारहा[4] आया गया हूँ मै खुदा के सामने।

× × ×

माजराए शबे[5] फ़ुर्क़त कोई हम से पूछे,
हम पे जैसी है मुसीबत कोई हम से पूछे।
देख कर जलवागहे नाज़ मे जलवा उन का,
जो हमारी हुई हालत कोई हम से पूछे।

---

(१) दुबला बदन (२) मित्र (३) चञ्चलता (४) कई मरतबा (५) विरह की रात।

ग़ैर में होते हैं छुप छुप के इशारे क्या क्या,
उन की आँखों की शरारत कोई हम से पूछे।
लुत्फ़ के नाम से हम पर वो सितम करते हैं,
उनकी जैसी है इनायत कोई हम से पूछे।
उम्र भर इश्क़ में हम मुज़्तरो[1] बेताब रहे,
लज़्ज़ते दर्दे मुहब्बत कोई हम से पूछे।
'नूह' हम जानते हैं ख़ूब इन्हें जानते हैं,
ख़ूबरूयों[2] की हक़ीक़त कोई हम से पूछे।

× × ×

क्यों आप इलाजे दिले शैदा नहीं करते,
अच्छा नहीं करते अगर अच्छा नहीं करते।
अन्दाज़ो अदा ज़ुल्मो सितम नाज़ो तग़ाफ़ुल[3],
क्या क्या नहीं होता है वो क्या क्या नहीं करते।
दिल देंगे जो वापस कभी माँगा तो वो बोले,
माशूक़ पर इस तरह तकाज़ा नहीं करते।
दिल जाय कि सर जाय मुहब्बत में बला से,
उश्शाक़[4] किसी चीज़ की परवा नहीं करते।
हम को तो मिले जितने वो ज़ालिम ही मिले सब,
माशूक़ वफ़ा करते भी हैं या नहीं करते।
माशूक़ बने हो तो ज़रा ये भी समझ लो,
क्या क्या वो किया करते हैं क्या क्या नहीं करते।
ऐ 'नूह' न दुनिया में करो फ़िक्रे क़यामत,
आग़ाज़ तो अन्जाम[5] परदा नहीं करते।

---

(१) बे[illegible] (२) अच्छी सूरत वाले (३) गफ़लत (४) प्रेमी
(५) [illegible]।

वस्ल की रात भी क्या होती है,
फिर मुलाकात भी क्या होती है।
.खूब बन आती है मयख़्वारों[1] की
हाय बरसात भी क्या होती है।
कोई मिलता है झिजकता है कोई,
वो मुलाकात भी क्या होती है।
उस को बेख़ुद इसे बेताब किया,
आप की घात भी क्या होती है।
लुत्फ़ इस का कोई हम से पूछे,
चाँदनी रात भी क्या होती है।
मैंने देखा न कभी हूरों को,
दूर की बात भी क्या होती है।
'नूह' ये ख़त्म तो होती ही नहीं,
हिज्र[2] की रात भी क्या होती है।

× × ×

फितने[3] दबे दबाए थे जितने पड़े हुए,
बैठे कहीं जो तुम तो वो सब उठ खड़े हुए।
या तुझ को लेके जायँगे या मरके जायँगे,
मुद्दत हुई हमे तेरे दर पर पड़े हुए।
देते हो तुम फरेब मुझे अब .खुदा की शान,
मेरी नजर के सामने इतने बड़े हुए।
सुनते हैं बैठ कर वो कहां दिल का माजरा,
तमहीद[4] कुछ उठाई कि बस उठ खड़े हुए।
हासिल हमे कहाँ है वो अब लुत्फ़े ज़िन्दगी,
दिन काटते है बिस्तरे ग़म पर पड़े हुए।

---

(१) शराबी (२) बिरह (३) फसाद (४) भूमिका।

जल्वा है ज़र्रे ज़र्रे में खालिक[1] की जात का,
लेकिन मेरी नजर पे हैं पर्दे पड़े हुए।
ऐ 'नूह' दिल मे रह गई सब आरज़ूए दिल,
वो आ के बैठे बैठ के जल्द उठ खड़े हुए।

× × ×

कहाँ हम को मयस्सर दौलते दीदार होती है,
इधर हम उस तरफ़ वो बीच मे दीवार होती है।
तमाशा अरसए महशर[2] का है क्या दीद के काबिल,
फरिश्तों मे तुम्हारे वास्ते तकरार होती है।
कभी नीची नज़र को मैने उठते ही नहीं देखा,
इलाही किस तरह वो मेरे दिल के पार होती है।
जफ़ाए गैर का रुतबा सिवा है लुत्फ़ जाना[3] से,
जो ये इक बार होता है तो वो सौ बार होती है।
सलीक़ा चाहिए ऐ अहले उल्फ़त इश्क़बाजी को,
यही आसान होती है यही दुश्वार होती है।
ज़माना हो कि क़िस्मत ख़ल्क़[4] मे क्या एतबार इनका,
वो किस का दोस्त होता है ये किस की यार होती है।
महब्बत मे वफ़ा का जिक्र क्या लुत्फ़ो करम कैसा,
जो होती है कभी तो ज़ुल्म की भरमार होती है।
वही है इक निगाहे नाज़ लेकिन अपने मौक़े पर,
कभी नश्तर कभी नावक कभी तलवार होती है।
निगाहे नाज़ तो आख़िर निगाहे नाज ही ठहरी,
तेरी आवाज़ भी मेरे जिगर के पार होती है।

---

(१) [illegible] (२) प्रलय (३) प्रियतम (४) संसार।

दमे फिकरे[1] सोखन ऐ 'नूह' लाखों फूल खिलते हैं,
ग़ज़ल कहता हूं जिसमे वो ज़मी गुलज़ार[2] होती है।

× × ×

आ रहे हो बज़्मे[3] दुश्मन से मजे लूटे हुए,
कह रहे है साफ ये बन्दे क़बा टूटे हुए,।
हम असीराने[4] कफस जाएं चमन तक किस तरह,
पर भी है कतरे हुए बाजू भी है टूटे हुए।
इस ख़ुशी के साथ बज्मे ग़ैर का मज़कूर[5] है,
आ रहे हो जैसे तुम कोई जगत लूटे हुए।
रंग क्या क्या लाए मेरे दागे दिल ज़ख्मे जिगर,
चर्ख़ पर अंजुम[6] बने गुलशन[7] मे गुल बूटे हुए।
सोच रक्खा उसने ये अपने न मिलने का जवाब,
सर झुका कर इस क़दर कह देगे हम झूठे हुए।
जो रहे दिल मे वो आंसू आबले दिल के बने,
जो बहे आँखों से दामन पर वो गुल बूटे हुए।
'नूह' ने अब छोड़ दी है कुछ दिनों से ताक झांक,
है ये हज़रत सारी दुनिया के मजे लूटे हुए।

× × ×

कहां हम और दुश्मन मिल के दोनों कोई दम बैठे,
जो वो बैठा तो हम उट्ठे जो वो उट्ठा तो हम बैठे।
इलाही इस तरह कोई किसी कूचे मे कम बैठे,
जो हम बैठे तो जम कर सूरते नक्शे कदम बैठे।

---

(१) कविता करते समय, (२) बाग, (३) सभा, (४) बन्दी, (५) चर्चा, (६) तारा, (७) बाग।

रसाई[१] बाम[२] तक अपनी न होगी या कभी होगी,
ये पहरों सोचते हैं कूचए जानां मे हम बैठे।
जो निकला उनकी महफिलसे यही कहता हुआ निकला,
वो मेरे पास कम ठहरे वो मेरे पास कम बैठे।
मिली फुरसत हमे ताज़ीम से कब उनकी महफ़िल मे,
कोई उट्ठा तो हम उट्ठे कोई बैठा तो हम बैठे।
ये कोई शर्म कोई छेड़ कोई बदगुमानी है,
कहीं बैठे भी तो हट कर वह मुझ से दो कदम बैठे।
तसव्वर[३] मे मज़ा आता है क्या क्या दीदे जानां का,
हमारे आगे वो बैठे हैं उनके आगे हम बैठे।
वो किस अन्दाज़ से कहते हैं सुनकर दास्तां मेरी,
जहां पूछा किसी ने झेके ये तुम्हारे गम बैठे।
हवाए शौक मे उड़ता फिरा क्या क्या गुबार अपना,
कभी हम बैठकर उट्ठे कभी फिर उठ के हम बैठे।
कहाँ है इतनी फुरसत उनको अपनी शर्मो शोखी से,
बहुत बैठे किसी के पास गर वो कोई दम बैठे।
ये क़िस्मत के करिश्मे हैं ये ख़ूबी है मुक़द्दर[४] की,
'ख़िज़िर'[५] उठ जाय दुनिया से रहे ऐ'नूह' हम बैठे।

× × ×

आज़ारो[६] सितम क़हरो जफ़ा अब न दिखाए,
जो देख चुका हूं वो खुदा अब न दिखाए।
दुश्मन मे जो डर जाये तो ऐसे भी नही हम,
गुस्सा हमे अपना वो ज़रा अब न दिखाए।

---

(१) पहुंच, (२) कोठा (३) ध्यान, (४) तकदीर, (५) हजरत नूह के स्वर्गीय पुत्र का नाम है, (६) दुःख।

कोई भी बुरे वक़्त का साथी नहीं होता,
अल्लाह मुझे वक़्त बुरा अब न दिखाए।
मुझ से दमे रुख़सत ये किसी शोख़ का कहना,
कम्बख़्त तेरी शक्ल ख़ुदा अब न दिखाए।
मै चश्मे तसव्वर से उसे देख ही लूँगा,
जल्वा वो दिखाए मुझे या अब न दिखाए।
ऐ 'नूह' मिले फिर वों रक़ीबों[1] से बिछुड़ कर,
ये हमको न सुनवाए ख़ुदा अब न दिखाए।

× × ×

क्यों कोई मरे उस पर कोई उसे क्या चाहे,
आशिक को जफ़ा करके जो दादे जफ़ा चाहे।
सौ रंज दिए दिल को सौ दाग़ मिले मुझ को,
मै अब न तुझे चाहूँ मेरा जो ख़ुदा चाहे।
जो आए मेरे मुँह पर मैं उसको कहा चाहूँ,
जो आए तेरे दिल मे तू उसको किया चाहे।
क्यों रश्क न हो बाहम क्यो रंज न हो पैदा,
मैं उसको जुदा चाहूँ दिल उस को जुदा चाहे।
हम चाहते हैं उनको इतना भी न अब चाहे,
वो चाहते हैं हमको ये और सिवा चाहें।
क्यों हों न ख़ुशी हासिल क्यों ग़म न मिले ऐ दिल,
ऐसा भी हुआ चाहे वैसा भी हुआ चाहे।
गुजरात का वो जल्सा अहबाब[2] का वो मजमा,
ऐ 'नूह' निगाहों मे हर वक़्त फिरा चाहे।

× × ×

(१) दुश्मन (२) मित्रों।

मयस्सर जो न हो हुस्ने बुतां से,
इलाही मैं वो दिल लाऊं कहाँ से।
फ़िसाना फिर मोहब्बत का फ़िसाना,
कभी सुनिए इसे मेरी .ज़ुबां से।
शरफ़[1] बख़्शा ये किसके नक़्शे पा[2] ने,
.ज़मीं दबती नहीं है आस्मां से।
अजब आलम है मयख़्वारों[3] का आलम,
जुदा है ये जहां दोनों जहाँ से।
न दिलवाओ मुझे दुश्मन से ताने,
जो कहना हो कहो अपनी .ज़बां से।
उड़ाई ख़ाक यों दश्ते[4] जुनूं की,
.ज़मीं मिल गई है आस्मां से।
वो बिगड़े हम से अर्ज़े[5] मुद्दआ पर,
सुना जो कुछ सुना अपनी .ज़बां से।
कोई आता है छुप छुप कर तेरे घर,
लगाऊंगा पता मैं पासबां[6] से।
वो बरहम[7] हो गए कुछ और ऐ 'नूह'
न निकला काम फ़रियादो फ़ुगां से।

× × ×

किसी का जौर मेरी जान पर अभी से है,
फिर आगे होगा न क्या इस क़दर अभी से है।
हवास तेरे वहाँ जाके क्या रहेंगे बजा,
कि जब ये हाल तेरा नामावर[8] अभी से है।

---

(१) रुतबा, (२) पाँव के निशान, (३) शराबी, (४) जंगल, (५) मतलब की बात, (६) चौकीदार, (७) ख़िलाफ़ (८) डाकिया।

अभी अदा नहीं ग़मजा नहीं शबाब नहीं,
मगर किसी पे हमारी नज़र अभी से है।
अभी गए भी नहीं आप मेरे पहलू से,
बड़ा ग़ज़ब है कि दर्दे जिगर अभी से है।
वो आगे आगे ख़ुदा जाने क्या करेंगे सितम,
जनाबे 'नूह' ये हालत अगर अभी से है।

× × ×

महफ़िले यार मे क्या इसके सिवा होता है,
कोई मरता है कोई दिल से फ़िदा होता है।
एक रविश[1] पर उसे शोख़ी[2] नही रहने देती,
कभी मिलता है कभी हम से जुदा होता है।
कोई ग़म रह न गया कोई सितम उठ न रहा,
अबवो क्या करते है अबदेखिए क्या होता है।
माजराए शबे ग़म से वो ख़बरदार हो गया,
ये न लिखने से न कहने से अदा होता है।
जान की ख़ैर जो चाहो तो न चाहो इनको,
इश्क ऐ 'नूह' हसीनों का बुरा होता है।

× × ×

अदा कमर से हजर से हया निकलती है,
बुतों की शान से शाने ख़ुदा निकलती है।
यहाँ तो जाने दिले मुबतिला निकलती है,
वो जानते हैं कि आहे रसा निकलती है।
कभी जो सैर को बन ठन के वो निकलते हैं,
तो देख कर उन्हे दिल से दुआ निकलती है।

---

(१) तरीक़ा, (२) चंचलता।

जो ये निकालते है वो तो क्या निकालते हैं,
जो यों निकलती है हसरत तो क्या निकलती है।
वो कह्र है वो ग़जब है वो तीर है वह सिनाँ[1],
कभी जो 'नूह' के दिल से दुआ निकली है।

× × ×

बन्दों पर अगर सितम करोगे,
अल्लाह को क्या जवाब दोगे।
तुम हश्र के रोज क्या करोगे,
मुझसे न मिलोगे या मिलोगे।
कहती है वह चश्मे शौक उनसे,
तुम मुझसे कहाँ कहाँ छुपोगे।
पहले से न हमको यह खबर थी,
दिल लेके हमारी जान लोगे।
इतना ही दबाएँगे वो तुमको,
जितना ऐ 'नूह' तुम दबोगे।

× × ×

लुत्फ़ तो जब है किसी शोख़ के घर तक पहुँचे,
वो नज़र क्या जो फ़क़त हद्दे नज़र तक पहुंचे।
हम तो मरकर भी न माशूक़ के घर तक पहुँचे,
उनकी तक़दीर है जो उसकी नज़र तक पहुचे।
मर गए कूचए[2] जानाँ मे चलो ख़ूब हुआ,
हम टहलते हुए अल्लाह के घर तक पहुँचे।
वक्त आइने का क़िस्मत[3] है हमारे दिल की,
कभी पहुंचे तो वहो उनकी नज़र तक पहुँचे।

---

(१) भाला, (२) प्रियतम की गली, (३) क़िस्मत।

उस सितमगर को बड़ा नाज़ था जिन तीरों पर,
न वो दिल तक मेरे आए न जिगर तक पहुँचे।

वस्ल हो या न हो इस से हमे कुछ बहस नहीं,
यही क्या कम है कि हम आपके घर तक पहुंचे।

हमने पुर्जे किए किस ख़त के ये बड़ा काम किया,
क्या अजब उड़के कोई उनकी नज़र तक पहुँचे।

दिल धड़कता है हमारा तो ये जी डरता है,
कहीं इसका न असर उनके जिगर तक पहुंचे।

क्या कहूँ हाय वहां दिल ने फँसाया मुझको,
मै न पहुँचूं न जहां मेरी ख़बर तक पहुंचे।

देख मुझको न निगाहे ग़लत[1] अन्दाज़ से देख,
वो लगा तीर जो पहलू मे जिगर तक पहुंचे।

वो किसी का मेरे घर आके ये कहना मुझसे,
कहीं इसकी न ख़बर गैर के घर तक पहुँचे।

हम को पहले भी न इतनी थी रसाई[2] की उम्मीद,
अब पहुंच जायेंगे दिल तक जो नज़र तक पहुंचे।

सख्त मुश्किल था पहुँचना कोई आसान न था,
खाक में मिलके हम उस राहे गुज़र तक पहुँचे।

सुबह जिस घर से निकाले गए ये हज़रते 'नूह',
शाम को फिर वो दुबारा उसी घर तक पहुँचे।

× × ×

(१) उचटती नज़र, (२) पहुँच।

हिज्र[1] की तारीक रातों मे यह सामाँ हो गया,
दाग़हाए दिल चमक उट्ठे चिरागाँ हो गया।
फ़स्ले गुल आती न आती क्या था इसका एतबार,
पहले ही से तार तार अपना गरेबाँ हो गया।
बर्क़ ने गिर कर बनाया अपना ममनूने[2] करम,
जल उठे तिनके नशेमन[3] मे चिरागां हो गया।
क़द्रदानी बरतरफ़ लुतफ़ोकरम बालाय ताक़,
मैंने जिसको दिल दिया वह दुश्मने जां हो गया।
मिट गईं सब हसरतें जाते रहे सब वलवले,
ख़ानए दिल इस कदर उजड़ा कि वीरां हो गया।
क्या बतायें 'नूह' अपने वाक़िआते बहरे गम,
नाज़ जिस पर था वह बेड़ा गर्क़ तूफ़ां हो गया।

× × ×

क़ासिद आने जाने में थक थक कर घबरायेगा,
जायेगा फिर आयेगा आयेगा फिर जायेगा।
ढूँढने वाली नज़रों से देखेंगे पहलू की तरफ़,
उनकी इस दिलजूई[4] पर मेरा दिल इतरायेगा।
दिलमें उमीदें लाखों थीं कुछ निकलीं कुछ बाकी हैं,
ख़ैर कभी फिर आओगे फिर कभी देखा जायेगा।
दैरोहरम[5] के मालिक से हम कुछ मांगें भी तो सही,
है वह बड़ा देने वाला देगा या दिलवायेगा।
नासेह[6] आने वाला है दो ही बातें होनी हैं,
या उसे हम समझायेंगे या वह हमें समझायेगा।

---

(१) जुदाई (२) एहसानमन्द (३) घोंसला (४) दिलासा (५) काबा और बुतख़ाना (६) नसीहत करने वाला।

शिकवये ग़म की महशर मे हमको तो उम्मीद नहीं,
सामने वह आजायेंगे होश किसे रह जायेगा।
'नूह' के रोने पर हँसना बेदर्दों का खूब नही,
वह मुहब्बत मे इससे और भी तूफां आयेगा।

× × ×

सोज़ेग़म जोशे जुनूॅ से पहले रोशन हो गया,
चाक दामन होते होते खाक दामन हो गया।
ग़म नही जलकर जो खाक अपना नशेमन हो गया,
बर्क गिरने से अँधेरा घर तो रोशन हो गया।
क्या कहूॅ औरोंको दिल भी मुझसे बदज़न होगया,
लीजिये पहलू मे पैदा एक दुश्मन हो गया।
दिल के दो हिस्से जो कर डाले थे हुस्नो इश्क ने,
एक सहारा बन गया और एक गुलशन हो गया।
भरते भरते हसरतें दिल मे हज़ारों भर गईं,
दाना दाना जमा हो जाने से खिर्मन[1] हो गया।
थी निगाहे हुस्न मे कितनी मेरे दिल की बिसात,
एक आॅसू था जो गिरकर जज्बे दामन हो गया।
वर्तये[2] दरयाये ग़म से कोई बच सकता नही,
'नूह' का तूफान दुनिया भर का दुश्मन हो गया।

× × ×

ज़माने को क़ज़ा ने मार डाला,
हमे तेरी अदा ने मार डाला।
दुआये भी मेरी बेकार ठहरीं,
तुम्हारी बद्दुआ ने मार डाला।

---

(१) खलिहान (२) भवर।

कहेंगे हश्र मे कातिल के मुँह पर,
हमें इसकी अदा ने मार डाला।
जफाये उम्र भर उलफत मे झेलीं,
हमे पासेवफा ने मार डाला।
तेरी सीधी नजर से बच गया मैं,
मगर बांकी अदा ने मार डाला।
मरज था कुछ मुझे दर्मा हुआ कुछ,
तबीबों की दवा ने मार डाला।
खड़े हैं वह झुकी जाती हैं आंखे,
इसी तर्जे हया[1] ने मार डाला।
जनाबे 'नूह' से शिकवा है मुझको,
कि तूफ़ाने वला ने मार डाला।

× × ×

कोई नहीं पछताने वाला,
मर जाये मर जाने वाला।
महफ़िल मे आयेगा क्योंकर,
ख़िलवत[2] में शरमाने वाला।
शुक्र ख़ुदा का हम करते हैं,
काम आया काम आने वाला।
अपना दिल बहलाऊँ किससे,
है कौन आने जाने वाला।
वह न मिलें मुझको मिल जाये,
कोई जी बहलाने वाला।
दिल वह शै है जिसका साकी[3],
खोने वाला पाने वाला।

---

(१) शर्माने का ढङ्ग (२) तनहाई (३) शिकायत करने वाला।

फूलों का मुर्झाना देखे,
कलियों पर इतराने वाला।
जान मेरी है जाने वाली,
दिल है उन पर आने वाला।
'नूह' मुहब्बत की दुनिया मे,
है तूफ़ान उठाने वाला।

× × ×

क्या रस्मे मुहब्बत का बढ़ाना नहीं अच्छा,
अच्छी कही आना कही जाना नही अच्छा।
अन्दाजे सितम याद दिलाना नहीं अच्छा,
शिकवों से मेरा बाज न आना नही अच्छा।
ए शमअ पतिङ्गों की तरफ खास करम हो,
जलते है यह खुद इनका जलाना नहीं अच्छा।
दम तोड़ रहा हूं कोई दम और भी ठहरो
ऐसे मे मेरे पास से जाना नहीं अच्छा।
यह दिल मे समा जाते हैं आंखों मे समा कर,
अच्छों से निगाहों का मिलाना नहीं अच्छा।
देखो जिसे वह उनकी तरफ देख रहा है,
इतना भी निगाहों मे समाना नहीं अच्छा।
बेदर्द को हमदर्द बनाना तो है बेहतर,
हमदर्द को बेदर्द बनाना नहीं अच्छा।
आगोश[1] मे रहकर भी नजर उनकी है दिल पर,
नजदीक से यह तीर चलाना नहीं अच्छा।
तूफान मुहब्बत मे उठाते हो उठाओ,
ऐ 'नूह' मगर हश्र उठाना नहीं अच्छा।

× × ×

(१) गोद।

इश्क़ मे मुझको बिगड़ कर अब सँवरना आ गया,
हो गया नाकाम लेकिन काम करना आ गया।
यह अगर सच है कि मुझको इश्क करना आ गया,
तो समझ लो रोज जीना रोज़ मरना आ गया।
दावए इश्को वफ़ा पर मुझको मरना आ गया,
कह गुजरने की जगह अब कर गुजरना आ गया।
ज़िन्दगी से और तो कुछ फ़ायदा पहुँचा नहीं,
बस यही जीने का हासिल[1] था कि मरना आगया।
अश्क[2] आंखों मे पहुच कर दिल मे वापस आगये,
यों समझ मे चढ़ते दरया का उतरना आ गया।
बहरे जौकों शौक[3] मे यह भी गनीमत जानिये,
'नूह' को तूफ़ान उठाकर गर्क करना आ गया।

× × ×

वफ़ाओ मेह्र[4] के बाद आपका मगरूर हो जाना,
यह ऐसा है कि जैसे पास होकर दूर हो जाना।
न भूला है न भूलेगा मुझे मसरूर[5] हो जाना,
किसी का पास आना और गम का दूर हो जाना।
तेरा मजबूर कर देना मेरा मजबूर हो जाना,
फिर इसका रफ्ता रफ्ता[6] मुस्तकिल दस्तूर हो जाना।
असर उलटा दिखाया चारए आजार उलफ़त[7] ने,
मेरे जख्मे जिगर का ज़ख्म से नासूर हो जाना।
दिखाये पाँच आलम इक पयामे शौक ने मुझको,
उलझना रूठना लड़ना बिगड़ना दूर हो जाना।
नहीं यह गर्दिशे किस्मत मुसाफ़िरकी तोफिर क्याहै,
भटककर मंज़िले मक़सद से कोसों दूर हो जाना।

(१) नतीजा, फल (२) आंसू (३) मुहब्बत का समुद्र (४) मेहरबानी (५) खुश, (६) धीरे-धीरे ७, मुहब्बत की बीमारी का इलाज।

जहाने हुस्न मे शुहरत तुम्हारी ले उड़ी तुमको,
परी तो बन गये अब रह गये हूर हो जाना।
जनाबे 'नूह' वह गम मे तूफानी अलामत है,
यह साहिल[1] से मेरे बेडेका बहकर दूर हो जाना।

× × ×

ग़म इस कदर मिले किसी काबिल नही रहा,
दिल तो रहा मगर वह मेरा दिल नही रहा।
हरदम की आह आह से जहमत मे जान थी,
अच्छा हुआ कि दर्द भरा दिल नहीं रहा।
इनकारे कत्ल उसने किया इस अदा के साथ,
कातिल मेरी निगाह मे कातिल नहीं रहा।
असरारे इश्क आ गये दिल से जबान पर,
मै उसको मुँह दिखाने के काबिल नहीं रहा।
अहदे वफा जबां से हज़ार आप कीजिये,
दिल की तो बात यह है कि वह दिल नहीं रहा।
कोसों वफूरे शौक[2] मे आगे निकल गये,
हमको ख़याले जादवो मंज़िल नहीं रहा।
यह झूठ है वह मुझको फरामोश कर गये,
यह सच है मै ही क़ाबिले महफिल नहीं रहा।
ऐ 'नूह' क्या ग़जब था वह तूफाने वह शौक,
मुड़कर जो की निगाह तो साहिल नहीं रहा।

× × ×

मेरे घर को दुल्हन बनाये जा,
सातवे आठवे दिन आये जा।
काम के वक्त काम आये जा,
मेरी बिगड़ी हुई बनाये जा।

---

(१) किनारा (२) शौक़ की जियादती।

मुझको दिल यह सलाह देता है,
वह न आयें मगर बुलाये जा।
कुछ तवज्जुह हो कुछ तगाफुल[1] हो,
कुछ हँसाये जा कुछ रुलाये जा।
कौन कैसा है कौन कितना है,
अहले उलफ़त[2] को आजमाये जा।
अपना जलवा न तू दिखा मुझको,
अपनी आवाज ही सुनाये जा।
इनक़लाबे ख़याल जिन्दाबाद,
इक न इक रंग रोज़ लाये जा।
इश्क़ में लुत्फ़ क्या बग़ैर इसके,
'नूह' तूफ़ान अश्क उठाये जा।

× × ×

आप कहते हैं कियामत में तमाशा होगा,
वक्त वह होगा कोई भी न किसी का होगा।
पास बैठा है मगर मुझको परेशानी है,
वह जुदा होगा तो मालूम नहीं क्या होगा।
आप तो अपनी जफ़ाओं से न रक्खें महरूम,
ख़ैर जो कुछ मेरी तक़दीर में होगा होगा।
हश्र का नाम सुना जिसकी जबाँ से तुमने,
क्यों न पूछा यह उसीसे कि वहाँ क्या होगा।
सैकड़ों ज़ालिमों मज़लूम नज़र आयेंगे,
हश्र का हश्र तमाशा का तमाशा होगा।
दिलको तुम शौक़से ले जाओ मगर याद रहे,
यह न मेरा न तुम्हारा न किसी का होगा।

(१) आँख छिपाना (२) मुहब्बत करने वाला।

हम न कुछ मुँह से कहेंगे वह समझ जायेंगे,
इस तरह तजअ[1] मे इजहारे तमन्ना होगा।
देदे मैख़ाने का मैख़ाना बलानोशों को,
घूँट दो घूँट से ऐ पीरे मुगां क्या होगा।
सैकड़ों डूब गये वह भी गये मर भी गये,
आपने 'नूह' का तूफ़ान तो देखा होगा।

× × ×

जमाना मुसीबत का टल जायेगा,
ढली रात तो दिन भी ढल जायेगा।
जवानी के सांचे मे ढल जायेगा,
लड़कपन का नकशा बदल जायेगा।
यही सिर्फ होगा मेरी लाश पर,
जो आयेगा वह हाथ मल जायेगा।
मेरे दिल को झूठे दिलासे न दो,
कोई दिन मे ख़ुद ही बहल जायेगा।
वह खंजर के बदले उठायें निगाह,
मेरा काम इस से भी चल जायेगा।
हमारी मुसीबत को देखेगा कौन,
जो सुन लेगा वह भी दहल जायेगा।
भड़कती रहेगी अगर दिल की आग,
तो कमबख्त पहलू भी जल जायेगा।
उठायेगे ऐ 'नूह' तूफाने अश्क,
बुख़ार अपने दिलका निकल जायेगा।

× × ×

(१) आख़िरी वक्त, जान निकलने के वक़्त।

तमाम उम्र मे हमने यह एक काम किया,
कि ज़िन्दगी को तेरे इश्क मे सलाम किया।
जवान दी मुझे और अपने घर केयाम किया,
वह काम तुमने किया काम भी तमाम किया।
वहीं वहीं रहे उलफ़त[1] मे आफ़तें आईं,
जहां जहां दिले नाशाद ने केयाम किया।
यह वहमी[2] है जो मेरे सलाम करने पर,
तेरे सलाम को भी आज से सलाम किया।
किसी के मुँह से शिकायत निकल गई होगी,
खता थी खास की और उसने कत्लआम किया।
उठे तो हाथ किसी के मगर खुली न यह वात,
मेरा सलाम लिया या मुझे सलाम किया।
.खुदा की शाने करीमी को देखना था मुझे,
क़ुसूर मैंने किया और लाकलाम[3] किया।
तलाशेयार मे इतना भी हमको याद नहीं,
कहां कहाँ गये किस किस जगह केयाम किया।
मुका कर आख चुरा कर नज़र फिरा कर मुँह,
अजब अदा से किसी ने मुझे सलाम किया।
जनाव 'नूह' को तूफ़ान पर न फख्र हो क्यों,
इसी ने तो उन्हे मशहूर खासो आम किया।

× × ×

मुहब्बत मे रोज़ एक अज़ार[4] देखा,
दिखाया जो दिल ने वह नाचार देखा।
मेरी सिम्त कब तुमने सरकार देखा,
न देखा, न देखा, न ज़िनहार[5] देखा।

---

(१) मुहब्बत का रास्ता (२) .गुस्सा (३) वेशक (४) दुःख (५) हर्गिज़।

अकेले वह किस किस का दर्मा[5] करेंगे,
मुहब्बत मे लाखों को बीमार देखा।
ख़ुदा से नहीं माँगते और कुछ भी,
तुम्हारा ही सबको तलबगार देखा।
तुम आये थे क्या देखने पूछने को,
न पूछा न हाले दिले ज़ार देखा।
तमे दूरो नजदीक से क्या ग़रज थी,
यही है बहुत उनका दीदार देखा।
कई बार कोशिश भी की देखने की,
मगर उस को हमने न इक बार देखा।
जहाँ तक नजर मैंने डाली जहाँ पर,
मुसीबत मे सबको गिरफ्तार देखा।
ख़ुदा वह न दुश्मन को मेरे दिखाये,
जो मैंने मआले[6] दिले ज़ार देखा।
कहो 'नूह' से इन रक़ीबों को देखें,
कहीं हो गया हो न बेकार देखा।

× × ×

बेसमझे हुये दम न हमारा भी भरें आप,
अन्दाजा करें, ग़ौर करें, जाँच करें आप।
यह मै नहीं कहता न मुझे क़त्ल करें आप,
पहले मेरे सर पर कोई इल्जाम धरें आप।
बेहतर है यही हाल रहे खानए दिल का,
आबाद करूँ मैं उसे बर्बाद करें आप।
मज़लूम की फ़र्याद उलट देगी ज़माना,
दुनिया से डरे या न डरें इस से डरें आप।

(५) दवा (६) नतीजा, अन्जाम।

क्या ख़ूब यह इनसाफ़े मुहब्बत नजर आया,
बदनाम तो हो चर्ख़[1] मगर जुल्म करें आप।
अर्बाबे मुहब्बत[2] की खबर वह नहीं लेते,
यह अपने मुकद्दर से जिये आप मरे आप।
शायद है यही शोख़िये रफ्तार का मतलब,
बर्पा हो वहीं दुश्मन हश्र जहाँ पाँव धरे आप।
मैं उनसे यह कहता हूँ बस अब जी नहीं सकता,
वह मुझसे यह कहते हैं कहीं जल्द मरे आप।
यह 'नूह' से फरमाते हैं अश्कों की कसम है,
तूफ़ान उठाने का इरादा न करें आप।

× × ×

वह करेंगे मेरा कुसूर मुआफ़,
हो चुका कर चुके जरूर मुआफ़।
हुस्न को बेक़ुसूर कहते हैं,
है क़ुसूर आपका क़ुसूर मुआफ़।
मैंने यह जान कर खतायें कीं,
हर खता होगी बिज़्ज़रूर[3] मुआफ़।
खामुशी उनकी मुझसे कहती है,
अब हुआ अब हुआ क़ुसूर मुआफ़।
फिर न तुम बख़शना कभी मुझको,
पहली तक़सीर[4] हो जरूर मुआफ़।
हाथ भी जोड़े पाँव पर भी गिरा,
अब तो कह दो किया क़ुसूर मुआफ़।
है यही काम उसकी रहमत का,
होंगे मेरे गुनाह जरूर मुआफ़।

---

(१) आसमान (२) आशिक़ (३) अवश्य (४) क़ुसूर।

और आदत मेरी खराब हुई,
काश करते न वह कुसूर मुआफ।
खुद यह इकरारे जुर्म करते है,
कीजिये 'नूह' को ज़रूर मुआफ।

× × ×

हम इश्क मे उन मक्कारों के बेफायदा जलते भुनते है,
मतलब जो हमारा सुन सुन कर कहते हैं हम ऊँचा सुनते हैं।
हम कुछ न किसी से कहते है हम कुछ न किसी से सुनते है,
बैठे हुए बज्मे दिलकश मे बस दिल के टुकडे चुनते हैं।
उलफत के फिसाने पर दोनों सर अपना अपना धुनते हैं,
हम सुनते है वह कहते है, वह कहते है हम सुनते हैं।
दिलसा भी कोई हमदर्द नही, हमसा भी कोई दिलसोज़[1] नहीं,
हम जलते हैं तो दिल जलता है, दिल भुनता है तो हम भुनते हैं।
तकदीर की गर्दिश से न रहा महफूज़ हमारा दामन भी,
गुनते थे कभी हमे लालवोगुल अब कंकर पत्थर चुनते हैं।
आज आयेगे कल आयेगे कल आयेंगे आज आयेंगे,
मुद्दत से यही वह कहते हैं, मुद्दत से यही हम सुनते है।
मुर्गाने चमन भी मेरी तरफ दीवाने हैं लेकिन फर्क यह है,
मै दश्त[2] मे तिनके चुनता हूं वह बाग में तिनके चुनते हैं।
घबराके जो मैं उनके दर पर देता हूं कभी आवाज़ उन्हे,
तो कहते हैं वह ठहरो दम लो, आते हैं अब अफशाँ चुनते हैं।
ए 'नूह' कहाँ वह जोश अपना वह तौर अपने वह बात अपनी
तूफान उठाते थे पहले अब हसरत से सर धुनते है।

× × ×

---

(१) दिल जला (४) जंगल।

दम निकलता है बात करने मे,
अब नहीं देर मेरे मरने मे।
कोई मुश्ताकेदीद[1] मरता है,
कोई मसरूफ है सँवरने मे।
कसरतेग़म फर्क कुछ भी नहीं,
मेरे जीने मे मेरे मरने मे।
बात भी मुझ से तुम नहीं करते,
क्या बुराई है बात करने मे।
और कोई मेरा रफीक[2] नहीं,
दिल ही शामिल है जीने मरने मे।
वादए शाम का नतीजा क्या,
सुबह कर देंगे वह सँवरने मे।
कितने पुरकैफ[3] थे शबाब[4] के दिन,
लुत्फ आता था हमको मरने मे।
शौक हमको कलाम करने का,
शर्म उनको सलाम करने मे।
हज़रते 'नूह' जानते ही नहीं,
क्या है तकलीफ डूब मरने मे।

× × ×

अब वह सरमस्तिए बहार[5] नहीं,
नशा कैसा मुझे खुमार[6] नहीं।
दुश्मनी हो कि दोस्ती उनकी,
मुझको दोनों का एतबार नहीं।
क्या मेरे दिल को बर्क से निस्बत,
है मगर इतनी बेकरार नहीं।

---

(१) आशिक (२) साथी (३) बहारदार (४) जवानी (५) बहार का जोश (६) नशा।

शोखियों ने बना दिया बिजली,
अब उन्हे इक जगह करार नही।
जिन्दगी पर जमानां मरता है,
जिन्दगी का कुछ एतबार नही।
क्या खबर साँस कब उखड़ जाये,
इस हवा पर कुछ एतबार नही।
लोग कहते है नाखुदाये सुखन[1],
'नूह' दुनिया मे बे बकार नही।

× × ×

दिल हमारी तरफ से साफ करो,
जो हुआ वह हुआ मुआफ करो।
जब सितम होगा फिर करम के बाद,
तो करम से मुझे मुआफ करो।
मुझसे कहती है उनकी शाने करम,
तुम गुनाहों का एतराफ[2] करो।
क्यों बुझाओ पहेलियाँ बेकार,
गुफ्तगू मुझसे साफ साफ करो।
एक दो तीन चार पाँच नहीं,
सब ख़तायें मेरी मुआफ करो।
हज़रते दिल यही है दैरो हरम,
महफिले यार का तवाफ[3] करो।
तुम सज़ा दो मगर बहस्बे कुसूर[4],
मैं यह कहता नही मुआफ करो।
सख़्त जानों का कत्ल खेल नहीं,

---

(१) शाइरी का मल्लाह (२) मान लेना (३) चक्कर लगाना (४) क़ुसूर के मुताबिक़ (अनुसार)।

दिल मे हैं खारे आरजू लाखों,
आओ काँटों से घर को साफ़ करो।
तूने सीना की सिम्त जाये कलीम,
'नूह' तुम सैर कोहेकाफ़[1] करो।

× × ×

ज़ीस्त मे कब्र यह बात होती है,
क़द्र बाद अज़ ममात होती है।
आप मुझ पर करम जो करते हैं,
मुख्तसर कितनी रात होती है।
जान देता हूँ मै हसीनों पर,
कोई तो इनमें बात होती है।
तेरी महफ़िल मे तेरे कूचे मे,
और दिन और रात होती है।
जिन्दगी पर गुरूर करना क्या,
ज़िन्दगी बे सबात होती है।
काम आती है जो मुसीबत में,
वह खुदा ही की जात होती है।
इश्क में कुछ भी रह नहीं जाता,
नजर सबका इनात होती है।
क्या करे और कोई क्या न करे,
चार दिन की हयात होती है।
'नूह' कहते हैं हस्बे हाल अश्आर,
हर गज़ल वाक़िआत होती है।

× × ×

---

(१०) एक पहाड़ जहाँ मशहूर है कि वह परियों की जगह है।
(२) पूँजी।

रह गये वह लुत्फो ऐश अब याद आने के लिये,
जिस जमाने के लिये थे उस ज़माने के लिये।
कम से कम यह चाहिये मेरे फ़िसाने के लिये,
तुम हो सुनने के लिये मैं हूँ सुनाने के लिये।
लाश उठा कर दोश पर रख ली तो क्या एहसाँ किया,
आप आये ख़ाक में मुझको मिलाने के लिये।
फ़ुर्कते[1] साकी[2] में क्या आयेगा लुत्फे मैकशी[3],
अब्र वो उट्ठा मगर बिजली गिराने के लिये।
खुश्क फूलों पर ख़िजाँ में कतरए शबनम[4] नहीं,
बाग़ रोता है गये गुज़रे ज़माने के लिये।
.ज़ुल्म सहना ग़म उठाना इश्क में आसाँ नहीं,
चाहिये दिल भी किसी से दिल लगाने के लिये।
अल्ला अल्ला[5] यह मेरे ज़ौके तमाशा का असर,
मैं तमाशा बन गया सारे ज़माने के लिये।
'नूह' को इज़हारेग़म से उसने रोका इस तरह,
वक्त है दरकार तूफ़ानी फ़िसाने के लिये।

× × ×

बड़ी सीधी निगाहें शर्मगीं मालूम होती हैं,
यह .ज़ालिम हैं मगर .ज़ालिम नहीं मालूम होती हैं।
शबे फ़ुर्कत से घबराहट नहीं मालूम होती है,
यह बरसों की हमारी हमनशीं[6] मालूम होती है।
मेरे दर्दे मुहब्बत का उन्हें क्योंकर यकीं आये,
जिगर की चोट बाहर से नहीं मालूम होती है।
गिला क्या आसमाँ का आसमाँ तो आसमाँ ठहरा,
.ज़मीं भी दुश्मने अहले .ज़मीं मालूम होती है।

---

(१) जुदाई (२) शराब पिलाने वाला (३) शराब पीना (४) ओस के कतरे (५) क्या कहना, वाहवाह (६) पास बैठने वाली।

उधर यह फिक्र हम पहुंचे खुदा के राज़े कुदरत तक,
इधर अपनी हकीकत भी नहीं मालूम होती है।
उसी तेरी नजर ने क़त्ल कर डाला जमाने को,
जिसे कहते हैं सब ऐसी नहीं मालूम होती है।
बिसाते दह्र पर ऐ जिन्दगी क्या पॉव फैलाऊँ,
मेरी क़िस्मत मे बस दोगज़ जमी मालूम होती है।
जताने को मुहब्बत वह बहुत मुझसे जताते है,
मगर मालूम करने पर नहीं मालूम होती है।
कलेजे से लगा कर क्यों न मैं रक्खूँ मुहब्बत को,
यह दौलत हासिले दुनिया व दीं मालूम होती है।
अभी उट्ठा नहीं तूफ़ान दरयाये मुहब्बत मे,
मगर ऐ 'नूह' किश्ती तहनशीं[1] मालूम होती है।

× × ×

अभी कमसिन हैं मालूमात कितनी,
वह कितने और उनकी बात कितनी।
यह मेरे वास्ते है बात कितनी,
वह कहते हैं तेरी औक़ात[2] कितनी।
सहर तक हाल क्या होगा हमारा,
खुदा जाने अभी है रात कितनी।
तवज्जुह से कभी सुन लो मेरी बात,
जो तुम चाहो तो यह है बात कितनी।
गुलिस्ता फस्ले गुल[3] मे लुट रहा है,
हिना[4] आई तुम्हारे हाथ कितनी।
हमारे दिल न देने पर ख़फ़ा हो,
लुटाते हो तुम्हीं खैरात कितनी।

---

(१) नीचे बैठने वाली (२) हैसियत (३) बहार का मौसम (४) मेंहदी।

करो शुक्र सितम उनके सितम पर,
कि इतनी बात भी है बात कितनी।
जफा वाले हिसाब इसका लगाले,
वफा करता हूँ मैं दिन रात कितनी।
नहीं रुकते हमारे अश्क ऐ 'नूह',
यह तूफांखेज़[1] है बरसात कितनी।

× × ×

इश्क ने कदर न जानी मेरी,
हाय मै हाय जवानी मेरी।
अब कहाँ अगली जवानी मेरी,
हो गई खत्म कहानी मेरी।
मैं हुआ उनकी मुहव्वत मे शहीद[2]
अब करे मर्सियाख़ानी[3] मेरी।
अपना किस्सा तुम्हे मालूम नहीं,
तुम सुनो इसको ज़बानी मेरी।
मुख़्तसर यह है कि मरता हू मैं,
यह है छोटी सी कहानी मेरी।
इस तगाफुल[4] का तेरे क्या कहना,
जान कर बात न जानी मेरी।
ख़ौफ है सबको तेरी महफिल मे,
कौन दुहराये कहानी मेरी।
कह दिया 'नूह' से तूफान उठाओ,
आप ने बात न मानी मेरी।

× × ×

---

(१) तूफ़ान लाने वाला (२) मर जाना (३) मर्सिया पढ़ना (४) जानकर अनजान बनना।

इस तरफ़ उस तरफ़ नज़र डाली,
हमने यों उम्र ख़त्म कर डाली।
जान अपनी हलाक कर डाली,
जिसने उस शोख़ पर नज़र डाली।
फ़स्लेगुल में है दीद के काबिल,
हर चमन हर निहाल हर डाली।
देख कर लुत्फ़ कूये जानां का,
ख़ाक हमने बहिश्त पर डाली।
हो गया ख़ातमा मेरे दिल का,
आपने सरसरी नज़र डाली।
मर के हमने दिखा दिया तुमको,
जो कही थी वह बात कर डाली।
पत्ती पत्ती में उसको देख लिया,
डाली डाली पर यों नज़र डाली।
पढ रहे थे वह आज इक तहरीर,
छीन कर मैंने चाक कर डाली।
दिल तो क्या चीज है मुहब्बत में,
जान भी हमने सब्र कर डाली।
सामना जब हुआ कियामत में,
नूह ने 'नूह' पर नज़र डाली।

× × ×

बुलबुल का उड़ाया दिल नाहक़ यह ख़ामख़ियाली फूलों की,
लेते हैं तलाशी बादे सबा अब डाली डाली फूलों की।
यह हुस्नोलताफ़त यह ख़ुश्बू यह रंगे फ़िज़ा यह जोशेनुमू[1],
आलम है अनोखा कलियों का दुनिया है निराली फूलों की।

---

(१) पौदों का उगना बढ़ना।

माना कि लुटाये रातो को गुलजार मे मोती शबनम ने,
जब सुबह हुई सूरज निकला तो जेब थी खाली फूलों की।
फिर रुत बदली फिर अब्र उठा फिर सर्द हवाये चलने लगी,
हो जायं परी बन जाये दुल्हन अब डाली डाली फूलों की।
हारों मे गुँथे जकड़े भी गये गुलशन भी छुटा सीना भी छिदा,
पहुँचे मगर उनकी गर्दन तक यह खुश इकबाली फूलों की।
माशूकों के दहने बाये उश्शाक[1] का मजमा रहता है,
देखी न अनादिल[2] से हमने महफिल कभी खाली फूलों की।
जो लुत्फ कभी हासिल था हमे वह लुत्फ चमन के साथ गया,
अब कुंजेकफस[3] मे खिंचते है तस्वीरे खियाली फूलों की।
हर मिसरए तर से है पैदा गुलहाये मजामी का जलवा,
ऐ 'नूह' कहूँ मै इसको गजल या समझूँ डाली फूलों की।

× ×

यह सुनता हूँ निगाहे यार ऐसी और वैसी है,
मगर मुझसे नही मिलती नही मालूम कैसी है।
निभे रस्मे मुहब्बत किस तरह रूदाद ऐसी है,
तुम्हारा दिल नही वैसा तबीयत मेरी जैसी है।
बिगड़ बैठे मेरी जानिब से गम्माज़ों[4] के कहने पर,
कभी पूछा तो होता आपने यह बात कैसी है।
दवाओं पर दवाएँ सैकड़ों बदली गईं लेकिन,
तबीयत दर्दमंदे इश्क[5] की जैसी थी वैसी है।
जमाना क्यों न मर जाये, खुदाई क्यों न मिट जाये,
जो देखे वह तसद्दुक[6] हो तेरी सूरत ही ऐसी है।
तुम्हेक्या तुमतो राहतसे बसर करतेहो उम्रअपनी,
हमी इसको समझते है हमे तकलीफ जैसी है।

(१) आशिक़ों (२) बुलबुल (३) पिंजरे का कोना (४) चुग़लख़ोर (५) इश्क़ का मरीज़ (६) निछावर, .क़ुर्बान।

जहाँ बैठे वहीं तूफां उठा दुनियाये हसरत मे,
तुम्हारी अश्क बारी[1] ऐ जनाबे 'नूह' कैसी है।

× × ×

तमन्ना थी कि मेरे दिल मे वह तीरे नज़र बैठे,
मगर इस घर से नफरत है तो जाये अपने घर बैठे।
रहा अपने भी घर मे हमको पास[2] उनकी इजाजत का,
उठे तो पूछ कर उठे जो बैठे तो पूछ कर बैठे।
जो आये भी यहाँ तक तो उन्हे मुझसे हिजाब[3] आया,
जो बैठे भी मेरे आगे तो वह मुँह फेर कर बैठे।
न कूचे से उठाते हैं न अपने घर बुलाते हैं,
ज़माना हो गया हमको इसी उम्मीद पर बैठे।
बहुत अच्छा हमारा वक्त गुज़ारा उनकी महफिल मे,
यहां आये वहां पहुँचे इधर उठे उधर बैठे।
जनाबे 'नूह' के तूफाने गिर्या[4] का असर देखा,
गिरे थे चश्मेतर से जितने आंसू उतने घर बैठे।

× × ×

गलत क्यों कर कोई समझे गलत मुश्किल से होती है,
वही तो बात होती है जो सच्चे दिल से होती है।
कहां इस दिल से होती है कहां उस दिल से होती है,
मुहब्बत दो दिलों मे यक बयक मुश्किल से होती है।
इधर इक़रार करना और उधर फौरन मुकर जाना,
मुझे ख़िफ्फ़त[5] तुम्हारे वादए बातिल[6] से होती है।
परायों का तो क्या चर्चा पराये फिर पराये हैं,
मुहब्बत मे अदावत खास अपने दिल से होती है।
पहुँच जाती हैं आसानी से आहें अर्शेआज़म तक,
रसाई उनकी बज़्मे नाज़ में मुश्किल से होती है।

---

(१) आँसू बरसाना (२) ख़याल (३) शर्म (४) रोने का तूफ़ान (५) शर्मिन्दगी (६) झूठा वायदा।

जहाँ ख़ुर्शीद डूबा शम्मा पहुंची दिल जलाने को,
यह दिन भर के लिये रुख़सत तेरी महफिल से होती है।
क़ियामत का उठा तूफ़ान दरयाये मुहब्बत मे,
रवाना 'नूह' की किश्ती भी अब साहिल[1] से होती है।

× × ×

जहाने आरज़ू वदला हुआ मालूम होता है,
ख़ुदी को जब मिटा दो तो ख़ुदा मालूम होता है।
वह दुनिया की नज़र मे बेवफा मालूम होता है,
मगर मुझको नहीं मालूम क्या मालूम होता है।
अतिब्बा[2] वेसबब दर्मां से कब परहेज़ करते हैं,
हमारा इश्क दर्दे लाद्दवा[3] मालूम होता है।
ख़ुदाने दिल वह बख़शा मुझको अपनी मेहरबानीसे,
बुरा कहना बुरा सुनना बुरा मालूम होता है।
ग़ुरूरोकिब्र ने मिल कर यह फैलाया असर अपना,
कि हर बन्दा ख़ुदाई मे ख़ुदा मालूम होता है।
बशर[4] का ज़ोर कुछ अहकामे क़ुदरतपर नहीं चलता,
इसी मालूम होने से ख़ुदा मालूम होता है।
जलाया बाग़बां ने था नशेमन पर गिरी बिजली,
चमन मे कुछ धुवाँ उठता हुआ मालूम होता है।
भला वह और आते बे बुलाये मेरे घर तक आते,
असर तेरा यह ऐ आहे रसा मालूम होता है।
बज़ाहिर 'नूह' बेचारे की हैसियत नहीं कुछ भी,
ज़ियादा से ज़ियादा ना ख़ुदा मालूम होता है।

× × ×

(१) दरिया का किनारा (२) हकीम, डाक्टर (३) वह बीमारी जिसकी कोई दवा न हो (४) आदमी।

किसी को ज़ुल्मो आजारो सितम का शौक़ जब होगा,
हमारा एक दिल लाखों दिलों मे मुंतख़ब[1] होगा।
हमारा और उनका सामना महशर[2] मे जब होगा,
वह जलसा वह समाँ वह मारका भी कुछ अजब होगा।

यह क्या तुम मुझसे कहते थे कि मेरा वस्ल[3] अब होगा,
अगर अब भी नहीं होता तो फिर अब और कब होगा।
क़ियामत आयेगी मिलकर जुदा मुझ से वह जब होगा,
अलम होगा सितम होगा क़लक होगा ग़ज़ब होगा।

कोई जिन्दा रहे दुनिया मे क्या अगली उमीदों पर,
अभी गम हिज्र[4] का है वस्ल उनका होगा जब होगा।
लड़कपन जा चुका उनका जवानी आने वाली है,
कभी मुझ पर जफ़ा होती थी लेकिन क़हर अब होगा।

तुम्हे जल्दी है क्या इसकी तुम्हें उजलत है क्यों इसमे,
जो होगा भी तो होते होते दिल ईजा तलब होगा।
वह अपने वादये दीदार से फिरने को फिर जाये,
मगर यह तो समझ लें बेवफ़ा किस का लक़ब होगा।
मुझे इज़हारे उलफ़त पर यह उनके दाद मिलती है,
तुम्हारा इश्क इक दिन मेरी ज़िल्लत का सबब होगा।

कभी उलफ़त में हमको गम से फ़ुर्सत मिल नहीं सकती,
यही हर वक्त हर दम हर घड़ी हर रोजोशब होगा।
जनाबे 'नूह' की मश्के सुखन तहसी[5] के क़ाबिल है,
सफ़ीना[6] पहले शाया हो चुका, तूफ़ान अब होगा।

× × ×

(१) चुना हुआ (२) क़ियामत (३) मुलाक़ात (४) जुदाई
(५) किश्ती (६) तारीफ़।

क्या उन पर असर मेरी फ़ुग़ाँ[1] का हनी होता,
होता है तो यों होता है गोया नही होता।
वादा भी वह करते है तो पूरा नहीं होता,
वैसा कभी होता है तो ऐसा नही होता।

क्यों है तुम्हे बीमारे मुहब्बत पे तअज्जुब,
अच्छा नही करते इसे अच्छा नही होता।
वह क्यों नहीं मिलते नहीं मिलते नही मिलते,
यह क्यों नही होता नही होता नही होता।

यह बात नई इश्क मे हमको नजर आई,
सब होते है जिसके वह किसी का नही होता।
उलफत नहीं होती जिसे हसरत नही होती,
वह दिल नही होता वह कलेजा नहीं होता।

तू ही यह बता दे हमे तू ही यह बता दे,
क्या होता है उलफत मे तेरी क्या नहीं होता।
दम भर को सँभल जाता है माशूक से मिलकर,
बीमारे मुहब्वत कभी अच्छा नहीं होता।

क्यों कर वह मेरे दिल को वफादार समझ ले,
कमबख्त यह जिसका है उसी का नहीं होता।
ए 'नूह' मिलीं ख़ाक मे यों अपनी उमंगे,
अर्मान नया अब कोई पैदा नहीं होता।

× × ×

सैर करने को भी घर से न वह कमसिन[2] निकला,
दिन गया रात हुई, रात गई दिन निकला।

---

(१) चीख़ना चिल्लाना (२) छोटी उम्र वाला।

हमने जाँचा तुझे तो बर्गे हिना की सूरत,
एक तेरा न कभी ज़ाहिरो वातिन[१] निकला।
वस्ल पर कोई रज़ामंद हुआ दिल लेकर,
ग़ैर मुमकिन जिसे समझे थे वह मुमकिन निकला।
अहले बुतख़ाना[२] की सुहबत जो उसे याद आई,
कान पकड़े हुये मस्जिद से मुअज्ज़िन[३] निकला।
दर्द ने उठके शबे हिज्र[४] सँभाला दिल को,
कसमपुर्सी[५] में यही मूनिसो मुहसिन[६] निकला।
हर जगह हम को मिले दिल के चुराने वाले,
कोई दुनिया में न इस माल का ज़ामिन[७] निकला।
ख़ावे ग़फ़लत से ख़ुदा के लिये चौंको ए 'नूह',
रात जाती रही अब सुबह हुई दिन निकला।

× × ×

वे ख़ाक उड़ाये हुये टाले न टले आप,
बर्बाद किया उसको भी जिस दिल में मिले आप।
क्या अब कोई मासूक न हो बज़्मे जहाँ में,
देखी जो कभी शम्मा तो उससे भी जले आप।
होते रहे आपस में यही रोज़ तमाशे,
यह चाल चले हम कभी वह चाल चले आप।
क्या आह करूँ मैं कोई फ़र्याद करूँ मैं,
आगाह हूँ इस से कि हैं नाज़ों के दले आप।
होती है सहर अब कोई लहज़े में नमूदार[८],
क्या आये अगर आये यहाँ रात ढले आप।

---

(१) खुला और छिपा (२) मन्दिर वाले (३) अज़ान देने वाला (४) जुदाई की रात (५) बेकसी (६) हमदर्दी और एहसान करने वाला (७) हिफ़ाज़त करने वाला (८) ज़ाहिर।

कब शम्मा के शोले ने पतिंगों को जलाया,
यह शौक़ मुलाक़ात में उड़ उड़ के जले आप।
दोनों का ज़माने में नहीं कोई भी हमसर[1],
दुनिया से बुरा मैं हूँ ख़ुदाई से भले आप।
फिर शोख़िये रफ़्तार से पामाल हुआ दिल,
फिर रुख़ में इठला के चले आप।
यह क्या उन्हें मालूम था क्या उनको ख़बर थी,
काटेंगे गला 'नूह' से मिलमिल के गले आप।

× × ×

इश्क़ में है ग़मोमलाल बहुत,
जान जोखों है यह ख़ियाल बहुत।
एक नुक़्ते में लाख नुक्ते[2] हैं,
मुख़्तसर ख़त है और हाल बहुत।
पूछ लेते हैं वह मुझे अकसर,
और इतना भी है ख़ियाल बहुत।
मुझसे उलफ़त वह क्या निवाहेंगे,
यह बहुत है बहुत मुहाल[3] बहुत।
हर घड़ी के सितम से क्या मतलब,
आपको है मेरा ख़ियाल बहुत।
मैं तेरी आरज़ू में मरता हूँ,
क्या कहूँ और तुमसे हाल बहुत।
और तो कुछ तुमको नहीं आता,
दिल ही लेने में है कमाल बहुत।

(१) बारबार, (२) बारीकियाँ, (३) मुश्किल।

छान डाली गली गली मैं ने,
देख डाले परीजमाल बहुत।
कुछ तुझे 'नूह' का ख़ियाल नहीं,
'नूह' को है तेरा ख़ियाल बहुत।

× × ×

दिल ने यों इश्क़ की छिपाई चोट,
कि नज़र को नज़र न आई चोट।
उनकी आँखों से तो लड़ीं आँखें,
बीच में पड़ के दिल ने खाई चोट।
क्या ख़बर आपको मेरे दिलकी,
आप क्या जानिये पराई चोट।
उसकी महफ़िल में उसकी चौखट पर,
बैठते उठते हमने खाई चोट।
लाल दिल से जिगर नहीं वाक़िफ़,
एक ने एक से छिपाई चोट।
गिर के तेरे क़दम पे कुछ न मिला,
हाँ जो आई तो हाथ आई चोट।
दिल मेरा आ गया किसी बुत पर,
मैंने पत्थर की सख़्त खाई चोट।
लेके दिल हाथ में वह कहते हैं,
नहीं देती कहीं दिखाई चोट।
आह करने से वह उभर आई,
थी जो दिल में दबी दबाई चोट।

देखिये इस ग़ज़ल के पर्दे में,
'नूह' नौ तेरे तरह दिखाई चोट।

× × ×

मैं रहा करता हूं किस किस ध्यान में,
शौक़ में उम्मीद में अर्मान में।
दो घड़ी को आप आये भी तो क्या,
यह कोई एहसान है एहसान में।
मेहरबानी के सिवा कुछ भी नहीं,
तेरे वादे में तेरे पैमान[1] में।
मुँह पे मुँह यह कहके मैंने रख दिया,
अर्ज़ करना है मुझे कुछ कान में।
दिल मेरा सर्फ़े तमन्ना हो गया,
मर मिटा अर्मान ही अर्मान में।
कुछ मुरव्वत कुछ मुहब्बत चाहिये,
यह नहीं तो कुछ नहीं इनसान में।
उस बुते काफ़िर की चितवन देखकर,
पड़ गया रख़ना मेरे ईमान में।
किस तकल्लुफ़ से किया मुझको हलाल,
संखिया दी उसने रख कर पान में।
दिल लगाने से न बाज़ आयेंगे हम,
जान जब तक है हमारी जान में।
तौबह तौबह मैं तुम्हें ज़ालिम कहूँ,
ऐसी गुस्ताख़ी तुम्हारी शान में।

(१) अहद्।

सिर्फ़ तर्के[1] इश्क़ तो मुमकिन नहीं,
और सब कुछ है मेरे इमकान[2] में।

दिल में शायद कोई हसरत हो तो हो,
दम नहीं बाकी हमारी जान में।

ग़म कभी दिल से निकलता ही नहीं,
यह बड़ा है ऐब इस मेहमान में।

वह अगर चाहे तो चाहें मुझे,
क्या नहीं अल्लाह के इमकान में।

'नूह' अश्के चश्मेतर[3] का हो बुरा,
बह गई किश्ती मेरी तूफ़ान में।

× × ×

जब्र सहता हूँ सब्र करता हूं,
इसके मानी यह है कि मरता हूँ।

आप सुनियें मेरा फ़िसानयेग़म[4],
लीजिये मैं बयान करता हूं।

वाक़िआते फ़िराक़ोवस्ल[5] यह है,
मर के जीता हूं जी के मरता हूं।

कोई कहता है कोई सुनता है,
हाय मरता हूं हाय मरता हूँ।

आप अल्लाह से नहीं डरते,
और मैं आप से भी डरता हूँ।

---

(१) छोड़ना, (२) बस, (३) रोती आँख का आँसू, (४) दुःख की कहानी और मुलाक़ात।

तर्के उलफ़त से क्या हुआ हासिल,
जब भी मरता था अब भी मरता हूँ।

तुम न आगाह थे जफ़ाओं[1] से,
उस ज़माने को याद करता हूँ।

लोग मरते हैं ख़ूबरूपों[2] पर,
मैं तो इस मरने ही पे मरता हूँ।

क्या कहूं दिल पे क्या गुज़रती है,
उस तरफ़ से जो मैं गुज़रता हूं।

'नूह' तूफ़ान क्यों उठाते हैं,
मैं इसे ना पसन्द करता हूं।

× × ×

क़द्रे उलफ़त करे तो मैं जानूँ,
वह इनायत[3] करे तो मैं जानूँ।

मर मिटा हुस्नेयार पर नासेह[4],
अब नसीहत करे तो मैं जानूँ।

ऐसी बातें वह रोज़ करता है,
मुझसे उलफ़त करे तो मैं जानूँ।

आप ज़ालिम हैं आपसे कोई,
अर्ज़े हालत[5] करे तो मैं जानूँ।

वह मुहब्बत करे करे न करे,
जब मुहब्बत करे तो मैं जानूँ।

(१) ज़ुल्म, (२) ख़ूबसूरत लोग, (३) मेहरबानी, (४) नसीहत, करने वाला (५) ज़रूरत।

आप नफ़रत अदू[1] से करते हैं,
वह भी नफ़रत करे तो मैं जानूँ।
सब हैं मद्दाह[2] चश्मे क़ातिल[3] के,
कुछ मुरव्वत करे तो मैं जानूँ।
दिल है तैयार तर्के उल्फ़त पर,
तर्के उल्फ़त करे तो मैं जानूँ।
दिल मेरा और शिकवए बेदाद[4],
इतनी हिम्मत करे तो मैं जानूँ।
मुझसे हो जाय कुछ क़ुसूर उसका,
फिर शिकायत करे तो मैं जानूँ।
कुछ असर है मेरी शिकायत में,
वह शिकायत करे तो मैं जानूँ।
'नूह' मेरी तरह हसीनों से,
कोई उल्फ़त करे तो मैं जानूँ।

× × ×

मार डाला जला के बुलबुल को,
आग लग जाय आतशे गुल को।
मस्त आँखें जो देखने को मिलें,
मुँह लगाऊँ न साग़रे मुल[5] को।
मैं समझता हूं खूब ए जाहिद,
तुझको और इस तेरे तवक्कुल[6] को।

(१) दुश्मन, (२) तारीफ़ करने वाला, (३) माशूक़ की आँख, (४) ज़ुल्म की शिकायत, (५) शराब का प्याला, (६) सब्र, ख़ुदा पर भरोसा।

पहिले सुनिये रक़ीब[1] की बातें,
देखिये फिर तहम्मुल[2] को।

आशिक़े ज़ुल्फ़ रौंद डालेगा,
जान कर घास फूस सैम्बुल[3] को।

शोरे महसर दबा नहीं सकता,
मेरी फ़र्याद को मेरे ग़ुल को।

मर गये देख कर तेरे आशिक़,
उस तवज्जुह पर इस तग़ाफ़ुल[4] को।

हम न भूले हैं हम न भूलेंगे,
तेरे आरिज़[5] को तेरी काकुल को।

दिल समझ बूझ कर लगाना था,
क्या कहूँ इश्क़े बे तअम्मुल[6] को।

दोनों आलम की शैर है दिल में,
जुज्व में देखता हूं मैं कुल को।

इसको एजाज़े हुश्न कहते हैं,
उसने बुलबुल बना दिया गुल को।

मिल गये 'नूह' बादा ख़ारों में,
झुक पड़े सुनके शोरे क़ुलक़ुल को।

× × ×

फ़िल हक़ीक़त[7] उसकी उल्फ़त है बुरी,
उसकी उल्फ़त फ़िल हकीक़त है बुरी।

---

(१) दुश्मन, (२) बर्दाश्त करना, (३) एक फूल का नाम, (४) बेपरवाही, (५) गाल, (६) बे सोचे समझे, (७) वास्तव में।

तुम भी मुझको अब बुरा कहने लगे,
मैं बुरा हूँ मेरी किस्मत है बुरी।

हो अगर तो इश्क़ हो अल्लाह का,
कौन कहता है मुहब्बत है बुरी।

कोई अच्छा कोई अर्मां है बुरा,
कोई अच्छी कोई हसरत है बुरी।

वस्ल का वादा वह कर सकते नहीं,
हाय इतनी भी नज़ाकत है बुरी।

ग़ैर को दिल देके तुम पछताओगे,
जो बुरा है उसकी उल्फ़त है बुरी।

जब्र[1] पर भी सब्र करना चाहिये,
ख़ूबरूपों[2] की शिकायत है बुरी।

लेके दिल वापस अब देते नहीं,
यह अमानत में ख़ियानत[3] है बुरी।

'नूह' से भी राय लेनी चाहिये,
लोग कहते हैं मुहब्बत है बुरी।

× × ×

राय दुनिया में है यही सबकी,
सारी दुनिया है अपने मतलब की।

मुझको दिन भर रही पशेमानी[4],
सरगुज़श्त[5] उन से पूछ कर शब[6] की।

---

(१) ज़ुल्मो ज़्यादती, (२) हसीन माशूक़, (३) चोरी, बेईमानी, (४) शर्मिन्दगी, (५) हाल, क़िस्सा, (६) रात।

ले गई मुझको बज़्मे साक़ी में,
आरज़ू सागरे[1] लबालब की।
अहले उल्फ़त में इत्तिहाद[2] हो क्या,
है तमन्ना तो एक ही सब की।
मुझको इहसासे लुत्फ़ जब न रहा,
की निवाज़िश[3] भी उसने तो कब की।
दिलरुबा ग़ौर से सुने न सुने,
दिल कहे जाय अपने मतलब की।
दोस्ती को वह जानता ही नहीं,
दुश्मनी उसने मुझसे की जब की।
दिल मुरक़्क़ा[4] है बज़्मे आलम का,
शक्ल इस आइने में है सबकी।
ख़ुद वह तारीफ़ करते रहते हैं,
ज़ुल्फ़ की रुख़ की ख़ाल[5] की लब[6] की।
फ़िर तो कहिये वफ़ा करेंगे हम,
किससे की और आप ने कब की।
महवेदीद[7] एक आइना ही नहीं,
तेरे चेहरे पे नज़र है सब की।
ख़ैर दुनिया नहीं तो हश्र सही,
अब वह पूरी करें कमी कब की।
'नूह' कोई भी उनको ला न सका,
हम ने तदबीर देख ली सब की।

(१) प्याला, (२) इत्तिफ़ाक़, (३) मेहरबानी, (४) तस्वीरों का एलबम, (५) तिल, (६) होंठ, (७) देखने में लीन।

दिल चुरा ले जाने वाला कौन है,
आप हैं और आने वाला कौन है।
साँस मुझमें आती जाती है फ़क़त,
और आने जाने वाला कौन है।
कोई नासेह[1] को यह समझाता ही नहीं,
वह मेरा समझाने वाला कौन है।
देख कर वह मुझको यह कहने लगा,
तू मेरे घर आने वाला कौन है।
जज़्बे दिल[2] से हो सके शायद यह काम,
और उनको लाने वाला कौन है।
तू नहीं तेरा तसव्वुर[3] भी नहीं,
फिर मेरा तड़पाने वाला कौन है।
आइना भी आज तक देखा नहीं,
आप सा शर्माने वाला कौन है।
आप ही तड़पाते हैं एक एक को,
आपका तड़पाने वाला कौन है।
पूछते हैं 'नूह' वह बार बार,
देके दिल पछताने वाला कौन है।

× × ×

मेरी बात सुनकर बिगड़ जायेंगे,
वह इत्तो ही से बस उखड़ जायेंगे।

(१) नसीहत करने वाला (२) दिल की कशिश, (३) ख़याल।

हमें क्या ख़बर थी बिछड़ जायेंगे,
निगाहें लड़ाकर वह लड़ जायेंगे।
शबे वस्ल[1] शिकवये[2] का मौक़ा नहीं,
बने खेल सारे बिगड़ जायेंगे।
बँधेगी हवा जब मेरी आह की,
क़दम दुश्मनों के उखड़ जायेंगे।
निगाहों का फिरना ग़ज़ब ढायेगा,
कलेजे में यह तीर गड़ जायेंगे।
मिलेगा जो कोई तो मिल लेंगे हम,
लड़ेगा जो कोई तो लड़ जायेंगे।
मुरव्वत को वह जानते ही नहीं,
कोई बात होगी बिगड़ जायेंगे।
नतीजा यही होगा दो दिन के बाद,
मिलेंगे वह मिल कर बिछड़ जायेंगे।
अभी दिल के लेने में ज़िद है उन्हें,
कभी जान लेने पर अड़ जायेंगे।
यह दिल का लगाना नहीं दिल्लगी,
कभी 'नूह' ज़हमत में पड़ जायेंगे।

× × ×

बर्मला[3] साफ़ साफ़ कहती है,
बे कहे कब ज़बान रहती है।

---

(१) मुलाक़ात की रात, (२) शिकायत, (३) खुल्लमखुल्ला।

वह लड़कपन कुछ और कहती थी,
यह जवानी कुछ और कहती है।
सैकड़ों रंज एक मेरी जान,
कौन सहता है यह जो सहती है।
और कोई रहे रहे न रहे,
शर्म हमराह[1] उनके रहती है।
चुप भी मुझसे रहा नहीं जाता,
ख़ामुशी दिल का राज़ कहती है।

दिल मुहब्बत में जान उलफ़त में,
ज़ुल्म सहता है जौर[2] सहती है।
इक तरफ़ यास[3] इक तरफ़ उम्मीद,
किस कशाकश में जान रहती है।
कौन ग़म्माज़[4] है सबा[5] की तरह,
मुझसे सुनती है तुमसे कहती है।

दूर रहती है उनके रुख़ से निगाह,
हुस्न की आँच कब यह सहती है।
दिल को यह जान कर वह लेते हैं,
दिल में आशिक़ की जान रहती है।

उसको मैं तुमसे कह नहीं सकता,
सारी दुनिया तुम्हें जो कहती है।
दिल में उम्मीदोयास हैं दोनों,
कौन जाती है कौन रहती है।

---

(१) साथ, (२) ज़ियादती, ज़ुल्म, (३) नाउम्मीदी, (४) चुगुलख़ोर, (५) पूर्वी हवा।

क्या करूँ लेके मैं तेरी तस्वीर,
न यह सुनती है कुछ न कहती है।
'नूह' दोनों तरह है यह जायज़[1],
फ़िक्र रहता है फ़िक्र रहती है।

× × ×

जान कर महवे रुख़े क़ातिल मुझे,
और तड़पाता है मेरा दिल मुझे।
दिल में अर्मानों का मजमा देख कर,
याद आती है तेरी महफ़िल मुझे।
हिज्र[2] की शब और क्या है मशग़ला,
दिल को मैं रोता हूं मेरा दिल मुझे।

इज़्तिराबे शौक ने पहुंचा दिया,
एक मंजिल से कई मंजिल मुझे।
शिकवये लुत्फ़े इनायत[3] है फ़ुज़ूल,
फेर देंगे क्या वह मेरा दिल मुझे।

बैठ जाऊँगा जो हिम्मत हार कर,
खींच लेगी ख़ुद मेरी मंज़िल मुझे।
उस तरफ़ है दिल को मेरी जुस्तोजू[4],
इस तरफ़ है जुस्तोजूये दिल मुझे।
कूचए[5] क़ातिले[6] में लाया खींच कर,
इश्तियाक़े[7] कूचये क़ातिल मुझे।

(१) ठीक, दुरुस्त, (२) जुदाई, (३) मेहरबानी, (४) तलाश, (५) गली, (६) क़त्ल करने वाला (माशूक़) (७) शौक़।

क्या ख़बर थी पहले क्या मालूम था,
लेके दे देंगे वह दाग़े दिल मुझे।
बढ़ रहा है दम व दम अर्माने क़त्ल,
दम न दे ए ख़ंजरे[1] क़ातिल मुझे।

जान भी सर्फ़े तमन्ना हो गई,
कर गया बर्बाद मेरा दिल मुझे।
ख़ुल्द[2] को पहुँचे यहीं से बन्दगी,
हो मुबारक आप की महफ़िल मुझे।

जो न कहना था वह मुँह पर कह गया,
दिल्लगी ही दिल्लगी में दिल मुझे।
अव्वल अव्वल इश्क़ था आसान काम,
आख़िर आख़िर हो गया मुश्किल मुझे।

लेने वाला उसको लेकर चल दिया,
देने वाले ने दिया था दिल मुझे।
तेरी मर्ज़ी पे मिलना मुंहसर[3],
यह तुझे आसान है मुश्किल मुझे।

वह लिये जाते हैं दिल को अपने साथ,
देखता जाता है मेरा दिल मुझे।
वस्ल से ख़ुश हिज्र से नाख़ुश न हो,
वह कलेजा चाहिये वह दिल मुझे।

'नूह' मैं हूँ और मौजे बहे शौक़,
देखिये मिलता है कब साहिल मुझे।

(१) तलवार, (२) जन्नत (स्वर्ग) (३) दारोमदार।

एक ले देके फ़क़त तर्ज़े जफ़ा[1] आती है,
और क्या बात तुम्हें इसके सिवा आती है।
बात करने में हसीनों को हया आती है,
लौट जाती है अदा भी वह अदा आती है।
ग़ौर से जब कभी सुनता हूँ तो साँस के साथ,
मुझको आहे दिले मुज़तर[2] की सदा[3] आती है।
ख़ानए तन के लिये चाक जिगर है भी ज़रूर,
इस मकाँ में इसी खिड़की से हवा आती है।
पूछती है वह हमें या वह हमारे घर को,
जब ज़माने में नई कोई बला आती है।
और ग़मख़ारे[4] असीराने क़फ़स[5] कोई नहीं,
सिर्फ़ आती है तो गुलशन की हवा आती है।

हम जहाँ पहुँचे वहीं सब से यह हमने पूछा,
दर्दे उलफ़त की किसी को भी हवा आती है।
हम समझ लेते हैं यह घर है किसी साक़ी का,
दूर से बूए मए रूह फ़िज़ा आती।
अब है यह हाल मेरा अब है यह सूरत मेरी,
बद दुआ भी मुझे देने को दुआ आती है।
और की शर्त नहीं ग़ैर की तख़सीस[6] नहीं,
अपनी तसवीर से भी उनको हया आती है।
यही करते हो कि तूफ़ान उठा देते हो,
'नूह' क्या बात तुम्हें इसके सिवा आती है।

---

(१) ज़ुल्म करने का तरीक़ा (२) बेचैन दिल की आह (३) आवाज़ (४) तसल्ली देने वाला (५) पिंजरे के कैदी (६) खुसूसियत।

हुस्न नैरंग नज़र आता है,
ढंग से वे ढंग नज़र आता है।
कोई दिल तङ्ग नज़र आता है,
वर सरे जंग नज़र आता है।

पास है कूचए जाना[1] लेकिन,
कई फ़र्संग[2] नज़र आता है।
हम जिसे देखते हैं उल्फ़त में,
ज़ीस्त से तङ्ग नज़र आता है।

हो रहे हैं वह खफ़ा वस्ल की शब,
रंग में भंग नज़र आता है।

रूकशी और तेरे आरिज़ की,
आइना दंग नज़र आता है।

इश्क़ में नंग[3] जिसे कहते हैं,
वाइसे नंग नज़र आता है।
लड़ रही हैं मेरी उनकी आँखें,
मंज़रे जंग नज़र आता है।

वह किसी में नज़र आता ही नहीं,
तुम्हमें जो ढंग नज़र आता है।
वाह क्या बात तेरी महफ़िल की,
रंग ही रंग नज़र आता है।

मुख़्तसर क्यों न ग़ज़ल होए 'नूह',
क़ाफ़िया तङ्ग नज़र आता है।

---

(१) माशूक़ की गली, (२) मील, (३) शर्म।

दिल कहाँ हर किसी से मिलता है,
अच्छे ही आदमी से मिलता है।

जिस तरह मुझसे आप मिलते हैं,
यों भी कोई किसी से मिलता है।

तुम मिलो मुझसे मैं मिलूँ तुमसे,
आदमी आदमी से मिलता है।

क्यों इताअत[1] से बुत हमें न मिले,
जब ख़ुदा बन्दगी से मिलता है।

मिलने वाले से आप भी मिलिये,
दिल से मिलता है जी से मिलता है।

अभी शिकवा नहीं किया मैंने,
और इलज़ाम अभी से मिलता है।

न मिलो जिससे तुम वह क्या जाने,
कोई क्योंकर किसी से मिलता है।

दिल मिलता है ख़ाक में सबको,
कौन अपनी ख़ुशी से मिलता है।

वह कभी ग़ैर से नहीं मिलता,
मुझसे मिल कर मुझी से मिलता है।

दुशमने जानेज़ार है यह भी,
मुद्दआ[2] मुद्दई[3] से मिलता है।

आप ही 'नूह' से नहीं मिलते,
'नूह' तो हर किसी से मिलता है।

---

(१) बन्दगी, (२) मुराद, (३) दुश्मन।

ग़म हो कि लुत्फ़ जी के लिये कुछ तो चाहिये,
दुनिया में आदमी के लिए कुछ तो चाहिये।
दो दिन की ज़िन्दगी है इसे मानता हूँ मैं,
दो दिन की ज़िन्दगी के लिये कुछ तो चाहिये।

आता है दिल में दिल ही को दे दूँ निकाल कर,
ए नामाबर[1] किसी के लिये कुछ तो चाहिये।

ग़मज़ा[2] हो या अदा हो शरारत हो या हया,
इस हुस्ने सादगी के लिये कुछ तो चाहिये।
माना किसी का अह्द ग़लत है ग़लत सही,
आशिक़ के दिलदिही के लिये कुछ तो चाहिये।
फ़र्हाद से ज़रूर है तेशे[3] का माँगना,
सामाने ख़ुदकुशी के लिये कुछ तो चाहिये।
लुत्फ़ो करम भी कीजिये ज़ुल्मोसितम के साथ,
इस लाग इस लगी के लिये कुछ तो चाहिये।

साग़र[4] में हो शराब बग़ल में हो नाज़नीं,
हरदम की बेख़ुदी के लिये कुछ तो चाहिये।
बैठे हुये किसी का तसव्वुर[5] हुस्ने किया करों,
ए 'नूह' दिल लगी के लिये कुछ तो चाहिये।

× × ×

कभी यह आलमें[6] हुस्ने ख़ियाल होता है,
कि ग़ैर पर भी तेरा एहतिमाल[7] होता है।

---

(१) ख़त ले जाने वाला, (२) नाज़ोअदा, (३) बसूला, (४) प्याला, (५) ध्यान, (६) हालत, (७) शुबहा।

उसी की मौत पर उनको मलाल होता है,
उमीदे वस्ल में जिसका विसाल होता है।

फ़िराक़े[1] यार में जीना मुहाल होता है,
ज़रा से दिल को वहुत सा मलाल होता है।

हम उठते हैं तो नक़ाहत से बैठ जाते हैं,
जो बैठते हैं फिर उठना मुहाल होता है।

वह चाहते हैं कि इज़हारे ग़म भी यह न करे,
मेरे मलाल से उनको मलाल होता है।

अभी है दिल की तलब फिर कहोगे जानभी हो,
यह इस सवाल से पैदा सवाल होता है।

नज़र के सामने आकर जो वह ठहरते हैं,
मेरी नज़र का ठहरना मुहाल होता है।

हम उसको तर्के मुहब्बत प भी नहीं भूले,
ख़ेयाल आता है अकसर ख़ेयाल होता है।

तलाश कीजिये लेकिन पता नहीं चलता,
हुजूमे नाज़ में दिल का यह हाल होता है।

गिरी पड़ी जो कोई चीज़ देख लेते हैं,
तो अपने दिल का हमें एहतिमाल होता है।

गुलों का हुस्न फिर उस पर बहार का मौसम,
जो देखता है चमन वह निहाल होता है।

वह जोश रहता है तूफ़ाने बह इश्क़ में 'नूह'
कि हमको पार उतरना मुहाल होता है।

---

(१) जुदाई।

हमारी चार दिन की जिन्दगी में,
नहीं कुछ और सब कुछ है इसी में।
कभी मिलना कभी फिर मिल के लड़ना,
यह बातें हमने देखीं आप ही में।

बुरा हो इश्को उलफ़त का बुरा हो,
हमारा दिल गया इस दिल लगी में।

हम आँखें फोड़ डालें क्यों न अपनी,
उन्हें देखा रक़ीबों की गली में।
किसे मरने की हसरत है मुझे है,
यह किसके जी में है यह मेरे जी में।

ज़रा सा दिल हज़ारों दाग़े उलफ़त,
नज़र आता है गुलशन इस गली में।
शबे फ़ुर्क़त[1] का धड़का है शबे वस्ल,
मिला है रंज भी मेरी ख़ुशी में।

ज़मीनो आसमाँ का फ़ासला है,
कि वह हैं बाम पर हम हैं गली में।
न लाये राज़े उलफ़त को ज़बाँ पर,
समाई है कहाँ इतनी किसी में।

निकालो मेरे दिल से हसरतों को,
इसी में वह भी हैं तुम भी इसी में।
वह कहते हैं बताओ फ़र्क़ क्या है,
जनाबे दाग़ों 'नूहे' नारवी में।

---

(१) जुदाई की रात।

मुझ से मिलता है कोई मुझको खुशी होती है,
रोज़ होती नहीं सूरत यह कभी होती है।

आप की चश्म इनायत[1] जो कभी होती है,
दिल तो फिर दिल है खुशी को भी खुशी होती है।

वह जलाँय न जलाँय मुझे जलने से गरज,
सच तो यह है कि बुरी दिल की लगी होती है।

दिन चढ़े फिर उन्हें खिलते न दोबारा देखा,
रात भर के लिये फूलों की हँसी होती है।

क्या बुझायेंगे मेरे अश्क इसे छींटे देकर,
दिल जलाने के लिये दिल की लगी होती है।

अपने हाथों पिलाई तो पिलाते जाओ,
अब कहीं दूर मेरी तिश्ना लबी[2] होती है।

हार कर क़ौले वफा क्यूं न परेशान रहें,
हर तरह इश्क में जीत आप ही की होती है।

रब्ते उल्फत के सिवा और इसे क्या कहते हैं,
देख कर उन्हें हम को भी खुशी होती है।

जोशे उल्फत में वह तूफान उठा देते हैं,
हजरते 'नूह' से तक़सीर[3] यही होती है।

---

(१) महरबानी की नजर (२) प्यासे होंठ (३) गुनाह या पाप।

वह कहते हैं आओ मेरी अनजुमन[1] में,
मगर मैं वहाँ अब नहीं जाने वाला।

कि अकसर बुलाया बुलाकर बिठाया,
बिठा कर उठाया उठाकर निकाला।

निशातो अलम[2] के सफ़ेदो सियह ने,
हमारी निगाहों को हैरत में डाला।
इधर रोशनी है उधर तीरगी है,
कहीं है अँधेरा कहीं है उजाला।

पड़ी नींव आपस में गो दोस्ती की,
मगर दोस्ती किस तरह निभ सकेगी।
उसे है नज़ाकत मुझे है नक़ाहत[3],
न वह आने वाला न मैं जाने वाला।

शिवाले की जानिब क़दम क्यों बढ़ाऊँ,
नज़र किस लिये सूये मस्जिद उठाऊँ।
मेरे दिल को अल्लाह आबाद रक्खे,
मेरा दिल ही मस्जिद है दिल ही शिवाला।

---

(१) महफ़िल (२) खुशी और रंज (३) कमजोरी।

फ़िदा कर दिया मैंने दिल उस हसीं पर,
जो बेदर्द भी है दिल आज़ार भी है।

मुहब्बत की धुन में न सोचा न समझा,
न जाँचा न परखा न देखा न भाला।

हमीं पर हुईं क्या हज़ारों जफ़ायें,
हज़ारों पर आईं हजारों बलायें।

ज़माने में कोई सँभलने न पाया,
किसी शोख़ ने होश जब से सँभाला।

ग़ज़ब ढा गईं सीधी सादी अदायें,
सितम कर गईं तिरछी बाँकी अदायें।

यही शोर उठा जिधर से वह गुज़रे,
मुझे मार डाला मुझे मार डाला।

तुम्हारा सनाख़ाँ[1] तुम्हारा दुआगो,
तुम्हारा फ़िदाई तुम्हारा सलामी।

यह क्या कह दिया उसने वाक़िफ़ नहीं,
हम वही हाँ वही 'नूह' तूफ़ान वाला।

× × ×

(१) तारीफ़ करने वाला।

यह हम समझते हैं हम से पूछो,
कि दोनों चीज़ों में फ़र्क़ क्या है।
निगाह को बर्क़ कहते हो तुम,
निगाह के आगे बर्क़ क्या है।

असर न हो जिसका अहले दिल पर,
जिसे हसीं ध्यान में न लायें।
वह इश्क़ क्या है वह आह क्या है,
वह हुस्न क्या है वह बर्क़ क्या है।

निगाह हो या तेरी अदा हो,
शबाब हो या हो तेरा जलवा।
चमक चमक कर जो दिल को फूँके,
वही है बर्क़ और बर्क़ क्या है।

गुलामो आक़ा की दोस्ती ने,
उठा दिया पर्दये मरातिब।
अयाज़ो महमूद एक हैं जब तो,
इस में और उसमें फ़र्क़ क्या है।

जनावे 'नूह' आप ग़ौर कर लें,
कि तह की मैं बात कह रहा हूं।
अगर नहीं मेरी किश्तिये दिल तो,
बहरे उलफ़त में ग़र्क़ क्या है।

× × ×